शैल-सूत्र

ISSN 24558966

वर्ष 15 अंक : 3, जुलाई–सितम्बर 2022

अमृत महोत्सव अंक

कालाधन

मै अदना सा कलमकार हूँ घायल मन की आशा का
मुझको कोई ज्ञान नहीं है छंदों की परिभाषा का
जो यथार्थ में दीख रहा है मैं उसको लिख देता हूँ
कोई निर्धन चीख रहा है मैं उसको लिख देता हूँ
मैंने भूखों को रातों में तारे गिनते देखा है
भूखे बच्चों को कचरे में खाना चुनते देखा है
मेरा वंश निराला का है स्वाभिमान से जिन्दा हूँ
निर्धनता और काले धन पर मन ही मन शर्मिंदा हूँ
मैं शबनम चंदन के गीत नहीं गाता
अभिनंदन वंदन के गीत नहीं गाता
दरबारों के सत्य बताता फिरता हूँ
काले धन के तथ्य बताता फिरता हूँ
जहाँ हुकूमत का चाबुक कमजोर दिखाई देता है
काले धन का मौसम आदमखोर दिखाई देता है।
जिनके सर पर राजमुकुट है वो सरताज हमारे हैं,
जो जनता से निर्वाचित हैं नेता आज हमारे हैं,
इसीलिए अब दरबारों से केवल एक निवेदन है,
काले धन का लेखा-जोखा देने का आवेदन है,
क्योंकि भूख गरीबी का एक कारण काला धन भी है,
फुटपाथों पर पली जिंदगी का हारा सा मन भी है,
सिंहासन पर आने वालो अहंकार में मत झूलो,
काले धन के साम्राज्य से आँख मिलाना मत भूलो,
भूख प्यास का आलम देखो जाकर कालाहान्डी में,
माँ बेटी को बेच रही है दिन की एक दिहाड़ी में,
झोपड़ियों की भूख प्यास पर कलमकार तो चीखेगा,
मजदूरों के हक़ की खातिर मुट्ठी ताने दीखेगा,
पूरी संसद काले धन पर मौन साधकर बैठी है,
शुक्र करो के जनता अब तक हाथ बांधकर बैठी है,
झोपड़ियों को सौ-सौ आँसू रोज रुलाना बन्द करो,
सेंसेक्स पर नजरें रखकर देश चलाना बन्द करो,
जिस दिन भूख बगावत वाली सीमा पर आ जाती है
उस दिन भूखी जनता सिंहासन को भी खा जाती है।

लेखक :
डॉ. हरी ओम पवार

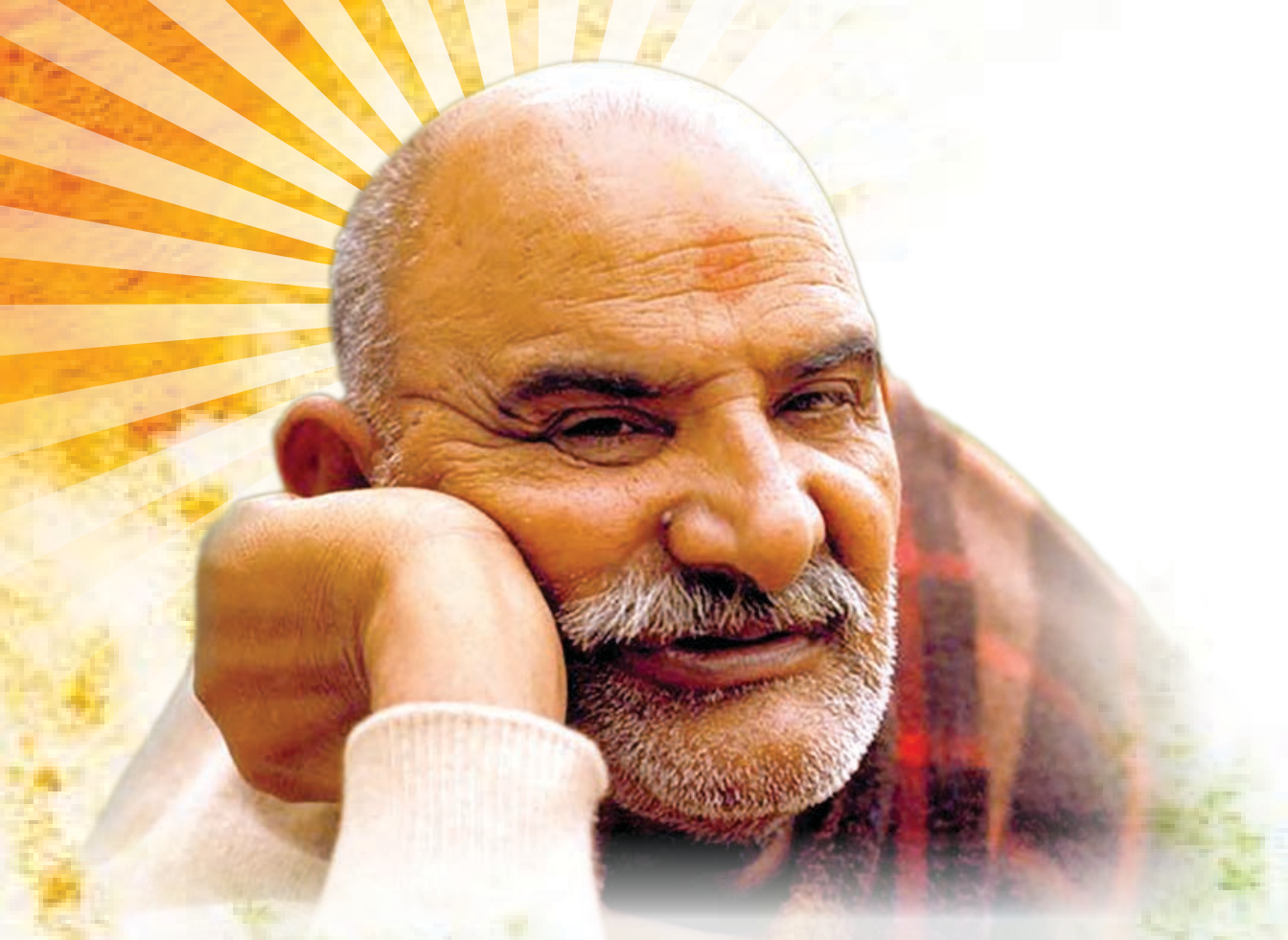

Green World Public School

Email: school.greenworld@gmail.com

Congratulations

विद्यालय में सत्र 2021-22 में
CBSE बोर्ड परीक्षा में
उत्कृष्ट प्रदर्शन पर एक नज़र।

HIGH SCHOOL TOPPER

Chandan Devnath — 97.2%
Hindi - 97, English - 97, Math - 99, Science - 100, S.Std. - 93

Anupam Sana — 96.4%
Hindi - 97, English - 99, Math - 96, Science - 95, S.Std. - 95

Anurag Mandal — 92%
Hindi - 95, English - 92, Math - 95

Vanshit Dalmia — 89.6%
Hindi - 93, English - 90, S.Std. - 94

Suraj Roy — 88.8%
Math - 97, Science - 93

Chandan Bhandari — 88.6%
Hindi - 93, S.Std. - 94

Manav Sarkar — 88.6%
Math - 93, S.Std. - 95

Arjun Roy — 88.4%
Hindi - 95, S.Std. - 87

Tuhin Rajbanshi — 88.2%
English - 91, S.Std. - 91

Vansh Bhakta — 87.8%
English - 97, S.Std. - 96

Sanjana Saxena — 87.8%
Hindi - 90, English - 91, S.Std. - 96

Harsh Gupta — 86%
Hindi - 93, S.Std. - 95

Intermediate Topper

Pratibha Sarkar — 90%
Physics - 92 Marks
Chemistry - 90 Marks
Physical Education - 98 marks

Akansha Agarwal — 89%
Physical Education - 97 marks
Biology - 95 Marks

Shiv Kumar — 86%
Physical Education - 92 marks
Biology - 97 Marks

SHAKTIFARM (U.S.NAGAR) 9412945360, 8433437600

राकेश कुमार कुशवाहा

(रीयल स्टेट व्यावसायी),
पता - 450/290, सुल्तानपुर भावा,
पत्रालय - करेली.
जनपद - प्रयागराज
(उत्तर प्रदेश), भारत।
पिनकोड - 211003
मोबाइल - +918318525500

हिमांशु कुमार तिवारी

(रीयल स्टेट व्यावसायी),
465, अत्तरसुइया, प्रयागराज
(उत्तर प्रदेश), भारत।
पिनकोड - 211003
मोबाइल नं. - +919335183600

रमेश चन्द्र

46/22,गाँधी नगर, लाल कोठी,
गली नं. 12, पिक इण्डिया फैक्ट्री के पीछे,
पटौदी रोड, गुरूग्राम, हरियाणा-122001
मोबाइल नं. 9711011034,
ई-मेल : sambherwal@yahoo.co.in

सम्पादन परामर्श
डॉ. प्रभा पंत-09411196868
सम्पादक
आशा शैली -9456717150, 7055336168,
सह सम्पादक/समन्वयक
चन्द्रभूषण तिवारी -9415593108/8707467102
सह सम्पादक/शोध प्रबंधक
डॉ. विजय पुरी-09816181836
पवन चौहान-09805402242
विधि-परामर्श
प्रदीप लोहनी-09012417688
प्रचार सचिव
डॉ. विपिन लता 9897732259

विशेष सहयोगी
पंकज बत्रा -9897142223,
सत्यपाल सिंह 'सजग' -09412329561,
राधेश्याम यादव -80066722221, लालकुआँ
निरुपमा अग्रवाल -9412463533
निर्मला सिंह -9412821608, (बरेली)
दर्शन 'बेज़ार'-आगरा -9760190692,
डॉ. राकेश चक्र -9456201857, (मुरादाबाद)
सूरत भारती, (हि.प्र.) -09418272934
कृष्णचन्द्र महादेविया, (मण्डी हि.प्र.) -09857083213 ,
डॉ. वेदप्रकाश प्रजापति 'अंकुर' (हल्द्वानी) -9412943042,

मूल्य-एक प्रति 25/-,
वार्षिक 100/-,
आजीवन 1000/-,
संरक्षक सदस्य 5100/-

परामर्श:-
डॉ. श्यामसिंह 'शशि' -09818202120,
डॉ. धनंजय सिंह -09810685549,
डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक', 07417619828

क्षेत्रीय सहयोगी

मुख्य संरक्षक :- डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र-09412992244,
संरक्षक **सदस्य:-** शिव बाबू मिश्र -09412750094, अर्श अमृतसरी -07011758133, डॉ. नवीन कुमार श्रीवास्तव -9212444369, प्रकाश चन्द्र लोशाली -9456114762, डॉ. शीना 9249932945, राजकुमार जैन 'राजन' 09828219919, केशव कुमार पटेल-9919352975,
डॉ. विमला व्यास-9452780735, डॉ. शीला त्रिपाठी-9453257279, बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव -9451023854, अरविंद कुमार यादव -9125628814, श्रीमती ममता पाण्डेय-9453770833, मौजी लाल पटेल-9936380977, ए.के. पवार-9810059715, डॉ. ए.जे. अब्राहम- 9447375381, **डॉ. श्रीमती उषा मिश्रा-9450610608, श्री चंदन प्रताप सिंह -7317559999, श्री सर्वेश सिंह शौनक-7007164024, श्री रूप चन्द शर्मा -9935353480,** राम मूरत चौहान-**9415885622,** डॉ. नीतिका नैन -9536379106,

1.शैल-सूत्र में प्रकाशित रचनाओं के प्रति सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
2.लेखक अपने विचार प्रेषण के लिए स्वतन्त्र है।
3. शैलसूत्र परिवार के सभी सदस्यों के पद अवैतनिक हैं।
4.प्रत्येक कानूनी विवाद का निपटारा पत्रिका के सम्पादकीय कार्यालय का विधि क्षेत्र होगा।

शुल्क, खाता सं 024110100000073, कोड सं. IFSC; AUCB 0000025 अल्मोड़ा अर्बन बैंक, शाखा लालकुआँ अथवा भारतीय स्टेट बैंक शाखा तरुवाला, पाँवटा साहब (हि.प्र.) कोड सं. IFSC; SBIN 0000703 खाता सं 30116574461 में जमा करायें।

सम्पादकीय कार्यालय एवं पत्र व्यवहार का पता-
-साहित्य सदन, इन्दिरानगर-2
पो.-लालकुआँ, जिला-नैनीताल (उत्तराखण्ड) पिन-262402
मो.-09456717150, 7078394060, 7055336168, 8958110859
Email-asha.shaili@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, तथा मुद्रक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल) ने एच.जे. इंटरप्राइजेज़, खानचन्द मार्केट, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित कराया। सम्पादक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल-262402)

विधा	लेखक	पृष्ठ
वैचारिकी		
सम्पादकीय		
धरोहर:-चन्द्रकुवंर बर्त्वाल की कविताओं में हिमालय वर्णन	-हेमंत चौकियाल	-6
प्रोफेसर मेहर गेरा		-9
आलेख:-आजादी का दीवाना- खुदीराम बोस	-कालिका प्रसाद सेमवाल	-10
अमृत महोत्सव पर संकल्प	-डॉ. राकेश चक्र	-11
टाइगर हिल पर विजय पताका	-पूर्णिमा ढिल्लन	-12
गुमनाम क्रान्तिकारियों की जानकारी	-देहली पुस्तक सदन	-15
कहानी:-गुलाबी फूल (एक शब्द छिद्र)	-दीप्ति सारस्वत 'प्रतिमा '	-16
फालतू कोना	-डॉ. हंसा दीप	-18
नींव	-डॉ. रंजना जायसवाल	-23
लघुकथाएँ:- अजूबा	-सुरेश बाबू मिश्रा	-25
आखिर कब तक-अमृता पाण्डे, कोल्हू का बैल	-बबिता कंसल	-26
काव्यधारा:-		
कविता-जब ऐसा हो	-अंजना छलोत्रे 'सवि'	-22
गीत:-उग आई नागफनी	-डॉ. धनंजय सिंह	-27
दीप लघु-सा जल रहा हूँ	-डॉ. ब्रजेश कुमार मिश्रा	-27
कविता- मैं समय हूँ	-व्यग्र पाण्डे	-28
आज़ादी	-सुव्रत दे	-28
समुद्र और रेत	-आकाश मिश्रा	-29
ग़ज़लें:-धर्मराज देसराज, कमल किशोर दुबे, ब्रजेश त्रिवेदी,		-30
हीरालाल यादव, नज़र द्विवेदी, सत्येंद्र मोहन शर्मा		-31
कविता विकास, आशा शैली, प्रमोद कुमार चौहान		-32
आलेख:-फिलीपींस में संस्कृत भाषा	-डॉ. सुनील पाठक	-33
शोध :- आशा शैली के दोहों का भावपक्षीय सौन्दर्य	-श्रीमती हीरा अन्ना	-35
कृष्णा सोबती : डार से बिछुड़ी	-मीतू बाला	-41
भारत दर्शन:-		
एक पेड़ के नीचे, एक ही समय	-अंकुर सिंह रघुवंशी	-44
समीक्षा:- माहौल और समाज के चेहरों को.....	-प्रो. नव संगीत सिंह	-47
दो संस्कृतियों का सुन्दर समन्वय	-संजय कुमार पी.एस.	-49
हिमाचली जन जीवन की कहानियाँ	-अनिल शर्मा नील	-51

प्रयागराज (इलाहाबाद) और हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग-5

-चन्द्र भूषण तिवारी

हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका, सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म प्रयागराज स्थित, निहालपुर में हुआ था। इनके पिता, ठाकुर रामनाथ सिंह ज़मींदार थे और शिक्षा को सर्वाधिक महत्व देते थे। सुभद्रा कुमारी चौहान का विवाह जबलपुर के ठाकुर परिवार में सन 1919 में हो गया था और सन 1921 में, वे महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन से जुड़ने वाली प्रथम महिला बन गई थीं।

इनकी कवितायें देश-प्रेम की भावना से परिपूर्ण होती हैं। सुभद्रा कुमारी का नाम इसलिए भी अमर है क्योंकि इनकी सर्व प्रसिद्ध कविता 'झाँसी की रानी' अत्याधिक लोकप्रिय है। आज भी इस कविता के पाठ मात्र से देश प्रेम की भावना मुखर हो जाती है। वह सुभद्रा कुमारी चौहान ही थीं जिन्होंने महादेवी वर्मा को प्रेरित किया था और नारीवाद की राह दिखायी थी। सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी, 'मिला तेज से तेज' नामक पुस्तक, उनकी पुत्री सुधा चौहान ने लिखी है, जिसे प्रयागराज के हंस प्रकाशन ने प्रकाशित किया था।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में द्विवेदी युग के बाद, छायावाद का युग आया। जिस प्रकार अंग्रेज़ी साहित्य के रोमांटिक युग में मानवीय भावों और प्रकृति प्रेम को एक उच्च स्थान मिला था वैसे ही छायावाद में प्रकृति प्रेम, नारी प्रेम, मानवीकरण, सांस्कृतिक जागरण और कल्पना की प्रधानता को विशेष स्थान मिला था।

छायावाद के चार प्रमुख स्तम्भों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के नाम हैं। इन चारों में से तीन कवि, निराला, पंत और महादेवी वर्मा ने अपनी साहित्यिक लोकप्रियता प्रयागराज में रह कर ही प्राप्त की थी।

हरिवंश राय श्रीवास्तव 'बच्चन' का जन्म सन् 1907 में प्रयागराज से सटे हुए प्रतापगढ़ जनपद के बाबू पट्टी नामक गाँव के एक साधारण कायस्थ परिवार में हुआ था। बच्चन इनका घरेलू नाम था और आगे चल के साहित्य-जगत में ये इसी नाम से मशहूर हुये। कायस्थ पाठशाला से उर्दू में शिक्षा लेने के बाद इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में एम.ए. किया और फिर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से डब्लू.बी. यीट्स की कविताओं पर शोध पूरा किया। हरिवंशराय बच्चन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी साहित्य के प्रोफ़ेसर थे और इन्होंने अपनी प्रमुख हिंदी कवितायें भी इसी काल में लिखीं। हरिवंश राय बच्चन को सर्वाधिक लोकप्रियता उनकी काव्य रचना 'मधुशाला' (1935) के लिए मिली जो कि हिंदी जगत में आज भी पढ़ी-सुनी जाती है और लोग आज भी उसे उतना ही पसंद करते हैं। इसी के बाद, बच्चन के कई और काव्य-संग्रह प्रकाशित हुये, जिनमें मधुबाला (1936), मधुकलश (1937), निशा निमंत्रण (1938) और सतरंगिनी (1945) के नाम उल्लेखनीय हैं।

-क्रमशः

आँचल

नैनीताल दुग्ध संघ लालकुआँ की ओर से

समस्त आँचल परिवार को ''आजादी का अमृत महोत्सव 75वें स्वतंत्रता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी'' की हार्दिक शुभकामनाएँ

''हर सुबह की शुरुआत आँचल दूध के साथ''

उत्तम स्वास्थ्य एवं स्वस्थ्य मस्तिष्क के लिए सदैव प्रयोग करें

(निर्भय नारायण सिंह)
सामान्य प्रबंधक/ सहायक निदेशक

(मुकेश सिंह बोरा)
अध्यक्ष

सदस्य प्रबंध कमेटी- श्री भगत सिंह कुमटिया, श्रीमती गीता दुम्का, श्रीमती हेमा देवी, श्रीमती दीपा देवी रैक्पाल, श्री किशन सिंह बिष्ट, श्री राजेंद्र प्रसाद, श्रीमहिमन सिंह चौहान, श्री कृष्ण कुमार शर्मा, श्री आनन्द सिंह नेगी, प्रतिनिधि-राज्य सरकार, डॉ. एच.एस. कुटौला।

आई.एस.ओ. 9001:2015/आई.एस.ओ. 22000:2005 प्रमाणित

यदि आपका कोई दुश्मन नहीं है तो इसका मतलब है कि उन जगहों पर आप खामोश थे जहाँ सत्य बोलना बहुत जरूरी था-

शैल-सूत्र
जुलाई-सितम्बर-2022

यात्रा लम्बी तो है पर आशान्वित भी हूँ

शैलसूत्र का मलयालम अंक बेहद सफल रहा। इसके साथ ही पत्रिका ने केरल में प्रवेश किया। यह सब मित्रों और सहृदयों का स्नेह एवं गुरुजनों का आशीर्वाद का फल है। पत्रिका को प्रारम्भ करते समय मैंने सोचा भी नहीं था कि मैं इसको इतने आगे की यात्रा तक ले जा पाऊँगी। परन्तु निस्वार्थ भाव से किया गया कोई भी काम फल तो निश्चय ही देता है। परिणाम आप सब के सामने है। वे बड़े नाम वाले लेखक, जो पारिश्रमिक न मिलने की स्थिति में पत्रिका को सामग्री देने में बहुत आनाकानी करते थे, अब सहर्ष सहयोग करते हैं। पत्रिका में जुड़े सभी वरिष्ठ सहयोगी मित्र अपने सद्परामर्श से इसे ऊँचाइयों तक ले जाने को सर्दव तत्पर रहते हैं। डॉ. प्रभा पंत और डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र का सहयोग एवं सद्परामर्श पत्रिका के दीर्घजीवी होने में बहुत उपयोगी रहा। डॉ. प्रभा पंत की पैनी दृष्टि हर समय पत्रिका में परोसी जाने वाली सामग्री के प्रति सतर्क रहती है, जिसका लाभ पत्रिका को उसकी बढ़ती लोकप्रियता के रूप में मिल रहा है। इसके साथ ही मेरे स्थानीय सहयोगी, पंकज बतरा और सत्यपाल सजग जी भी हर समय मेरे साथ खड़े मिलते हैं। और क्या चाहिए मुझे?

आप सब को बताते हुए हर्ष होता है कि पत्रिका के साथ धीरे-धीरे प्रवासी लेखक भी जुड़ते जा रहे हैं। प्रश्न यह नहीं है कि इसके सदस्य कितने हैं, महत्वपूर्ण यह है कि किन लोगों द्वारा पत्रिका पसन्द की जा रही है। ईश्वर की कृपा से आर्थिक संकट भी अपने आप दूर हो जाता है। पिछले अंक के लिए आर्थिक संकट से उबारा हमें रोहतक की बहन आशा लता खत्री ने और इस बार तो आश्चर्य वाली बात हो गई।

हुआ यूँ कि जब ओजस्वी गीतकार मान्य डा0 'हरिओम पंवार' जी को पता चला कि पत्रिका को आर्थिक संकट है तो उन्होंने तुरन्त ही सहयोग की घोषणा कर दी और जब तक पत्रिका प्रेस में जाने को तैयार हुई तो पत्रिका के खाते में 21 हज़ार रुपये आ चुके थे। सच में बड़ा बनने के लिए बड़ा दिल करना आवश्यक होता है। इस घटना का उल्लेख न करना कृतघ्नता होगी। मुझे आश्चर्य होता है कि जब भी मैं आर्थिक संकट में घिरती हूँ तभी कोई न कोई भामाशाह आकर हाथ थाम लेता है और पत्रिका एक पड़ाव और पार कर लेती है। ईश्वर शैलसूत्र की यात्रा को इसी तरह लक्ष्य की ओर ले चलें, जब तक मैं हूँ। मेरी अस्सी वर्ष की यात्रा के साथ ही शैलसूत्र भी अपनी पन्द्रह वर्ष की यात्रा पूरी करने जा रही है। मित्रो! इसी तरह साथ निभाते रहना जैसे अब तक निभाया है। अत्यन्त कृतज्ञता के साथ

आपकी अपनी ही
आशा शैली

चन्द्रकुवंर बर्त्वाल की कविताओं में हिमालय वर्णन

-हेमंत चौकियाल

हिमालय सदा से ही सबको अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। संस्कृत के महान कवियों में शुमार कालीदास ने तो हिमालय की महिमा- ''अस्त्युरस्याम ऋषि देवतात्मा हिमालयोनाम नगाधिराज:...'' सम्बोधित कर की तो उसी हिमालय को अपने काव्य में चन्द्रकुवंर बर्त्वाल ने यह कहकर सम्मान दिया कि-

''शोभित चन्द्र कला मस्तक पर
भस्म विभूषित नग्न कलेवर
कटि पर कृष्ण गजानिन सा घन
गिरती घोर घोष कर पद पर
बज्र छटा सी दीप्त सुरधनी
शांत नयन गम्भीर मुखाकृति
अथ इतिहीन, वीर्य यौवन घृति
दीप्त-प्रभा रवि उद्भासित मुख
मूर्तिमान आत्मा की जागृति
ज्योति लिखित ओंकार स्वरित ध्वनि
आदि पुरूष हे! हे पुराण मुनि।।''

20 अगस्त सन 1919 को उत्तराखंड के अगस्त्यमुनि तीर्थ के नजदीक मालकोटी गाँव में जन्मे बालक चन्द्रकुवंर बर्त्वाल का हिमालय से साक्षात्कार गाँव में अपनी बाल्य अवस्था में आंगन पर घुटनों के बल घिसटते वक्त मुँह में अगूंठा रखकर चूसते वक्त ही हो गया था, क्योंकि चन्द्रकुवंर के घर के ठीक पूर्व दिशा में चौखम्बा की छटा देखते ही बनती है। अब केवल उस दृश्य की कल्पना ही की जा सकती है कि एक छोटा बच्चा मुँह में अगूंठा डाले अपलक, सूर्योदय के वक्त रवि रश्मियों के गिरने से पल पल रंग बदलते चौखम्बा की छवि उसके बाल मन पर क्या क्या चित्र उकेरा करती रही होगी। पगडंण्डियों पर अपने बाल

सखाओं की टोली के साथ गायों को चरा कर, गोधूली बेला में जब बाल चन्द्रकुवंर अवसान की ओर जा रहे रवि की रश्मियों से पल-पल रंग बदलते चौखाम्बा की नयनाभिराम दृश्यावलियों ने तो तभी कविता के बीज उसके सुकोमल मन में बो दिये रहे होंगे।

लगी दिखने आज हिमालय की बर्फानी रजत चोटियाँ
बादल आज देखते ही रह गये
बर्फ से भरी घाटियाँ

कवि चन्द्रकुवंर बर्त्वाल ने पृथ्वी और आकाश के बीच फैले हिमालय और हिमालयी पर्यावरण को अपने साहित्य का कथोपकथन ही नहीं बनाया बल्कि शब्दों में उन चित्रित बिम्बों को खींचकर पाठकों के मन मस्तिष्क पर अमिट रूप से अंकित कर दिया। हिमालय को यह प्रतिमान सर्वकालीन कवियों में कोई न दे पाया जो चन्द्र कुँवर बर्त्वाल ने दिया।

हिम से भरी हिमालय की घाटियों पर पड़ती धूप की किरणों से बर्फ के पिघलने को जिस तरह से उन्होंने हिमालय के रोने का प्रतिमान देकर उस जल का बहकर जंगलों तक पँहुचने पर वृक्षों का प्रसन्न होने (उन्मद वाणी) को निरूपित किया है वह साहित्य में अन्यत्र बहुत कम दृष्टव्य होता है।

गीत माधवी के 31वें छन्द में कवि लिखते हैं-

गिरि से सुदूर मैंने देखा
थी चमक रही सरिकी रेखा
अस्पष्ट क्षितिज के अंतर पर
वह ऐसी थी लग रही सुघर
मेघों में जैसे शशि लेखा

इसी कविता के 64वें छंद में एक बार फिर कवि पूर्व

दिशा के हिमशिखर से उड़ते बादलों (क्योंकि हिमशिखर कवि के घर की पूर्व दिशा में है) का वर्णन करते हुए लिखता है कि -

पूर्व दिशा से उड़ने लगते,
जब कुंकुम के बादल
धरणी पर हे गिरने लगता,
जब अनुराग सुकोमल।

चन्द्रकुवंर की कविताओं में बादल, वर्षा और हिमालय का विशेष स्थान है। हिमालय चन्द्र कुँवर के लिए बहुआयामी सा लगता रहा है। जिसको वे जितनी बार भी देखते हैं, नित नये रूप में पाते हैं। वे उसके विविध रूपों को वर्णित करते हुए नहीं अघाते। हिमालय के बारे में वे लिखते हैं -

देखकर भी रात-दिन मैं स्वर्ग सुन्दर
हिमालय से प्राण अपने भर न पाया
नयन में वह चारू शोभा धर न पाया

हिमालय को देखकर ये प्रश्न क० लोगों के मन में उठे होंगे, पर उन प्रश्नों को सरल भाव और भाषा के माध्यम से कवित्वपूर्ण ढंग से चन्द्रकुवंर ही पूछ पाये। हिमालय कविता के उनके दो मुक्तक हिमालय के दो रूपों का वर्णन अलग-अलग ढंग से करते हैं-

सोह रहा है आज हिमालय शांत मेघ सा
जिसमें जमकर नील हुई हो उज्जवल वरसा
तट रेखाएं जिसको, दीप्त हँसी से उजली
करती हों पीछे छिप कौंध-कौंध कर बिजली

ये चन्द्रकुवंर की कविता का ही कमाल है कि जिस हिमालय पर अनेकों तपस्वी तप करते रहे हैं, उस हिमालय की शोभा उन्होंने इन शब्दों में वर्णित की -

ये आनंद लोक के गिरि हैं,
सदा जहाँ नयनों में
हँसता है हिम उज्जवल।
जहाँ ग्रीष्म में ही रहते हैं,
उग्र ज्वलनमय भास्कर
शशि से हो प्रिय शीतल।

चन्द्रकुवंर का हिमालय वर्णन कालीदास से प्रभावित है। कालीदास की ही तरह उन्होंने हिमालय और हिमालयी क्षेत्र सहित वहाँ के सामान्य जीवन के बहुत ही जीवंत चित्र कविताओं में प्रतिबिम्बित किये हैं।

इस एक सुन्दर छंद में कवि ने धूमिल मेघ और हिमालय से निकलने वाली हिमानी को जिस ढंग से चित्रित किया है वह उन्हें उपमा का कवि करार देता है -

अब छाया में गुंजन होगा
वन में फूल खिलेंगे
दिशा-दिशा में सौरभ के
.....
रोवेगी रवि के चुम्बन से
अब सानंद हिमानी
फूल उठेगी जब गिरि-गिरि के
उर की उन्मद वाणी।

हिमालय से निकलने वाली नदी पर जितना चन्द्रकुवंर रीझे हैं उतना कोई दूसरा कवि न रीझा। पर्वतीय प्रदेश से लेकर, गंगोत्री से इलाहाबाद तक उन्होने गंगा को देखा था जितना सुन्दर वर्णन चन्द्रकुवंर ने किया है उतना किसी दूसरे ने नहीं किया - उन्होंने लिखा कि-

गिरिवन से छूटी एक नदी
घाटी में गाती घूम रही
आँखों में रवि का बिंब नचा
अधरों में धर-धर चूम रही

हिमशिखर जो ऋषियों के श्वेत केश के समान हैं। नदियों के स्वर मानों उनके मन्त्रोचार हैं। पक्षी हैं तो वे भी मानव के सुख-दुख के साथी हैं। इन बिम्बों के वर्णन में सादगी और व्मानदारी के साथ ऐसी सच्चा० है जो अपनी धरती की, हिमवन्त की अलग पहचान बनाती है। हिमवंत के सारे उल्लास सारे दुख-दर्द का वर्णन कवि ने अपनी कविताओं में किया है। ऊँचे-ऊँचे हिमशिखर, कहीं नग्न पहाड़ियों, देवदार, चीड़, बांज बुरांश के जंगल, हिरणों की चंचलता, पपीहों की पीन पुकार, झींगुरों की झंकार, बादलों की गड़गड़ाहट, उनके बीच बिजली का कौंधना, पगडंडियों आदि सभी के दर्शन उनकी कविताओं में होते हैं।

हिमालयी क्षेत्र में पाये जाने वाले पक्षी 'काफल

पाक्कू' से भी हिन्दी साहित्य का परिचय उन्होंने ही पहली बार कराया है। बाद में इसी पक्षी को जानने की जिज्ञासा में उनकी मृत्यु के बाद तत्कालीन हिन्दी जगत के मूर्धन्य कवियों और साहित्य प्रेमियों ने उनकी कविताओं की खोज करते हुए उनके बारे में जानने की जिज्ञासा के चलते उनके कार्यों के मूल्याँकन की एक हल्की पहल हुई। इसी 'काफल पाक्कू' कविता में कवि ने वर्णन किया है –

हे मेरे प्रदेश के वासी
छा जाती वसंत जाने से जब सर्वत्र उदासी
झरते झर-झर कुसुम तभी, धरती बनती निधुवा सी

हिमछाया, हिमवन्त, हिम माधुरी उनकी ऐसी ही कविताएँ हैं जिनमें उन्होंने हिमालय के विविध रूपों को सामने रखा है।

'माधुरी मेरे हिमगिरि की', 'नीला देवदारू का वन है' और 'मुझे इसी में है सन्तोष/हिमगिरि में एक छोटा सा घर हो /धूप सेकने को दिनभर को/ जिस पर बहती रहे हवा निर्दोष।' आदि उनकी मधुर भाव युक्त हिमालय सम्बन्धी सुन्दर कविताएँ हैं। हिमालयी जंगलों में उगने वाले रैमासी के फूल को भी उन्होंने साहित्य में अमर बना दिया।

कवि चन्द्रकुवंर बर्त्वाल ने 13वर्ष की उम्र में अपनी पहली कविता 'पुरातन' शीर्षक से लिखी। उन्होंने ने न केवल बाल्यकाल से ही हिमालय के सौंदर्य को निहारा है बल्कि शिवालिक हिमालय में जन्म लेकर इसके विहंगम स्थलों नागनाथ पोखरी, मैकोटी में बाल्यावस्था बिताने के बाद इसे संयोग कहें या विधि का विधान कि आगे की पढ़ाई के लिए चन्द्रकुवंर को पौड़ी जाना पड़ा। पाठक जानते होंगे कि पौड़ी के किसी भी क्षेत्र से सुबह सवेरे उठते ही विराट, विहंगम और वृहत हिमालय के दर्शन होते हैं। नागनाथ में रहते हुए प्रकृति और परिवेश का जो वातावरण कवि को मिला था, कमोवेश वही वातावरण पौड़ी का भी था, अत: कोमल मन में हिमालय की अनुभूति के बीजों का अंकुरण होने के लिए अनुकूल परिवेश यहाँ उपलब्ध हो गया।

यह भी ध्रुव सत्य है कि अभी चन्द्रकुंवर का स्थान न केवल हिन्दी साहित्य में मूल्याँकित होना शेष है बल्कि दुनिया भर के किसी भी भाषा के साहित्य से उनकी तुलना का भार अधिक साबित होना शेष है। क्योंकि इतनी कम उम्र में इतनी विशद ऊँचाई तक पहुँचने वाला कवि समकालीन समय तक कोई दूसरा तो अखिल विश्व में अभी नहीं है। अल्पायु में ही यह नश्वर संसार छोड़ने से पहले वे 750 से अधिक कालजयी कविताओं जिनमें नन्दिनी, गीत माधवी,पयस्वनी, प्रणयिनी, विराट हृदय, हिम ज्योत्सना, विराट ज्योति, नाट्य नंदिनी, मानस मन्दाकिनी, उदय के द्वारों पर, काफल पाक्कू, साकेत परीक्षण, कंकण पत्थर, जैसी अमर पद्यात्मक रचनाओं, कुछ नाटक एवं कहानी संग्रह काल के कपाल पर अंकित कर गये।

अपनी उम्र के तेरहवें वर्ष में ही अपनी पहली कविता से हिन्दी साहित्य संसार में प्रवेश करने वाले इस कवि ने 28 वर्ष और 24 दिन की उम्र तक ही जीवित रह कर साहित्य जगत को वो अनुपम निधि सौंप दी जिसके मूल्याँकन के लिए अभी कार्य होना बाकी है।

सितम्बर 1992 में गढ़वाल के प्रसिद्ध चित्रकार बी.मोहन नेगी द्वारा चन्द्रकुवंर बर्त्वाल की कविताओं पर पोस्टर प्रदर्शनी को देखते हुए हिन्दी के बड़े और सशक्त हस्ताक्षर डॉ. नामवर सिंह जी का यह कथन कि–

उम्र के 29वें वर्ष में ही निधन होने के बाद भी संभावनाओं के नहीं बल्कि उपलब्धियों के कवि हैं। निश्चित तौर पर चन्द्रकुवंर की कविताओं में हिमालय की उदारता और गरिमा ही नहीं, वहाँ की रोजमर्रा की जिंदगी भी है। उनके गीतों में तन्मयता और मिठास के साथ साथ कड़वाहट भी है। वे मृत्यु से आँख मिलाकर देखने वाले कवि हैं।

कवि के कृतित्व को प्रकाश में लाने का सारा का सारा श्रेय कवि के अनन्य मित्र श्री शम्भु प्रसाद बहुगुणा जी को है। सन 1931 में पौड़ी गढ़वाल के मिशन स्कूल चौपड़ा में प्रवेश के बाद कवि का मिलन श्री शम्भु प्रसाद बहुगुणा से हुआ। यह मिलन एक दैवीय संयोग इसलिए भी कहा जायेगा कि यदि दोनों की यह मित्रता न

होती तो कवि चन्द्रकुवंर साहित्यिक जगत में गुमनाम तो रहते ही बल्कि उन्हें अपने घर और अपने ही लोग कवि के रूप में कभी नहीं पहचान पाते।

सन 1945 में शम्भु प्रसाद बहुगुणा जी के अथक प्रयासों से 'हिमवंत का एक कवि- श्री चन्द्रकुवंर बर्त्वाल' के माध्यम से देश-दुनिया के साहित्यिक समाज को चन्द्रकुवंर का परिचय मिला तो साहित्यिक जगत में एक नई चेतना के साथ चर्चा भी प्रारंभ हुई। अब तक चन्द्रकुंवर के साहित्य पर दो दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, तथा आधा दर्जन से अधिक शोधार्थियों को उनके साहित्य पर शोध के लिए सम्मान मिल चुका है।

सन्दर्भ-

1-चन्द्रकुँवर बर्त्वाल का जीवन दर्शन, -डॉ. योगम्बर सिंह बर्त्वाल

2-नंदिनी-गीत माधवी-संस्कृति प्रकाशन अगस्त्यमुनि।

3-दस्तक पहाड़ की। जुलाई - सितम्बर 2019।

4-भारतीय साहित्य के निर्माता-डॉ. उमाशंकर सतीश

5-चन्द्र कुँवर बर्त्वाल की कविताएँ - हरेन्द्र सिंह असवाल।

द्वारा/स्व. श्री जगदीश सिंह रावत
पशुआहार, अगस्त्यमुनि
पोस्ट - अगस्त्यमुनि
जनपद रुद्रप्रयाग
246421 (उत्तराखण्ड)
9759981877

प्रोफेसर मेहर गेरा

ये सच है कि वो अब मुझे मिलता भी नहीं है
ये बात भी रोशन है कि भूला भी नहीं है

क्या जानिए कब से वो सफर में है मेरे साथ
इक शख्स जिसे गौर से देखा भी नहीं है

दे जाता है वो जीने का अहसास हमेशा
मैं उसको मसीहा कहूँ ऐसा भी नहीं है

दिल में लिए फिरता है वो भीगे हुए मंज़र
लेकिन किसी बरसात में भीगा भी नहीं है

ये सच है मिरा ज़िक्र नहीं उसकी जुबां पर
महसूस ये होता है कि भूला भी नहीं है

आता है जुबां पर मेरी क्यों ज़ायका उसका
वो फल कि अभी तक जिसे चक्खा भी नहीं है

जो उसको दिया वक्त ने हालात ने अक्सर
हर एक में वो बाँट दे ऐसा भी नहीं है

है उसका किसी और से रिश्ता वही जाने
मैंने तो किसी और को चाहा भी नहीं है

है मेहर को लड़ने का बहुत शौक बजा है
बेकार किसी से कभी उलझा भी नहीं है

आजादी का दीवाना- खुदीराम बोस

-कालिका प्रसाद सेमवाल

खुदीराम का जन्म 3 दिसम्बर 1889 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के बहुवैनी नामक गाँव में कायस्थ परिवार में बाबू त्रैलोक्य नाथ बोस के यहाँ हुआ था, उनकी माता का नाम लक्ष्मीप्रिया देवी था।

बालक खुदीराम के मन में देश को आजाद कराने की ऐसी लगन लगी कि नौवीं कक्षा के बाद ही पढ़ाई छोड़ दी और स्वदेशी आन्दोलन में कूद पड़े। इस नौजवान ने हिन्दुस्तान पर अत्याचारी सत्ता चलाने वाले ब्रिटिश साम्राज्य को ध्वस्त करने के संकल्प में अलौकिक धैर्य का परिचय देते हुए पहला बम फेंका और मात्र 19 वें वर्ष में हाथ में भगवद गीता लेकर हँसते-हँसते फाँसी के फन्दे पर चढ़कर इतिहास रच दिया।

स्कूल छोड़ने के बाद खुदीराम रिवोल्यूशनरी पार्टी के सदस्य बने।1905 में बंगाल के विभाजन (बंग-भंग) के विरोध में चलाये गये आन्दोलन में उन्होंने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। मिदनापुर में युगान्तर नाम की क्रान्तिकारियों की गुप्त संस्था के माध्यम से खुदीराम क्रान्तिकार्यों पहले ही में जुट चुके थे।

1905 में लॉर्ड कर्जन ने जब बंगाल का विभाजन किया तो उसके विरोध में सड़कों पर उतरे अनेकों भारतीयों को उस समय के कलकत्ता के मैजिस्ट्रेट किंग्जफोर्ड ने क्रूर दण्ड दिया। अन्य मामलों में भी उसने क्रान्तिकारियों को बहुत कष्ट दिया था। इसके परिणामस्वरूप किंग्जफोर्ड को पदोन्नति देकर मुजफ्फरपुर में सत्र न्यायाधीश के पद पर भेजा।

युगान्तर समिति कि एक गुप्त बैठक में किंग्जफोर्ड को ही मारने का निश्चय हुआ। इस कार्य हेतु खुदीराम तथा प्रफुल्लकुमार चाकी का चयन किया गया। खुदीराम को एक बम और पिस्तौल दी गयी। प्रफुल्लकुमार को भी एक पिस्तौल दी गयी। मुजफ्फरपुर में आने पर इन दोनों ने सबसे पहले किंग्जफोर्ड के बँगले की निगरानी की। उन्होंने उसकी बग्घी तथा उसके घोड़े का रंग देख लिया। खुदीराम तो किंग्जफोर्ड को उसके कार्यालय में जाकर ठीक से देख भी आए।

30 अप्रैल 1908 को ये दोनों नियोजित काम के लिये बाहर निकले और किंग्जफोर्ड के बँगले के बाहर घोड़ागाड़ी से उसके आने की राह देखने लगे। रात में साढ़े आठ बजे के आसपास क्लब से किंग्जफोर्ड की बग्घी के समान दिखने वाली गाड़ी आते हुए देखकर खुदीराम गाड़ी के पीछे भागने लगे। रास्ते में बहुत ही अँधेरा था। गाडी किंग्जफोर्ड के बँगले के सामने आते ही खुदीराम ने अँधेरे में ही आगे वाली बग्घी पर निशाना लगाकर जोर से बम फेंका। हिन्दुस्तान में इस पहले बम विस्फोट की आवाज़ उस रात तीन मील तक सुनाई दी और कुछ दिनों बाद तो उसकी आवाज इंग्लैंड तथा योरोप में भी सुनी गयी जब वहाँ इस घटना की खबर ने तहलका मचा दिया।

यूँ तो खुदीराम ने किंग्जफोर्ड की गाड़ी समझकर बम फेंका था परन्तु उस दिन किंग्जफोर्ड थोड़ी देर से क्लब से बाहर आने के कारण बच गया। दैवयोग से गाड़ियाँ एक जैसी होने के कारण दो यूरोपीय स्त्रियों को अपने प्राण गँवाने पड़े। खुदीराम तथा प्रफुल्लकुमार दोनों ही रातों-रात नंगे पैर भागते हुए गये और 24 मील दूर स्थित वैनी रेलवे स्टेशन पर जाकर ही विश्राम किया।

अंग्रेज पुलिस उनके पीछे लग गयी और वैनी रेलवे स्टेशन पर उन्हें घेर लिया। अपने को पुलिस से घिरा देख प्रफुल्लकुमार चाकी ने स्वयं को गोली मारकर अपना बलिदान दे दिया जबकि खुदीराम पकड़े गये।

11 अगस्त 1908 को प्रात:काल 6 बजे उन्हें मुजफ्फरनगर में फाँसी दी जानी थी। 10 अगस्त की रात को उनके पास जेलर आया। जेलर खुदीराम को

बेटे की तरह प्यार और लगाव हो गया था। जेलर अपने साथ चार रसीले आम लेकर आया था जिसे उसने खुदीराम को खाने के लिए दिये। खुदीराम ने जेलर से आम लेकर रख लिये।

अगली सुबह जेलर खुदीराम को लेने आये ताँकि उनको फाँसी दी जा सके। जेलर ने देखा कि उसने रात में खुदीराम को जो आम दिये थे, वे वैसे ही पड़े थे। जेलर के पूछने पर खुदीराम ने कहा कि जिसको सुबह फाँसी के फँदे पर झूलना हो, उसे खाना-पीना कैसे अच्छा लगेगा।

जेलर यह सुनकर आम उठाने को आगे बढ़ता है और जैसे ही आम उठाना चाहता है, तो छिलके पिचक गए। दरअसल खुदीराम ने आम खा लिये थे और छिलके को फुलाकर ऐसे रख दिया था जिससे लगे कि आम हो। इस पर खुदीराम जोर से ठहाका मारकर हँसे और उनके साथ जेलर एवं अन्य लोग भी हँसने लगे।

जेलर खुदीराम को बिंदास देखकर हैरान रह गया। वह सोच रहा था कि कुछ समय पश्चात् जिस इंसान को फाँसी होने वाली है वह इतना बेफिक्र कैसे है और अट्टहास कर कैसे मृत्यु की उपेक्षा कर रहा है।

जब जज ने फैसला पढ़कर सुनाया तो खुदीराम बोस मुस्कुरा दिये। जज को ऐसा लगा कि खुदीराम सजा को समझ नहीं पाए हैं, इसलिए मुस्कुरा रहे हैं। कन्फ्यूज होकर जज ने पूछा कि 'क्या तुम्हें सजा के बारे में पूरी बात समझ आ गयी है।' इस पर बोस ने दृढ़ता से जज को ऐसा उत्तर दिया जिसे सुनकर जज भी स्तब्ध रह गया।

उन्होंने कहा कि न केवल उनको फैसला पूरी तरह समझ में आ गया है, बल्कि समय मिला तो वह जज को बम बनाना भी सिखा देंगे।

मानस सदन, अपर बाजाार,
रुद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड
9410760663

आजादी महोत्सव पर संकल्प

-डॉ. राकेश चक्र

आजादी का अमृत महोत्सव तभी फलदायक होगा, जब हम सभी देशवासी अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए यह संकल्प और प्रतिज्ञा करें कि मैं सदा देश और समाज के हित का ध्यान में रखते हुए काम करूँगा/करूँगी।

मैं बिजली, पानी, अन्न या अन्य संसाधनों का दुरुपयोग कदापि नहीं करूँगा/करूँगी।

मैं सार्वजनिक स्थानों या अन्य स्थानों जैसे नाले या नालियों, रेलवे लाइन आदि में कूड़ा करकट नहीं डालूँगा/ डालूँगी। कूड़ा आदि यथास्थान पर ही डालूँगा/ डालूँगी।

मैं बाजार से सामान खरीदने के लिए घर से कपड़े का थैला लूँगा / लूँगी, साथ ही प्लास्टिक की पन्नियों के उपयोग से बचूँगा / बचूँगी।

मैं धरती को हरा - भरा करने के लिए पेड़ पौधों का संरक्षण करूँगा / करूँगी। साथ ही धरती और हवा में प्रदूषण नहीं करूँगा / करूँगी। जैसे पटाखेबाजी, पंतगबाजी आदि जिससे धरती और हवा में प्रदूषण का विष मिल रहा है।

कहने तात्पर्य है कि हमारे छोटे से छोटे संकल्प ही भारत को विश्व गुरु बना सकते हैं। ठीक उस तरह देशभक्ति पैदा कर सकते हैं जैसे जापान, ताइवान और इजरायल में देखने को मिलती है, छोटे देश होने के उपरांत भी वह आज विश्व के पटल पर बहुत शक्तिशाली हैं।

90, शिवपुरी, मुरादाबाद
मोबाइल : 09456201857

टाइगर हिल पर विजय पताक

-पूर्णिमा ढिल्लन

26 जनवरी 2000 को मात्र 19 वर्ष की आयु में भारत के सर्वोच्च शौर्य अलंकरण तत्कालीन राष्ट्रपति के आर नारायण जी के द्वारा 'परमवीर चक्र' विजेता का सबसे कम उम्र में इस सम्मान को पाना, सूबेदार मेजर योगेंद्र सिंह यादव जी जी एवं उनके परिवार के लिए तो गौरवपूर्ण क्षण थे ही, साथ ही पूरे भारत को भी अपने इस टाइगर, वीर साहसी योद्धा पर गर्व है। पूरा देश इस जिंदा शहीद के शौर्य को नमन करता है।

आज हम ऐसे एक दृढ़ निश्चयी बालक की कहानी आपको सुना रहे हैं जिसने ने 10 मई 1980 को उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में, औरंगाबाद अहीर गाँव के एक किसान फौजी के घर जन्म लिया। नाम रखा गया योगेंद्र सिंह यादव।

वह करण सिंह यादव और संतरा देवी की दूसरी संतान थे। जहाँ उन्हें देश भक्ति, देश प्रेम और राष्ट्र पर सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा पिता से मिली, वही माँ संतरा देवी से मिली धार्मिकता और सात्विकता को अपनाया। 16 वर्ष की उम्र में फौज में भर्ती हो गए। एक साल की ट्रेनिंग के बाद उन्हें 18 ग्रेनेडियर की पोस्ट मिली। यह यूनिट कश्मीर वैली के अंदर ही थी। वहाँ पहुँचकर आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन करना, शत्रु को घेरना और सेना के दूसरे बहुत से पैंतरों को सीखा।

कारगिल युद्ध 3 मई 1999 को शुरू हुआ और 26 जुलाई 1999 तक चला। कारगिल की तमाम भारतीय चौकियों पर पाकिस्तान ने कब्जा कर लिया। घोषणा हुई, जो 18 ग्रेनेडियर्स के सैनिक हैं, जल्दी से जल्दी अपने डॉक्यूमेंट जमा करें उन्हें द्रास सेक्टर की तोलोलिंग पहाड़ी पर चल रही लड़ाई में शामिल होने के लिए भेजा जा रहा था। योगेन्द्र सिंह जी के लिए यह बहुत ही खुशी और गर्व के पल थे।

योगेंद्र जी के साथ 15 जवान और थे जिन्हें गोला बारूद और राशन पानी पहुँचाने का काम मिला। वह लोग सुबह 5:30 बजे चलकर रात को 2:30 बजे चौकी

पहुँचते थे और फिर 2 घंटे में नीचे वापस आते थे। चारों तरफ से दुश्मनों के आर्टलरी फायर, मोटर फायर और गनसफायर से बचते बचाते आगे बढ़ते जा रहे थे बस उन्हें एक ही लगन रहती ऊपर जो साथी बैठे हैं, वे इसलिए फायर कर रहे हैं कि हम उनको गोला-बारूद दे रहे हैं और वह हमारे सीने को सुरक्षित रख रहे हैं, तो हमारा भी फर्ज बनता है कि हम उनकी पीठ को सुरक्षित रखें। इसी उद्देश्य से 22 दिन लगातार चलने की ताकत मिली। 22 दिन चलने वाले इन तीन जवानों की यह पहचान बन गईवकि तीनों शारीरिक और मानसिक बहुत सुदृढ़ हैं इसलिए इनको अलग विशेष टुकड़ी में शामिल किया जाए ।

इंसान यदि किसी काम में अपनी पूरी आंतरिक शक्ति लगा देता है, तो वह काम अव्वल दर्जे का हो जाता है और वह उस इंसान की पहचान बन जाता है। इनकी बटालियन ने 22 दिन के कड़े संघर्ष के बाद, दो ऑफिसर, दो जूनियर कमीशंड ऑफिसर और 21 जवानों को खोकर 22 जून 1999 को पहली सफलता के रूप में तोलोलिंग पहाड़ी को प्राप्त किया।

अब इनके सामने चुनौती थी द्रास सेक्टर की सबसे ऊँची चोटी टाइगर हिल को जीतने की। जिसकी ऊँचाई16,500 फुट थी। कमांडिंग ऑफिसर कर्नल कुशालचंद ठाकुर ने टाइगर हिल पर कब्जा करने की योजना तैयार की थी। कैप्टन बलवान सिंह के नेतृत्व में 18 ग्रेनेडियर्स के घातक प्लेटून को यह टास्क दिया गया।

तब उनके बटालियन कमांडर ने कहा हमें एक और टास्क हिंदुस्तान की फौज ने दिया है, ताकि हमारे जो जवान शहीद हुए हैं हम उनका बदला भी ले सकें।

योगेंद्र जी की ढाई साल की सर्विस थी और मात्र 19 साल की उम्र कोईव्अधिक तजुर्बा नहीं था। सिर्फ था तो साहस, जोश, जुनून और बदले की भावना। जुलाई की एक रात उनकी टीम 'घातक प्लेटून' ने टाइगर हिल की पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया। दो रात और 1 दिन लगातार पहाड़ी पर चढ़ने के बाद तीसरी रात का वह मंजर बहुत ही भयानक था। 90 डिग्री की सीधी चट्टान थी, सारे सैनिक एक-दूसरे का हाथ पकड़ रस्सियों के सहारे बहुत ही कठिन चढ़ाई चढ़ रहे थे। तभी दुश्मन ने दोनों तरफ से फायरिंग शुरू कर दी और रास्ता कट गया। कुल सात जवान ही ऊपर पहुँच पाए। सामने सात-आठ मीटर का खाली मैदान था और थे दुश्मन के बंकर। हमारे सैनिकों ने जबरदस्त फायरिंग की और पाकिस्तान के तमाम सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। शिखर पर पाकिस्तान का डेप्लॉयमेंटथा। उन्होंने देखा भारत की फौज बहुत नजदीक आ गई है। हमारी फौज पर जबरदस्त फायरिंग हुई और वे लोग ऐसी स्थिति में आ गए कि एक कदम आगे बढ़ें तब भी मौत और एक कदम पीछे रखें तब भी मौत थी। मगर भारत.... ? मरना ही तो है.... जितने ज्यादा से ज्यादा मार सके, हम मारेंगे। हिंदुस्तानी सैनिकों के शरीर चाहे गोलियों से छलनी ही क्यों ना हो जाएँ, रक्त की आखिरी बूंद तक उसके कदम दुश्मन की तरफ बढ़ते हैं, पीछे नहीं हटते। हमारे सैनिकों ने उन्हीं के मोर्चों से मृत सैनिकों के शव निकाल कर वहीं से गोलियाँ चलाईं। वे पाँच घंटे तक लगातार फायरिंग करते रहे । पीछे से कोई सहायता नहीं थी। तब एक रणनीति बनाई, शस्त्रों का इस्तेमाल तभी करेंगे, जब दुश्मन बाहर निकल कर आएगा। जब भारतीय सैनिकों ने उनके फायर का कोई जवाब नहीं दिया, तो उन्हें लगा कि सब मारे जा चुके हैं। 20 मिनट लगातार फायरिंग करने के बाद पाकिस्तानी यह देखने के लिए आए कि कोई जिंदा बचा है या नहीं। तभी भारतीय सैनिकों ने उन पर गोलियाँ दाग दीं। वे आठ -दस लोग थे, उनमें से शायद एक या दो लोग जिंदा बचे थे, उन्होंने ऊपर जाकर अपने कमांडरस् को बताया कि वहाँ पर भारत के आठ-दस जवान हैं। तीस मिनट के अंदर ही पाकिस्तान के लगभग पैंतीस-चालीस जवानों ने भारतीय सैनिकों पर इतना जबरदस्त हमला किया कि हमारे सैनिक सर भी नहीं उठा पाए। इसके साथ ही ऊपर से पत्थर और ग्रेनेड फेंकने भी शुरू कर दिए। हमारे सैनिकों ने गोली नहीं चलाई। उन्हें डर था कि गोली चलते ही हमारी लोकेशन जाहिर हो जाएगी और तब वह आसानी से हमें बर्बाद कर देंगे। जब पाकिस्तानी सैनिक और नजदीक आ गए तब उन्हें हमारी LMG की मशीनगन की लाइट नजर आई। उसी के ऊपर उन्होंने RPG का राउंड दागा। उससे हमारा हथियार नष्ट हो गया। फिर उन्होंने हमारे प्लेटून हवलदार को पत्थर से घायल कर दिया। LMG के ठीक बायीं तरफ योगेंद्र जी थे। प्लेटून हवलदार ने कहा, ''योगेंद्र LMG जी को उठाकर फेंक, दुनिया में इस हथियार के सिवाय कोई बचाने वाला नहीं है।" बस यह उनके आखिरी शब्द थे। LMG को फेंकने के बाद जैसे ही उन्होंने ऊपर की ओर देखा तो पाँच पाकिस्तानी जवान खड़े थे। उन्होंने कहा.. सर, यह तो बहुत नजदीक आ गए हैं, यहाँ तक कि उनकी आवाज भी दुश्मनों तक पहुँच गई। उन्होंने ऊपर से एक ग्रेनेड फेंका। ग्रेडेड का स्प्रिंटर उनके साथ बैठे जवान को लगा। उसकी उंगली कट कर दूर जा गिरी। वह बोला, 'योगेंद्र ... मेरा तो हाथ कट गया।' योगेंद्र जी बोले , 'सर... हाथ नहीं कटा सिर्फ उंगली कटी है।' तभी एक और जवान घायल हो गया। सभी ने बोला, आप लोग नीचे चले जाओ कम से कम अपने साथियों को जो चढ़ सकते हैं चढ़ाने की कोशिश करो। तभी एक साथी और घायल हो गया। वह उसकी मदद करने पहुँचे। जैसे ही दुश्मनों की निगाह उन पर पड़ी, उन्होंने ग्रेनेड फेंका स्पलिन्टर का टुकड़ा उनके पैर पर लगा। पैर में गहरा जख्म हो गया जैसे ही वह फर्स्ट ऐड

करने लगे एक और स्प्लिंटर का टुकड़ा उनकी नाक पर लगा। नाक से खून की धारा बहने लगी चेहरा सुन्न हो गया। वह अपने साथी के पास गए, सर फर्स्ट ऐड कर दीजिए। उन्होंने फर्स्ट एड करने के लिए पट्टी निकाली ही थी कि एक गोली आकर उनके सिर में लगी। उन्होंने अपने साथी अनंतराम से कहा, सर को तो गोली लगी है तभी एक गोली अनंतराम के गाल को चीरती हुई निकल गई। योगेंद्र जी ने अपने साथियों से कहा दोनों शहीद हो गए हैं। बस इतना ही बोल पाए थे कि दुश्मनों ने उन सब को चारों ओर से घेर लिया। जबरदस्त बमबारी की। तमाम साथी शहीद हो चुके थे। उन्हें लगा बस, अब सब कुछ खत्म हो गया। पाकिस्तान के कमांडर ने आकर सब को चेक किया कि कोई जिंदा तो नहीं है। योगेंद्र जी बेहोशी की हालत में थे, लेकिन उनको सुन पा रहे थे। वे अगल-बगल के सभी साथियों को गोलियाँ मारते जा रहे थे। उनके भी टांगों और हाथों में गोली लगी थी, लेकिन चुपचाप साँस रोककर पड़े रहे। जब उन्हें यकीन हो गया कि कोई जिंदा नहीं है, फिर भी उन्हें ठोकरें मारते हुए गालियाँ देते रहे। तभी पाकिस्तान के कमांडर के शब्द उनके कान में पड़े। नीचे हिंदुस्तानियों की एमएमजी की जो पोस्ट है उसे बर्बाद कर दो। उन्हें लगा अब उनके सभी साथी शहीद हो जाएंगे। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की, कि मुझे इतनी देर जिंदा रखो, कि मैं अपने साथियों को खबर कर सकूं। उन्होंने फिर से सब को चेक करना शुरू किया योगेंद्र जी ने सोचा, चाहे मेरे हाथ पैर कट जाएँ उफ नहीं करूँगा बस सिर और सीने में गोली ना लगे। दुश्मनों ने फिर से उनके हाथ और पैरों में गोलियाँ मारीं। जैसे ही उनके सीने की तरफ बंदूकतानी, एक पल के लिए लगा अब नहीं बच पाऊँगा, मगर गोली उनकी वर्दी की पॉकेट में रखे पर्स के पाँच-पाँच के सिक्कों से टकराकर लौट गई। शायद यह उनका ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास धार्मिकता, सात्विकता और आध्यात्म की ताकत थी। 17 गोलियाँ लगने के बाद भी वह जिंदा थे। तब उन्हें विश्वास हो गया अभी तक नहीं मरा, तो मरूँगा भी नहीं। उन्होंने अपना आखिरी हथगोला दुश्मन पर फेंका जो उसके कोट की हुड़ में फंस गया जब तक वह कुछ समझ पाता, हथगोला फटा और उसका सिर उड़ गया। अब योगेंद्र जी ने उसकी राइफल को उठाकर अलग-अलग जगहों से जाकर फायरिंग की। दुश्मनों को लगा कोई अतिरिक्त टुकड़ी उनकी सहायता के लिए आ गई है। वे सब लोग भाग खड़े हुए। तीन चार फीट की दूरी पर दुश्मनों का लंगर चल रहा था। उनके टेंट लगे हुए थे, हेवी वेपन का डेप्लॉयमेंट था। उन्होंने पूरी जानकारी इकट्ठी की। बस एक ही जुनून था कि अपने साथियों को बचाना है। धीरे-धीरे अपने साथियों तक पहुँचे लेकिन कोई भी जीवित नहीं था। वहाँ बैठकर बहुत देर तक रोते रहे। टूटे हाथ को बांधने की कोशिश की। जब नहीं बंधा तो हाथ को तोड़ने की कोशिश भी की। नहीं टूटा, तो कमर में बेल्ट में फंसा लिया। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करना चाहिए। तभी एक आवाज सुनाई दी, ''बेटा इस नाले से नीचे उतर जा।'' लुढ़कते लुढ़कते नीचे पहुँचे जब अपने साथी दिखाई दिए तो उन्हें पूरी सूचना दी।

''पोस्ट को बचा लो। दोपहर दो बजे उन्हें सीओ कमांडिंग ऑफिसर कुशाल चंद ठाकुर के पास पहुँचाया गया। उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। बहत्तर घंटों से उन्होंने कुछ खाया भी नहीं था। डॉक्टर ने उन्हें एक पूरी ग्लूकोस की बोतल पिलाई । थोड़ा होश आने पर उन्होंने पूरा घटनाक्रम अपने सीओ को बताया। उसके बाद डॉक्टर ने 1 इंजेक्शन लगाया तीन दिन बाद जब उन्हें होश आया तो पता चला कि उनके साथियों ने टाइगर हिल पर अपनी जीत का झंडा लहरा दिया है। तमाम साथियों की शहादत के बाद विजय के पलों ने खुशी की पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया।

रक्त में उबाल है तू जिंदा एक मिसाल है
बारूदों की बारिश में सरहदों की ढाल है
जोश तेरा बाण है तू निर्भयता का तीर है
युद्ध तेरा मान है तू शूर है तू वीर है।

फ्लैट नं.-401, बिल्डिंग-5, अशोक अस्टोरिया, गोवर्धन विलेज, गंगापुर रोड, नासिक-422222, **मो. 7767943298**

गुमनाम क्रांतिकारी की जानकारी

ऋषिकेश में गंगा के किनारे चार दिन की सड़ी हुई एक लाश मिली थी। भीड़ इकट्ठी हो गयी, पुलिस बुला ली गयी। सबने लाश से बार बार पूछा- ''लाश! कौन हो तुम?"

लाश का मुँह सड़ गया था। वह कुछ बोल नहीं पा रही थी। भारत में पुलिस के आगे जिन्दे लोग नहीं बोल पाते, वह तो फिर भी लाश थी। हाँ, उसके कपड़ों ने बताया- वह एक बूढ़ी बंगालन स्त्री थी।

किसी ने कहा कि मुक्ति मिल गयी। किसी ने परिजनों के लिए धिक्कार की गालियाँ गढ़ीं। पुलिस ने चौकीदारों से लाश को तिरपाल में लपेटवाया और ले गयी। चौकीदारों ने मन ही मन गालियाँ दीं- ''ऐसी नौकरी तो साली दुश्मन को भी न मिले..."

पुलिस मुख्यालय में अधिकारी महीनों तक लाश से उसका परिचय पूछते रहे। बीच बीच में कुछ पत्रकारों ने भी पूछा, शहर की समाजसेवी संस्थाओं के लोगों ने पूछा, उस इलाके के नेताओं ने पूछा, पर कोई उत्तर नहीं मिला।

इन सबने मिल कर महीनों तक कड़ियाँ जोड़ीं। जाँच हुई, गायब हुए लोगों का पता किया गया, अंदाजे लगाए गए। अब लाश बोलने लायक हुई। लाश जानती थी कि यह जादुई यथार्थवाद का युग है, सो उसने बोलने के अनुरोध को स्वीकार कर लिया। इंस्पेक्टर ने अबकी पूछा तो लाश सुगबुगाई। पुलिस को बल मिला, इंस्पेक्टर ने पूछा- ''बुढ़िया बता! किसकी लाश है तू?"

लाश बोली, ''वीणा दास को जानते हो दारोगा साहब?"

''कौन वीणा-दास? मैं नहीं जानता किसी वीणा वीणा को..."

''पद्मश्री वीणा दास! सुभाष चन्द्र बोस के गुरु बेनीमाधव दास और समाजसेवी कमला देवी की पुत्री वीणा दास। वही वीणा, जिसे अंग्रेज गवर्नर को गोली मारने के कारण कालापानी की सजा हुई थी। जिसने सेलुलर जेल में दस वर्ष काटे थे।"

''हैं?? यह कौन सी कथा है रे बुढ़िया? मैंने तो कभी नाम तक नहीं सुना..." इंस्पेक्टर झुंझला गया था।

लाश ठहाके लगा कर हँसने लगी। कुछ देर बाद बोली- ''कोई बात नहीं साहब! आजाद भारत क्यों याद रखे स्वतन्त्रता संग्राम को? सुख के दिनों में दुख की कथाएँ कौन गाये..."

''अच्छा तो तू ही बता दे उनके बारे में..." सब एक साथ चीखे।

लाश हँसी। बोली, ''सुनो! वीणा के पिता बंगाल के क्रांतिकारियों में प्रतिष्ठित और पूज्य थे। उसकी माँ लड़कियों के लिए विद्यालय चलाती थी। बचपन से ही उसने सुभाष बाबू को अपने घर आते देखा था और उनसे बहुत प्रभावित रहती थी।"

सबकी निगाह लाश पर जम गई थीं। वह बोलती गयी, ''कलकत्ता विश्वविद्यालय से उसने बी.ए. की परीक्षा पास की थी। दीक्षांत समारोह के दिन ही उसने अपने जीवन को सार्थक करने का मन बनाया था। इस काम में उसके पिता और माँ दोनों उसके साथ थे। माँ ने जाने कहाँ से ला कर उसे भरी हुई पिस्तौल दी थी।

विश्वविद्यालय में डिग्री बांटने के लिए गवर्नर स्टैनली जैक्सन आया था। वह जैसे ही मंच पर खड़ा हुआ, वीणा उठ कर आगे बढ़ी और फायर झोंक दिया। गोली गवर्नर की कनपटी को छूती हुई निकल गयी। वह दूसरा फायर करती तब तक इंस्पेक्टर सोहरावर्दी ने एक हाथ से उसका गला पकड़ लिया, और दूसरे हाथ से उसके पिस्तौल वाले हाथों को ऊपर उठा दिया। वह फिर भी फायर करती रही। उसके पांचों फायर बेकार गए..."

सबके चेहरे पर आश्चर्य पसरा हुआ था। वे सन्न पड़े चुपचाप सुन रहे थे। लाश ने कहा, ''उसके बाद केस चला, दस साल की सजा हुई। सन 1939 तक सजा काटी। छूटने के बाद फिर आंदोलनों में सक्रिय हो गयी। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भी जेल गयी...''

''फिर?''

''फिर 1947 में देश आजाद हुआ तो वीणा ने विवाह कर लिया। आयु 36 की हो गयी थी, पर सोचा कि अब सुखी जीवन जीने के दिन हैं... पर शायद ईश्वर को मंजूर नहीं था। पति का देहांत हुआ और फिर आगे पीछे कोई न दिखा! वीणा ऋषिकेश आ गयी। एक स्कूल में पढ़ाती, उसी से खर्च चल जाता।''

''फिर?''

''फिर क्या? एक दिन आया जब उम्र देह पर भारी पड़ने लगी। पढ़ाने की शक्ति नहीं रही। कुछ दिन इधर-उधर से मांग कर पेट भर लिया... और एक दिन सड़क पर चलते चलते ठोकर लगी, ऐसी गिरी कि उठ न सकी... वहीं से निकल ली।''

''हाँ जी! पर दुखी मत होवो आप लोग! जब मैं दुखी नहीं तो तुम लोग क्यों हो रहे हो? मुझे मेरा देश बहुत प्रिय है। मैं यहाँ मर कर भी बहुत प्रसन्न हूँ।''

''लेकिन सरकार को तो आपकी व्यवस्था करनी चाहिये थी। इतनी बुरी मृत्यु... उफ्फ!''

''सरकार तो सरकार ही होती है जी, वह अंग्रेजों की हो या भारतीयों की हो... कुछ नहीं बदलता! जिसे देश की जनता भूल जाय उसे सरकारें क्या याद रखेंगी।''

भीड़ छंटने लगी। सब अपने अपने काम में लगे। लाश भी जला दी गयी। पर इंस्पेक्टर के साथ कुछ गड़बड़ हो गया। वह जब भी अपने कार्यालय में टंगा भारत का नक्शा देखता तो उसे उसमें लाश की तस्वीर दिखती और तब उसकी आँखों में केवल लज्जा होती थी।

-देहली पुस्तक सदन की फेसबुक वाल से साभार

गुलाबी फूल

दीप्ति सारस्वत प्रतिमा

हिमालय का एक ऊंचा सा दुर्गम पहाड़ जाड़े के दिनों में भालू की तरह शीत निद्रा में चला गया था। इधर सर्दियाँ शुरू हुईं उधर आसमान ने उसके बदन पर निर्मल फाहों से भरी बर्फ़ की सफ़ेद मोटी रजाई ओढ़ा दी। फिर क्या था पहाड़ ने एक अलसाई जमहाई ली और दुनियादारी भूल लंबी तान कर सो गया।

उसे इस तरह से सोये बड़ा लंबा समय हो गया था और उसके दोस्त अब उसकी इस लंबी नींद की वजह से ऊबने लगे थे, सूरज की किरणें शरारत करती रोज ही उसके मुँह पर से सफ़ेद लिहाफ़ वाली बर्फ़ीली रजाई को थोड़ा-थोड़ा सरका देती थीं, चिड़ियाँ रोज़ सुबह-सुबह उसके कान पर अलार्म बजातीं, इधर पहाड़ था कि जागने के मूड में ही नहीं था। वह थोड़ा कुनमुनाता, अलसाता और फिर से सो जाता, सूरज की किरणों ने अब उसके साथ मस्ती शुरू कर दी थी। वे सब मिलकर अपनी गुनगुनी उंगलियों से उसको गुदगुदी कर जगाने क प्रयास करने लगीं। इस प्रयास में ऋतुराज वसंत ने भी किरणों का साथ दिया। आखिरकार पहाड़ ने कुनमुनाते हुए अपनी उनींदी पलकें खोल ही दीं। पलक खोलते ही देखता क्या है कि वसंत उसके लिए सुंदर-सुंदर फूल लिए खड़ा मुस्कुरा रहा है। वसंत की मुस्कान मीठे पानी के सोते समान पहाड़ के दिल में उतर ग०।

आज पहाड़ के सभी दोस्त बहुत ही खुश, जीवंत, उल्लसित और आनंदित हैं। आज ही तो एक अरसे के बाद वसंत के दिए हजारों रंगों वाले फूलों के साथ पहाड़ नींद से जागा है। जागते ही पहाड़ की नज़र अपनी गोद में खिले एक गुलाबी फूल पर पड़ी, ओस की बूंदों में नहाया सौन्दर्य की प्रतिमा, आह! गुलाबी फूल। वसंत का उपहार गुलाबी फूल। फूल का भोलापन, उसकी खिलखिलाहट अद्‌भुत थी। पहाड़ को जागता देख प्यारा-सा गुलाबी फूल कुछ और

खिल गया और हँसते हुए बोला सुप्रभात मित्र। सुस्ती दूर भगाओ और अपने मित्रों के साथ खेलो। देखो! हम कब से तुम्हारे जागने का इंतज़ार कर रहे थे। उसे देखते ही पहाड़ का मन महक गया फूल की सुगंध उसके दिल में उतर गई। उसकी चुलबुली हँसी सुन बहारें नाचने लगीं। पहाड़ खुश हो रहा था कि इन फूलों की वजह से दुनिया कितनी सुंदर है! ताज़ी हवा, खिली धूप सब कितना रोमांचकारी है। गुलाबी फूल से उसे विशेष प्रेम हो गया था। वह उस फूल को हवा में झूमते खिलते देखता तो उसका मन गुदगुदाता। पहाड़ को और उसके साथ-साथ सभी कीट पतंगों को उस फूल से विशेष प्रेम हो गया था। खासकर पहाड़ को तो इसे देखते रहना खूब भाता था। पहाड़ के साथ-साथ गुलाबी फूल के अनेक दोस्त बनने लगे थे। फूल अपनी जगह हँसता खिलखिलाता सबका स्वागत करता। स्वागत करना फूल का स्वभाव जो था।

एक दिन भागता हुआ एक काला चींटा गलती से वसंत के दिए उपहार उस गुलाबी फूल पे जा चढ़ा। फूल उस की हड़बड़ी को देख मुस्कुराता रहा। काला चींटा उस से क्षमा माँगता अपना रास्ता तलाशता तेजी से अपनी बाँबी की ओर भाग गया फिर कहीं से उड़ती हुई एक तितली आई और इत्मीनान से उसकी गोद में आ कर बैठ गई। उसे देख फूल को लगा मानो उस तितली ने फूलों की पंखुड़ियों से ही अपने पंख पाए हों। चंपई रंग की तितली थी वह। बेहद खूबसूरत हल्की-फुल्की। प्यारी इतनी कि फूल उस पर बलिहारी हुआ जाए। तितली ने बताया वह ख़ास उसी से मिलने आई थी। वह कब से उसके खिलने का इंतजार कर रही थी फूल कुछ ना बोला। चकित-सा बस उसके कोमल स्पर्श और चुंबन महसूस करता रहा फूल तितली के प्रेम में डूबा हुआ ही था कि इतने में गुनगुनाता हुआ एक भँवरा आया, उसे देख तितली जल्दबाज़ी में फूल से विदा ले कर उड़ गई। फूल को उसने बागों के, बगीचों के, हवाओं के, सूरज के अनेक मधुर गीत सुनाए। फूल भंवरे की मधुर गुंजन में डूबा झूमता रहा। थोड़ी देर में मधुमक्खी भी आई। उसे थोड़ा-सा सहला प्रेमपूर्वक मधु माँग ले गई। धीरे-धीरे अनेक मधुमक्खियाँ, भँवरे, तितलियाँ और जाने अनजाने कीट-पतंगे उसके पास आने लगे। फूल अपनी इतनी अधिक पूछ पर फूला न समाता।.. .वह मुस्काता रहा अपनी खूबसूरती और सुगंधि पर इतराता रहा। उसके नन्हें-नन्हें दोस्त रोज़ आते बतियाते लड़ियाते वह उनको उपहार स्वरूप अपने पराग कण देता वे उन्हें अपने पैरों में चिपका दूसरे फूलों में बांट आते। अन्य फूलों के परागकण उसको उपहार दे जाते। वसंत बहार अपने चरम पर थी और फूल का रंग रूप गंध अपने चरम पर। पहाड़ सारी वनस्पति की तरह उस फूल की जड़ों को भी पौष्टिक भोजन दिया करता। पहाड़ का अंग-अंग उस फूल के वात्सल्य में महक रहा था। वसंत की तृप्ति था वह फूल। सभी हिल-मिल एक दूजे से किलोल करते हँसते गाते पहाड़ की गोद में खेल रहे थे कि अचानक एक दिन पहाड़ पर एक खनकती हुई आवाज़ गूंजी -

''हाय! कितना सुंदर फूल है। वो गुलाबी वाला फूल, मुझे तोड़ के दो न जानू!''

पहाड़ पर सैर के लिए आए प्रेमी युगल के इस संवाद को सुन कायनात स्तब्ध थी। फूल को तोड़े जाने का अर्थ पता ही नहीं था। वह पहले की तरह हँस रहा था। स्वागत करना उसका स्वभाव जो था, किन्तु पहाड़ इंसानी कदमों की आहट और इंसानी फ़ितरत अच्छे से पहचानता था। यह तो इंसान की सबसे मासूम अदा थी। इंसानी कदमों की आहट यानि पहाड़ का शोषण और प्रकृति का चीर हरण...आज पहाड़ के दिल में अजब सी बेचैनी और हलचल थी।

प्रवक्ता हिंदी
रा. उ. व. मा. विद्यालय
बसंतपुर, शिमला

फालतू कोना

-डॉ. हंसा दीप

संक्षिप्त परिचय

युनिर्वसिटी ऑफ टोरंटो में लेक्चरार के पद पर कार्यरत। पूर्व में यार्क युनिर्वसिटी, टोरंटो में हिन्दी कोर्स डायरेक्टर एवं भारतीय विश्वविद्यालयों में सहायक प्राध्यापक। चार उपन्यास व पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित। गुजराती, मराठी व पंजाबी में पुस्तकों का अनुवाद। प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ निरंतर प्रकाशित।

22 Farrell Avenue
North York] Toronto
ON – M2R1C8] Canada
001 647 213 1817
hansadeep8@gmail-com

वह मर चुका है, सुहास अब नहीं रहा।

मरे हुए आदमी के लिए सब रोते हैं। विलाप करते हैं। क्रंदन और सिसकियों का चीत्कार होता है। भरा-पूरा परिवार मिलकर मातम मनाता है। हर दूर के रिश्तेदार के आने पर रोने की आवाज़ तेज़ होती है मानो वह आया ही है इसलिए कि घर वालों को जी भर कर रुला दे, खुद भी रो ले। आम तौर पर मौत का यही मंजर होता है परन्तु यहाँ ऐसा कुछ नहीं हुआ। मौत तो हुई थी लेकिन ऐसी मौत जो शांति लेकर आयी थी। सबके दिलों को ठंडक पहुँचाती शांति।

सुहास का अंतिम संस्कार होने की तैयारी में था। सब एक दूसरे को मदद करते उसकी विदाई की तैयारी कर रहे थे। गनीमत यह थी कि कोई हँसी-ठट्ठा नहीं था। वरना लोग जब इकट्ठे होते हैं तो या तो रोते हैं या फिर ज़ोर-ज़ोर से बातें करके ठहाके लगाते हैं। इतना सलीका तो अभी था कि रोना ना आए तो ना सही, पर कम से कम ख़ामोश तो रहा जा सके। मिलने-जुलने वाले भी आए, ख़ामोश बैठे और चले गए। जब चाहो तो दिखाने के लिए ही सही, दो आँसू नहीं बहते और जब कभी बहते हैं तो रुकते नहीं। उन आँखों में जिनमें आँसुओं की नदियाँ बहनी थीं वहाँ एक चुप्पी थी, एक चैन था। आए दिन के तमाशे से निज़ात मिलेगी, गालियों से छुट्टी मिलेगी, घर के कंकास से मुक्ति मिलेगी। उस शराबी पति के आरोपों से बरी होने का संतोष था जो रोज़ शाम को शराब पीकर गालियाँ देता था, चरित्र पर लांछन लगाता था।

बच्चे और बच्चों की माँ आँखों-आँखों से बात कर लेते "इतना समय क्यों लगाया जा रहा है?"

"कुछ ही समय की बात है, थोड़ा धैर्य रख लो। अभी सब कुछ निपटा जाता है।"

"पूरा दिन तो निकल चुका है और कब तक?"

"बस थोड़ी देर और..."

अनपूछे सवालों के अनकहे जवाब तसल्ली दे देते एक दूसरे को। बच्चों की इस बेताबी में कभी वे दिन और वे पल आँखों से नहीं गुज़रते जब पापा को घोड़ा बना कर पीठ पर सवारी किया करते थे, या उनकी आइसक्रीम की माँग को पूरा करने दो किलोमीटर तक की यात्रा बगैर किसी आलस्य के खुशी-खुशी करते थे

उनके पापा। अच्छी यादों की फेहरिस्त में एक भी बुरी याद ने क़दम रखा तो मानों ज़हर की एक बूँद ने अपना काम कर दिखाया। सारी अच्छाइयों की पोटली बुराइयों के गट्ठर में बदल गयी। पापा, पापा नहीं रहे थे, वह तो एक शराबी था जो बस चिल्लाता रहता था, अनर्गल और असंगत।

दो साल पहले तक सब कुछ पटरी पर था। शराब की एक बूँद भी नहीं गयी थी सुहास के हलक में। वह एक बहुत ही ज़िम्मेदार पति और स्नेहिल पिता था। सबको प्यार से जगाता था, सुबह की चाय बनाता था, बच्चों के साथ खेलता था और काम पर चला जाता था। बच्चों के जन्मदिन मनाने के लिए खूब तैयारी करता था, पूरा कमरा गुब्बारों से भर देता था। ऐसे ख़ास दिनों में सबको विस्मित करने के नये-नये तरीके ढूँढता था। घर में किसी चीज़ की कमी नहीं होने देता था। जहाँ सिर्फ एक की ज़रूरत होती, वह डेढ़ लगाता, चाहे समय हो या पैसा, स्नेह हो या प्यार।

उसकी इसी बात के कायल थे सब। रिश्तेदार भी रश्क़ करते ''कितना संस्कारी आदमी है!''

''काश, हर घर में ऐसे सुहास भरे पड़े हों।''

प्यारे बच्चे, सुंदर पत्नी और पैसा, सब मिलकर एक परिपूर्ण, ख़ुशहाल परिवार की तरह लगता था। क्या नहीं था घर में! बड़ा घर, पैसा, गाड़ियाँ, नौकर-चाकर सब कुछ। भरा-पूरा परिवार था, लोगों से भी और चीज़ों से भी। दो बच्चे, पत्नी और उनके कई रिश्तेदार।

आना-जाना, खाना-पीना सब लगा रहता था। धीरे-धीरे एक साइलेंट किलर घर में प्रवेश करता गया जिसका प्रभाव बढ़ता रहा। सुहास एक ओर, शेष सारे दूसरी ओर होते गए। सुहास का पत्ता कटता गया, इतनी धीमी गति से कि पता भी न चला और वह सबसे एक-एक क़दम दूर होता रहा। ठीक वैसे ही जैसे एक बच्चा अपने पैरों पर खड़ा होता है, चलता है, चलते-चलते दूर तक जाने लगता है, धीरे-धीरे अपने माता-पिता की पहुँच से दूर हो जाता है। वैसा ही कुछ हुआ सुहास के इस संसार में।

उसे लगने लगा वह घर के लिए एक सामान भर रह गया है। ऐसा सामान जो अब किसी के लिए उपयोगी नहीं है। जब ऐसा कुछ महसूस हुआ तो वह अधिक अच्छा बनने का प्रयास करने लगा, बगैर जंग लगे भी अपने ऊपर लगी जंग को मिटाने लगा। वहीं अपनी डेढ़ अकल भी लगायी और इस सोच के कारण और अधिक ध्यान रखने लगा सबका। बहुत मीठा बोलता और बहुत सावधानी से बोलता। पता भी नहीं चलता कि सुहास की ख़ुद की आवाज़ है या किसी और की।

खुसुर-पुसुर होती, ''पापा इतने एक्स्ट्रा नाइस क्यों हैं?''

''न जाने कौन से गुल खिलाए हैं अब, कुछ तो ऐसा किया है जिसे छिपाने के लिए इतनी मीठी जबान बोल रहे हैं।''

सुहास का बहुत सारा प्यार जताना बच्चों को अपनी ज़िंदगी में दखलंदाज़ी लगा। वे बात-बात पर भड़कने लगे। प्यार से पूछी गयी बातें जो सिर्फ संवाद के लिए होती थीं, उनकी अपने लिए जासूसी लगने लगी। वे रास्ता काटने लगे। जहाँ सुहास को सामने देखते अपनी राह बदल देते ताकि कोई सवाल उनका पीछा न करे। काली बिल्ली रास्ता काटे तो कोई बात नहीं पर पापा उनका रास्ता नहीं काटे इस बात का ख़्याल रखा जाने लगा।

पत्नी को लगा ''कोईऔर है जिसे छुपाने के लिए बिन मौसम प्यार की बरसात होती रहती है। इतना प्यार क्यों जताने लगे हैं। इसके पीछे कोई न कोई राज़ ज़रूर है।''

यह उन्हीं दिनों की बात है जब सुहास की पत्नी ने अपने पिता के ऑफिस में काम करना शुरू किया था। यह कहकर कि ''अब बच्चे बड़े हो गए हैं, घर में रहने की ज़रूरत नहीं है। दिन भर समय काटना मुश्किल हो जाता है।''

''मतलब?''

''मैं कल से पापा की कंपनी ज्वाइन कर रही हूँ।''

''लेकिन वहाँ क्या करोगी, तुम्हारे पास तो ऐसी कोई डिग्री नहीं है।''

''जन्मजात डिग्री है मैनेजमेंट की, वही करूँगी।'' और वह जाने लगी ऑफिस, अपने पापा की कंपनी में मदद करने। पहले तो नौ से पाँच होता था उसका आना-जाना। उसके बाद शाम छः, फिर सात और आठ तक बजने लगे। पूछने पर हर बार अलग जवाब मिलता जिसका कोई ठोर-ठिकाना नज़र नहीं आता। सुहास के दिमाग़ में एक बात घर करने लगी- 'कहीं न कहीं कोई न कोई चक्कर चल रहा है। किसी से अफेयर ही होगा वरना इतनी अच्छी तरह तैयार होकर पहले तो कभी कहीं नहीं जाती थी।'

कौन है यह आदमी, पता लगाना ही होगा। लगता है कोई नौजवान है, अपने बाप के पैसों की ताकत से फाँसा होगा। एक बार दिख जाए बस फिर तो बात करने लिए मेरे पास सबूत होगा।

यह शक की बीमारी ऐसी लगी कि लगातार बढ़ती रही। इसका को० इलाज भी नहीं था। यह तो एक ऐसा कीड़ा था, जिसका काटा कभी ठीक ही नहीं हो पाता, लाख कोशिश कर लो। इस शक के फोड़े में दैनंदिन मवाद बढ़ता ही रहा।

उसका पता लगाने के लिए कई बार जासूसी की सुहास ने और इस कवायद को करते वह सब किया जो उसकी डेढ़ अकल ने करने को कहा। पत्नी का पीछा भी किया, फोटो भी लिए और रंगे हाथों पकड़ा भी गया। उस अनाड़ीपन की वजह से उसे बहुत झेलना पड़ा। पत्नी क्या और बच्चे क्या, सबने एक-एक करके आड़े हाथों लिया उसे, ख़ूब फटकारा, ख़ूब चेतावनियाँ दीं। अब सबने सुहास से बात करनी ही बंद कर दी। इस जासूसी का पूरा ब्यौरा अपने परिणाम सामने ले आया। इस कदर ज़िल्लत सहनी पड़ी कि मौन ही एक उपाय नज़र आया।

अब रिश्तों के जो हल्के-महीन धागे बचे थे वे भी टूट गए थे। संदेहों के घेरों में हर रिश्ते का दम घुट गया था। न बच्चे समय पर घर आते, न उनकी माँ। जब भी घर आते तो अपने-अपने कमरों में कैद हो जाते। सुहास अपने अकेलेपन का आदी नहीं था, बात भी करता तो किससे, गुस्सा भी आता तो लड़ता किससे! सबकी अपनी दुनिया बन गयी थी। अब पैसों के लिए भी कोई उसका मुँह नहीं देखता क्योंकि बच्चे पढ़ाई के साथ पार्ट टाइम नौकरी करने लगे थे। पत्नी को अच्छी तनख़्वाह मिल रही थी। बाज़ार से कुछ लाने के लिए नौकर रख लिए गए थे घर में। गाड़ी चलाने वाले भी थे। सारे, बाहर के काम हों या अंदर के कहीं भी उसकी उपस्थिति का कोई स्थान नहीं रहा था। पत्नी के तौर तरीकों में अच्छी खासी तनख़्वाह मिलने की ठसक आ गयी थी।

यूँ धीरे-धीरे सुहास परिवार का एक अदृश्य सदस्य हो गया जिसे सब देख कर अनदेखा कर देते थे। ठीक वैसे ही जैसे कोई काम की चीज़ बेकार की चीज़ हो जाए। वह एक ऐसा सामान हो गया था जिसकी जरूरत अब किसी को नहीं थी। चुनाव के बाद हारे हुए नेताजी का पोस्टर जैसे धूल और हवा में फड़फड़ाता रहता है ठीक वैसे ही अकेला पड़ने के इस समय में उसका मन फड़फड़ाता। कुछ ढूँढता, कुछ खोजता, कुछ पाता।

लगातार किसी को अपना बनाने की इस कोशिश में पाया एक साथी, शराब के रूप में। आसानी से उसके साथ रहने को तैयार। कोई शिकायत नहीं कोई शिकवा भी नहीं। थोड़ी-थोड़ी करके शराब रोज़ बढ़ने लगी तो थोड़ा-थोड़ा अकेलापन कम होने लगा। अब अपनी साथी शराब के प्यार में डूबा सुहास उसके शिकंजे में मदमस्त रहता। अकेलेपन का वह उलझा गणित का सवाल, हल होता उन बड़ी-बड़ी गालियों में, जो अनवरत निकलती रहतीं। जिसमें शून्य भी बढ़ते तो वजन बढ़ा देते। मस्तिष्क की चेतना को अलग खुराक मिलने लगी। एक संतुष्टि के रूप में- 'मेरे साथ ये अन्याय करेंगे तो इन्हें गालियाँ ही मिलेंगी।'

सिर्फ शराब नहीं थी, अंदर की खुंदक थी। घर के

मुखिया को पद पर रहते हुए ही मुखियागिरी से मुक्त कर दिया गया हो, वह झुंझलाहट थी। कुछ दिन शिकायतें-शिकवों में निकले, कुछ दिन समझने-समझाने में। किसी ओर से कोई अपनापन नहीं मिला तो उसने शराब में स्थायी साथी को खोज लिया। वह तरन्नुम, वह नशा स्वयं को सुख देने लगा। उस बोतल में दुनिया के सारे सुख विद्यमान थे तो अंदर के बढ़ते ग़म की दवा भी थी, जिसकी बेहद ज़रूरत थी। शराब शरीर के अंदर रचती-बसती रही और अपने मित्रों को आमंत्रित करती रही। वे आते, महफ़िल जमती, पैग पर पैग होते, ठहाके पर ठहाके लगते। किसी उन्माद की तरह, बहती हुई रात निकल जाती। शराबी के पीछे का सच यही था कि वह बस शराब पीकर ही खुश होता था। शराब अकेली नहीं थी, उसके कई साथी थे जो इसमें उसका साथ देते थे।

चुपचाप मृत्यु के दरवाज़े खटखटाता सुहास का शरीर उसके इस नये साथी के आधिपत्य में था जो परत-दर-परत अपने बढ़ते प्रभावों से तन-मन को नियंत्रित करता रहा। खाँसी चलती तो बंद ही नहीं होती, सोने के लिए बढ़ते पैग और बढ़ते रहे। फेफड़ों में ख़राबी होने लगी, पानी भरने लगा, साँस और लीवर की तकलीफ़ें सामने आने लगीं। इतनी सारी बीमारियाँ और अकेलापन दोनों ने मिलकर अंदर कोलाहल शुरू किया। कब तक अंदर रहता यह कोलाहल और लड़ता रहता खुद से? गालियों की बौछारों के साथ बाहर आने लगा। वे शब्द जो पत्नी को किसी की रखैल तक कह डालते, वे शब्द जो बच्चों को पिता पर हाथ उठाने के लिए बाध्य करते और वे शब्द जो बाहर आते ही खुद सुहास को दहाड़े मार कर रुलाते। अंदर की सारी भड़ास शब्दों के जरिए बाहर निकलती तो निकलते-निकलते इतनी कड़वी हो जाती कि सुनने वाला अपने कानों को सज़ा दे दे- ''ऐसा सुनते ही क्यों हो?''

वही हुआ यह सब सुनना बंद करने के लिए सुहास से दूरी रखी जाने लगी। बच्चे और पत्नी दोनों इस सत्य को स्वीकार करने लगे, 'यह दारूकुटिया चिल्लाता रहता है। सुनो मत, कान बंद, आँखें बंद।' अब दीवारें थीं सुनाने के लिए और शराब थी सुलाने के लिए।

जीवन तो ऐसे भी घसीटता हुआ चलता रहता पर अब बड़ी परेशानी यह थी कि पैसे भी साथ छोड़ने लगे थे क्योंकि काम करना तो कई दिनों से बंद था। मन तो हज़ारों उलझनों में उलझा था, काम गया भाड़ में। उधार बढ़ने लगा। एक दिन ऐसा आया जब पैसों के अभाव में अकेलेपन के उस साथी ने भी साथ छोड़ दिया। जब शराब नहीं मिली तो अंदर का वैमनस्य बगावत पर उतर आया। शरीर तंत्र अपने पुर्जों को सम्हाल नहीं पाया। न नींद, न भूख, न प्यास के इस त्रास में बीमारियाँ हावी होने लगीं। या तो सुहास कमरे में पड़ा रहता या फिर उठने बैठने के लिए भी शरीर को लथेड़ना पड़ता। इसी अवस्था में एक दिन सीढ़ियों से जो गिरा तो फिर नहीं उठ पाया। एम्बुलेंस से अस्पताल भेज दिया गया। यह वह क्षण था जो कह रहा था 'मैं खुद को ख़त्म करने का निर्णय ले चुका हूँ। खुद के लिए इंसान कब तक जी सकता है भला?' और इतने प्रयासों के बाद आज जब साल भर की अस्पताली ज़िंदगी से मुक्ति मिली तब घर वालों ने राहत की साँस ली कि जान छूटी लाखों पाए।

दाह संस्कार की जल्दी थी सबको। बच्चों के अपने कमिटमेंट थे, पत्नी के अपने।

''जल्दी करो मम्मी! मुझे काम पर जाना है।''

''जो भी करना है फटाफट करो।'' प्रेम के बोए बीज नफ़रत उगाएँ तो बीज ख़राब थे, या मिट्टी? यह तय करना किसी उलझी पहेली को सुलझाने के बराबर था। ऐसी पहेली को उलझी रखने में ही सबकी भलाई थी। यहाँ किसी अर्थी को कंधा नहीं देना था, उन्हें तो बस शिकायतों का बोझ ढोना था। मौत को ढोती साँसें चलें या थमें, किसी चेतन-अचेतन मन को आंदोलित नहीं करतीं।

किसी को फ़र्क नहीं पड़ा सिवाय अस्पताल वालों के, जिन्हें बिना कुछ किए कमरे का किराया मिल रहा था। बिना दवाई दिए दवाइयों के पैसे मिल रहे थे। मरीज़ के

ऐसे घर वाले कभी-कभी ही मिलते थे जो बिल्कुल 'कुड़-कुड़' न करें और चुपचाप बिल के पेमेंट करते रहें। ज्यादातर मरीज़ों के घरवाले नर्सों और डॉक्टरों की नाक में दम कर देते थे। हर शाम फोन करके हालचाल पूछते। सिर्फ हालचाल ही नहीं पूछते बल्कि हर दवाई की, हर खाने की, हर गतिविधि पर नज़र रखते। डॉक्टरों से बहस करते। डॉक्टर के साथ अपनी बगैर डिग्री वाली डॉक्टरी चलाते, दवाइयों का लेखा-जोखा लेते, दवाई बदलने का सुझाव देते लेकिन इस मरीज के साथ ऐसी कोई पूछताछ नहीं थी। दवाई दी तो दी, नहीं दी तो कोई पूछने वाला नहीं था। रात की नर्स आयी तो सब चेक करके गयी, बेचारी की आँख लग गयी तो बस लग गयी, सुबह चेक कर लिया जाएगा। इतने अच्छे मरीज को अस्पताल से विदा करना भी एक बड़ा नुकसान था।

जब घरवालों ने उसकी साँसों के थमने की ख़बर सुनी तो एक राहत की साँस ली। एक लंबे समय से चले आ रहे क्लेश से मुक्ति मिली थी। जिस लाश पर आँसू न गिरे वह लाश भी भला लाश कैसे कही जा सकती है। जिसके जाने का दु:ख न घरवालों को हो, न किसी और को तो फिर आँसुओं को क्या पड़ी! वे भी बगैर कारण के किसी भी आँख से बाहर नहीं आए।

और सुहास का दाह संस्कार हो गया। यह जीवन की ऐसी विदाई थी जो एक जीवन की नहीं बल्कि एक मौत की विदाई का आभास दे रही थी, खामोशी से जीवन में प्रवेश करती उस ओढ़ी हुई मौत का।

घर वालों के लिये घर के फालतू कोने के दिन पूरे हो गए थे।

जब ऐसा हो

-अंजना छलोत्रे 'सवि'

जब से
दिलों में
गड़ गई हैं
छल-कपट की खूंटियाँ
होने लगी
अनगिनत मक्कारियाँ
लगा रहे खिलाड़ी
बेमोल बाजियाँ
अपनी ही परछाईं से
डरने लगी हैं तितलियाँ
जलाने लगी घरों को
झूठ की चिंगारियाँ
स्नेह की तो टूटने लगी हैं पसलियाँ
सभी रिश्तों पर
गिर रही हैं बिजलियाँ
जगह-जगह बिखरी पड़ी हैं
विश्वास की किर्चियाँ
सम्बन्धों की डोर
कोने में दुबकी
ले रही है सिसकियाँ
हाँ! यह सच है कि
अपने ही डुबो
रहे हैं
अपनी ही कश्तियाँ।

00000

कान्हाश्री फिलिंग सेन्टर
250/5 एन एच 59।,
इन्दौर नागपुर, नियर बाय टिमरनी
बहरागाँव त. रहटगाँव, जिला हरदा (म. प्र.)
पिन 461228

नींव

–डॉ. रंजना जायसवाल

कल ही लंदन से डॉक्टर के.के.अग्रवाल का फोन आया था। के.के.अग्रवाल मतलब पिता जी का कृष्णा ...पिता जी इसी नाम से तो पुकारते थे। कितना गर्व था पिता जी को अपने विद्यार्थियों पर। होना भी चाहिए था... उनके पढ़ाये विद्यार्थी देश–विदेश में नाम कमा रहे थे। ये पीढ़ी न जाने किस मिट्टी की बनी थी जिसने पिता जी की मार खा कर भी उनके मोह से छूट नहीं पाई थी। साल में दो–चार बार उनका पढ़ाया कोई न काई विद्यार्थी पिता जी से मिलने आता ही रहता था। सुधीर कितना खुश होता था, वो भी तो एक शिक्षक था पर क्या ये पीढ़ी भी अपने गुरुओं के लिए ऐसे ही भाव रखती है? एक शिक्षक के पढ़ाये बच्चे जीवन में न जाने कितनी उन्नति करते हैं पर शिक्षक तो सालों साल उसी पाठ्यक्रम के साथ जूझता रहता है। कुछ भी तो नहीं बदलता। दुनिया भले मंगल ग्रह पर पहुँच गई पर हम क से कौआ में ही अटक कर रह गये।

कोरोना ने शिक्षकों के लिए अजीब मुसीबत खड़ी कर रखी थी, तीन कमरों के छोटे से घर में पढ़ाना किले फतेह करने जैसा था। घर मे कर्फ्यू जैसी स्थिति बनी रहती थी, सुषमा को पहले ही हिदायत दे दी गई थी...जब तक वो पढ़ाता रहे तब तक चौके से खटर–पटर की आवाज न आये। वो बेचारी भी क्या करती, उसकी कक्षाएँ बारह बजे तक खत्म होतीं और पिता जी को साढ़े बारह बजे तक खाना खाने की आदत थी। ऊपर से मुँह जलता खाना उन्हें बिल्कुल भी पसन्द नहीं था। उसके कान मेरे कमरे की ओर ही लगे रहते हैं। जैसे ही मेरी आवाज आना बंद होती वो झट से कुकर चढ़ा देती। उसकी दुनिया वैसे भी चौके से शुरू होती थी और वहीं पर खत्म हो जाती थी। अब तो वह बेचारी बिल्कुल चौके में ही सिमट कर रह गई थी। बैठक में सुधीर, कमरे में बच्चे वह जाती भी तो कहाँ? कितना मुश्किल था इन दिनों। सुषमा अक्सर बच्चों की शिकायत लेकर बैठ जाती थी। जब देखो तब मोबाइल से ही जूझते रहते हैं और अब हम खुद ही बच्चों को चार –चार घण्टे जूझने के लिए छोड़ देते हैं।

जीवन कितना कठिन हो गया था अभिवावक फीस देने को तैयार नहीं थे, तनख्वाहें मिलतीं भी तो कैसे? ... विद्यालय के मालिक हर तरह से कोशिश करके देख चुके थे। कभी ऑनलाइन कक्षाओं से नाम हटा देने की धमकी तो कभी इम्तिहान में न बैठने देने का डर...पर नतीजा सिफर। अन्ततः फीस में कटौती भी कर दी, वो भी क्या करते। आखिर कितनों के घर के चूल्हे उनकी वजह से जलते थे। फीस की तरह तनख्वाह भी कट कर मिलने लगी। विज्ञान की अध्यापिका का सात माह का गर्भ था, पति प्राइवेट कंपनी में काम करते थे, लॉक डाउन की वजह से नौकरी भी जाती रही। बेचारी इस अवस्था में भी जैसे–तैसे करके पढ़ा रही थी। कोरोना ने कुछ किया हो या न किया हो पर हम सबको हाईटेक जरूर कर दिया था। शुरू–शुरू में एक–दूसरे से पूछने में संकोच लगता था पर सब जानते थे सबके हालात एक जैसे ही थे। वक्त के साथ सुधीर भी हाईटेक हो गया था पर बच्चे उससे कहीं ज्यादा हाईटेक थे, उनके चेहरे आधार कार्ड के फोटो की तरह छोटे–छोटे दिखाई देते थे। ऊपर से पीठ घुमाते ही कोई गन्दा सा फ़िकरा कान में गरम तेल की तरह पड़ता तो शरीर सिहर जाता। ये कौन से विद्यार्थी थे, हमने तो इन्हें कभी ऐसी शिक्षा नहीं दी, फिर... ? पिता जी की बेहया की छड़ी आज भी याद आ जाती है।

''सड़ाक–सड़ाक।'' पिता जी हमेशा कहते थे.. ''बिना मार खाये विद्या नहीं आती।'' पर इन बच्चों को तो हाथ लगाने को भी कोर्ट ने मनाही की थी। पिछले साल की ही बात है ...होमवर्क पूरा न होने पर शुभम् सर ने अपनी क्लास के बच्चे को क्लास से बाहर कर दिया था, वह

बच्चा छुट्टी के बाद अपने गैंग के साथ उन्हें धमकाने पहुँच गया। बेचारे शुभम् सर मुँह छिपाते फिरते रहे जैसे उन्होंने ही कोई अपराध कर दिया हो।

उम्र के साथ पिता जी को कम सुनाई देने लगा था ...वे टी. वी. की आवाज़ को तेज करके सुनते थे। कितनी बार कहा कि कान वाली मशीन लगा लिया करें पर पिता जी तो बस... ?

पिछली बार डॉक्टर अग्रवाल जब भारत आये थे तब उन्होंने पिता जी को उपहार स्वरूप वह मशीन दी थी पर पिता जी? ...उनका पढ़ाया हुआ छात्र जब भूला-भटका उनसे मिलने आ जाता तो उस मशीन की ढूंढाई शुरू हो जाती। पिता जी कोई न कोई किस्सा छेड़ देते...आज भी याद है उसे ...पिता जी का पढ़ाया एक छात्र सचिवालय में प्रथम श्रेणी का अधिकारी हो गया था। माता-पिता उन्हें छोड़कर कब का स्वर्ग को कूच कर गए थे, बेचारे थोड़ा भावुक और संस्कारी किस्म के व्यक्ति थे। लाव-लश्कर के साथ पहुँच गये पिता जी से आशीर्वाद लेने ...हाथ मे मिठाई का डिब्बा लिए अर्दली उनके पीछे-पीछे चल रहा था। वो बेचारे जैसे ही पिता जी के पैरों की तरफ झुके पिता जी की आँखों से गंगा-जमुना बह निकली। सुधीर पिता जी का यह रूप देख आश्चर्य में थे, यह कैसा रिश्ता था। दुनिया में एक माता-पिता ही हैं जो अपने बच्चों को अपने से ज्यादा उन्नति करते देखना चाहते हैं पर वे तो खून के रिश्ते हैं। खून का रिश्ता तो भाई-बहन के साथ भी होता है। एक थाली में खाना-खाने वाले रिश्ते कब प्रतिद्वंद्वी बन जाते है पता भी नहीं चलता।

''सुधीर! मैं जानता था यह बड़ा होकर जरूर कुछ करेगा। जानते हो हाई स्कूल की परीक्षा के वक्त इसको बड़ी माता निकल आई थी, न जाने कहाँ गलती हो गई। शरीर बुखार से तप रहा था...यह बेहोशी में भी अपना पाठ दोहरा रहा था। तब इसकी माता जी ने बुलावा भेजा था, मुझे देखकर उस बुखार में वह अपने बोर्ड के इम्तिहान के लिए फफक कर रो पड़ा था। तब मैंने ही कहा था अभी तो न जाने कितने इम्तिहान से गुजरना है तुम्हें और तुम एक इम्तिहान से घबरा गये और देखो वो दिन है और आज का दिन।"

सुधीर को कभी-कभी अपने पिता पर कितना गर्व होता था। क्या उसके विद्यार्थी भी उसे ऐसा गर्व करने का मौका देंगे? ?

टी वी चैनल और अखबार प्रधानमंत्री के फैसले से रंगे हुए थे। हर तरफ एक ही समाचार कोरोना के कारण बोर्ड के इम्तिहान नहीं होंगे। एक अजीब सा माहौल था, कुछ के हिसाब से बहुत सही निर्णय था। बच्चों के जीवन से बढ़कर भी कुछ हो सकता है?

स्कूल के सभी बच्चे बहुत खुश थे, क्योंकि इम्तिहान रदद् हो गए थे, माता-पिता और रिश्तेदार भी खुश थे पर सुधीर मायूस था क्योंकि वह खोखली नींव से भविष्य का विनाश होते देख रहा था। क्या सचमुच वह भी अपने पिताजी की तरह अपने विद्यार्थियों पर ऐसे ही गर्व कर पायेगा। यह एक सवाल है जिसका जवाब शायद हमें कभी न मिल पायगा।

लाल बाग कॉलोनी
छोटी बसही
मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश
पिन कोड 231001
मोबाइल न-9415479796
Email address&
ranjana1mzp@gmail-com

अजूबा

–सुरेश बाबू मिश्रा

जसप्रीत सिंह कल ही ट्रांसफर होकर महानगर की कोतवाली में आए थे। वे हेड मुहर्रर थे। आज वे जैसे ही कोतवाली आए उन्हें साहब ने अपने केबिन में बुला लिया।

जसप्रीत सिंह ने केबिन में पहुंचकर साहब को सैल्यूट किया और आदेश की प्रतीक्षा में खड़े हो गए। साहब ने उनसे बैठने का इशारा किया और बोले, ''तुम्हारे पिछले रिकार्ड को देखते हुए तुम्हें कलेक्शन की सीट दी गई है।

''जी, सर!'' जसप्रीत सिंह ने कहा। साहब ने अपने पास बैठे अपने असिस्टेंट अफसर से कहा-''सिंह साहब इन्हें इनका काम समझा दो।''

''जी, सर।'' सिंह साहब बोले। फिर उन्होंने जसप्रीत सिंह को सम्बोधित करते हुए कहा-''देखो इस सीट का काम बहुत महत्वपूर्ण है। कोतवाली के दोनों ओर फुटपाथ पर लगभग एक हजार फड़ और दुकानें लगती हैं। कोतवाली में तैनात चार सिपाही रोज इन दुकानों से वसूली करके लाते हैं। यह पैसा इसी सीट पर जमा होता है। फिर यह पैसा महीने के अन्त में नीचे से ऊपर तक बंटता है। किस अफसर को कितने प्रतिशत पैसा भेजना है, इसका विवरण इस फाइल में है। इसे ध्यान से पढ़ लेना।'' यह कहकर उन्होंने जसप्रीत को एक फाइल पकड़ा दी।

जसप्रीत ने अनमने भाव से फाइल ले ली। और उसे उलटने-पलटने लगा।

वहाँ बैठे एक दूसरे साहब बोले, ''बड़े लकी हो जसप्रीत सिंह। आते ही मलाईदार सीट मिल गई। तुम्हारी तो चाँदी ही चाँदी है।''

बड़े साहब उसे हिदायत देते हुए बोले, ''देखो जसप्रीत, बेईमानी का यह पैसा बड़ी ईमानदारी से बंटता है। ध्यान रखना इसमें किसी तरह की कोई गड़बड़ी न हो।''

ऑफिस के सब लोग कनखियों से जसप्रीत को देख थे रहे और उसके भाग्य से ईर्ष्या कर रहे थे।

जसप्रीति सिंह बोला, ''सर आप नाराज न हों तो एक निवेदन करूँ?''

''हाँ-हाँ, कहो।'' साहब बोले। ''सर, यह सीट आप किसी और को दे दीजिए और मुझे कोई ऐसी सीट दे दें जिसमें ऊपरी पैसा इन्वाल्व न हो।''

''क्यों?'' साहब ने हैरानी से पूछा।

''सर! मैं अपनी ड्यूटी बड़ी ईमानदारी से करता हूँ, और वेतन के अतिरिक्त किसी पैसे को हाथ तक नहीं लगाता हूँ।

''क्या?'' सभी का मुँह आश्चर्य से खुले का खुला रह गया था। उन्हें ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने को० अजूबा देख लिया हो।

ए-373/3, राजेन्द्र नगर,
बरेली-243122 (उ.प्र.)
मोबाइल नं. 9411422735
E-mail %
sureshbabubareilly@gmail-com

आखिर कब तक ?.. –अमृता पांडे

स्वच्छता अभियान के तहत कूड़ा एकत्र करने के लिए घर घर आने वाली गाड़ी में 'स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने' गीत बज रहा था और गाड़ी उसके द्वार पर खड़ी थी पर वह अनमनस्क सी कहीं खोईव्हुई थी। अखबार में दिखाए गए उस मासूम बच्चे का चेहरा बार-बार उसकी आँखों को भिगो रहा था जो इस बेरहम दुनिया को देखे बगैर ही अलविदा कह गया था।

''दीदी! ज़ल्दी कूड़ा डालिए।''

अचानक उसकी तंद्रा टूटी। गैलरी में रखी हुई कूड़े की बाल्टी उठाकर लायी और गाड़ी के पिछले हिस्से में कूड़े के साथ बैठे हुए उस छोटे लड़के को पकड़ा दी। लड़के ने डस्टबिन खाली करके उसे वापस कर दिया और उस कूड़े को अलग-अलग बैगों में भरने लगा। अपने ही घर के जिस कूड़े से हमें बदबू और घिन आती है, उसे वह छोटा बच्चा बिना दस्ताने पहने हाथों से अलग अलग कर रहा था। इसमें सब्जी फलों के छिलकों से लेकर अन्य कई तरह के अपशिष्ट पदार्थ थे।

वह सोच रही थी, इसी समाज में इन लोगों के साथ ऐसा बर्ताव ? मटका छू लेना या प्यासा होने पर पानी पी लेना क्या इतना बड़ा अपराध था कि किसी बच्चे की जान ही ले ली जाए ?'' वह सिहर गयी।

कल हम स्वतंत्रता की पिछत्तरवीं वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं, देश में जगह-जगह अमृत महोत्सव के कार्यक्रम चल रहे हैं। स्वच्छता अभियान भी जोरों पर है पर मन की स्वच्छता. ..... ?''

वह डस्टबिन किनारे रखकर बेमन से समाचार पत्र में आज़ादी के बाद के वर्षों की उपलब्धियों पर नजर डालने लगी जो उसे बेमानी तो लग रही थीं पर अगले दिन आयोजित होने वाले एक सार्वजनिक कार्यक्रम के भाषण में दोहरानी ही थीं।

जे.के.पुरम ० 21
छोटी मुखानी, हल्द्वानी-पिन 263139
जिला नैनीताल (उत्तराखण्ड)
मो.7983930054

कोल्हू का बैल –बबिता कंसल

''शारदा कहाँ हो .. ? अरे. ..काम कर रही हो, घर में इतने नौकर चाकर होते हुए भी, जब देखो रसोई में ही घुसी रहती हो।''

''अभी आ रही हूँ।'' शारदा ने मोहन की आवाज सुन कर कहा, ''अब बताइये क्यो पुकार रहे हो.. ?''

''तुम क्या कर रही थीं ?''

''रसोईये के साथ आप के लिए दोपहर का खाना बनवा रही थी।''

''उस को नहीं आता खाना बनाना जो सारे दिन कोल्हू का बैल बनी रहती हो? इन नौकरों का क्या फायदा।''

''आप भी न! देखिए, आप हर बात में बेमतलब टांग मत अड़ाइए।'' फिर वह रुआँसे स्वर में बोली, ''जब से वो सामने वाले भाई सहाब को हार्ट अटैक आया है न! और डाक्टर ने कोलस्ट्रोल के कारण उन्हें परहेज बताया है तब से मुझे बहुत डर लगने लगा है। रसोईये कितना तेल वाला खाना बनाते हैं, थोड़ा-बहुत ध्यान रखने से यह नौबत नहीं आती। आप का भी तो बी.पी. बढ़ा रहता है।

मैं तो यही सोचती हूँ, कि सबका स्वस्थ्य ठीक रहे, घर में पौष्टिक खाना बने। थोड़े दिन रसोईयों को ट्रेनिंग तो देनी ही पड़ेगी न। इससे कोल्हू का बैल नहीं बन जाऊँगी।''

द्वारा श्री पंकज कंसल,
एस. 469/10, चतुर्थ तल, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

उग आयी नागफनी!

========== –धनंजय सिंह

हमने कलमें गुलाब की रोपी थीं,
पर गमलों में उग आयी नागफनी!
जीवन ऐसे मोड़ों तक आ पहुँचा
आ जहाँ हृदय को सपने छोड़ गये
मरघट की सूनी पगडंडी तक ज्यों
कंधा दे शव को अपने छोड़ गये
सावन-भादों के मेघों के जैसा
मन भर-भर आया, पीड़ा हुई घनी!

आशा के सुमन महक तो जाते पर
मुसकानों वाले भ्रम ने मार दिया
पतझर को तो बदनामी व्यर्थ मिली
हमको मादक मौसम ने मार दिया
सौगंधों में अनुबंध रहे बंधते
पर मन में कोई चुभती रही अनी!

रंगों-गंधों में रहा नहाता पर
अपनापन इस पर भी मजबूरी है
कीर्तन में चाहे जितना चिल्लाएँ
मन कीर्व्ईश्वर से फिर भी दूरी है
पूजन से तो इनकार नहीं था पर
अपने घर की मन्दिर से नहीं बनी!

समझौतों के गुब्बारे बहुत उड़े
उड़ते ही सबकी डोरी छूट गयी
विश्वास किसे क्या कहकर बहलाते
जब नींद लोरियाँ सुनकर टूट गयी
संबंधों से हम जुड़े रहे यों ही
ज्यों जुडी वृक्ष से हो टूटी टहनी!

–1084 विवेकानन्द नगर,
गाज़ियाबाद–201002

दीप लघु-सा जल रहा हूँ

–डॉ ब्रजेश मिश्र

तमनिशा में टिमटिमाते,
दीप लघु-सा जल रहा हूँ।

जूझता निष्ठुर पवन से,
आँधियों-से अरि सघन से।
आस चिर विश्वास थिर ले,
लड़ रहा हूँ कुहर घन से।
हूँ अकेला इस समर में,
और निज कर्तव्य के हित,
पीर ही में पल रहा हूँ।
दीप लघु-सा जल रहा हूँ।

साँझ को दिनमान ढलता,
भोर होते चाँद छुपता।
जन्म के उपरांत सब के,
काल इक दिन प्राण हरता।
बाद पर जीवन मरण के,
जानकर यह चिर सुनिश्चित,
धूम बनता बल रहा हूँ।
दीप लघु -सा जल रहा हूँ।

ज्ञात मुझको अंत अपना,
प्रात होते सत्व तजना।
किन्तु निशि भर जगत-हित में,
गात दह आलोक झरना।
मान अपनी नियति, अरु है-
श्रेय निज उत्सर्ग परहित,
मृत्यु-पथ पर चल रहा हूँ।
दीप लघु सा जल रहा हूँ।

मिश्रा नर्सिंग होम, सिद्धार्थ कालोनी,
आर्य समाज रोड, मुजफ्फ़र नगर (उ.प्र.)

मैं समय हूँ

–व्यग्र पाण्डे

मैं समय हूँ
समझा तू ने ...
गोदी में, मैं कभी खेलता
लाठी पकड़ चलाता कभी मैं
कभी दादा बन जाता हूं तो,
पोता भी बन जाता कभी मैं
आज नवीन कल होते जूने
मैं समय हूं , समझा तू ने...
जिम्मेदारी का वाहक बनकर
काम तुझी से करवाता हूं
कैसे-कैसे खेल खिलाता
कभी हँसा कभी रुलवाता हूं
दो के चार होते हैं दूने
मैं समय हूं , समझा तू ने...
मैं बदलता रहता हूं
ये रही सदा से मेरी फितरत
कोई मुझको काल समझता
कोई समझे मुझको कुदरत
कुछ जीते कुछ आते छू ने
मैं समय हूं, समझा तू ने...
मैं सुधरा तो सबकुछ सुधरा
मैं बिगड़ा तो मिले विफलता
मेरे संग चला जो कोउ,
तय है उसको मिले सफलता
स्वयं भुने कुछ मैंने भूने
मैं समय हूं , समझा तू ने ...
मैं भूत हूं वर्तमान हूं
मैं ही भविष्य में मिलूंगा तुझको
आना जाना रहेगा तेरा,
हर युग में पायेगा मुझको
ये चौबारे कभी ना सूने
मैं समय हूं, समझा तू ने ...

कर्मचारी कालोनी,
गंगापुर सिटी, स.मा. (राज.) 322201
मोबा.नं.- 9549165579
ई-मेल:vishwambharvyagra@gmail.com

आज़ादी

–सुब्रत दे

आजादी,
कैसी आज़ादी?
या ज़हर भरी एक मुठ्ठी
बरबादी ?
खून से सने खंजरों को
अपने भाई की पीठ से
निकाल लेने के बाद
बहन, बेटी या बहू की
चिता की लकड़ियों को
कमजोर कंधे पर लादने के बाद
खून-पसीने को मिलों,
खेतों, खलिहानों में
बंद कर बेचने के बाद
नौकरी के पीछे भूखा, नंगा, प्यासा
टूटी चप्पल और भी घिसाने के बाद,
घोटालों में देश को
तरबतर करने के बाद
घिनौने खिलोने
बच्चों के हाथ थमा देने के बाद
भ्रष्टाचार की फाईलों में
सच्चा, इमानदारी, इंन्सानियत आदि
न जाने और किन-किन का गला
दबा देने के बाद
और क्या बचा इस आज़ादी में?
यानी एक मुठ्ठी बरवादी में??

संपादक
हिन्दी-ज्योति,
सम्बलपुर, उड़ीसा, पिन--768001
मो.8457032905

समुद्र और रेत -आकाश मिश्रा

समुद्र ने रेती को अपना समझा
हर घड़ी हर पहर
अपनाकर बालु कणों को
उसकी हर भूल पर भी
उसे न कुछ कहना अच्छा समझा।

तूफान देख, रेत को लालच आ गया
आकाश में उड़ जाने की
मदहोशी छा गई
परन्तु
ले जाकर तूफान ने
पटक दिया रेगिस्तान में
तपने को छोड़ दिया।
बीहड़ मौत की खान में।

रेत ने तब सोचा,
कि इससे तो
समुद्र ही अच्छा था
कुछ भी न कहता, गम्भीर
वह सच्चा था।
मचलते हुए धूप में, उसे
सिन्धु की याद सताने लगी
न चाहते हुए स्मृतियाँ मन में
आने और जाने लगी।

उसे याद आया
थोड़ी सी धूप लगने पर
सागर का आकर उससे मिलना
तपन को शान्त करने हेतु
पानी से सराबोर करना
साथ ले जाना अतल गहराई में
बैठ जाना जीवन्त खाई में
घंटों भर साथ रहना और कहना
सदैव रहेंगे एक-दूसरे की परछाई में।

समुद्र वह अभागा
जिसने पलटे कितनों के भाग्य
डूबते हुए लोगों को भी दिया
किनारे का सौभाग्य
आज वह भी अपनी
बदकिस्मती पर पछता रहा है
पत्थर से लहरों को मार-मार
अपना दु:ख छिपा रहा है।
ऐसे ही तूफानों के कारण
हर किसी ने, कुछ न कुछ खोया है।

एक ओर रेत कर रही रुदन
तो दूसरी ओर,
समुद्र भी रोया है।
तब उसने जाना
उसने क्या खोया है।
हाँ, परन्तु!
दुनिया ऐसे ही चलती है
मुट्ठी को जितना
जोर से जकड़ो
रेत उतना फिसलती है।

स्नातकोत्तर (कलकत्ता विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग)
72. कैलाश दास रोड, पोस्ट: गरीफा- उत्तर 24 परगना, पिन: 743166, पश्चिम बंगाल
ई मेल: mishraakash255@gmail.com

सम्पादक की कलम से:- एक ही बहर, काफ़िया एवं रदीफ़ पर 8 शायरों के कलाम।
इस बार तरह मिस्रा के आधार पर ग़ज़लें रखी गई हैं। हो सकता है यह नया प्रयोग आपको पसंद आए।

धर्मराज देशराज

पहले पत्थर सा यारब जिगर दीजिए
बाद में ग़म कोई कर पुरअसर दीजिए।

अपने रब से यही मांगते हैं दुआ
मुस्कुराते रहें वो हुनर दीजिए।

मेरे दातार इतना तो करिए करम
यार देना है तो मोतवर दीजिए।

मेरी मंज़िल कहाँ कुछ ख़बर ही नहीं
मेरे रब कोई तो राहबर दीजिए।

रब के बदले उन्हें रोज देखा करूँ
ख्वाब ऐसे मुझे रात भर दीजिए।

जाने वालो वहाँ गर मिले मेरी माँ
मेरे ग़म की न उसको ख़बर दीजिए।

याद करता रहूँ न भुलाऊँ 'धरम'
मुझको या रब वो शामो-सहर दीजिए।

स्टेशन रोड, सीहोर (म.प्र.)-466001
मो. 9977993786

कमल किशोर दुब 'कमल'

जानकारी सही बा-असर दीजिए।
लाज़िमी है सदा सच ख़बर दीजिए।।

मत मेहर कीजिए, मत गुहर दीजिए।
प्यार अनमोल है सर-बसर दीजिए।।

आज सबसे ज़रूरी दुआ हो गई,
दोस्तो अब दुआ बे-कसर दीजिए।

ज़र-ज़मीं की बहुत चाहतें बढ़ गईं,
जो मुनासिब वही मुख़्तसर दीजिए।

ज़िन्दगी में कठिन राह चलना पड़े,
ख़ुशनुमा मंज़िलों का सफ़र दीजिए।

क़ामयाबी मिले ये ज़रूरी नहीं,
कोशिशों के लिए तो डगर दीजिए।

ये 'कमल' ज़ीस्त में कर्म अच्छे करे,
पार्थ-सा कृष्ण मुझको हुनर दीजिए।

'कलश', सी-114, विद्यानगर, होशंगाबाद रोड,
भोपाल (म.प्र.) मो. -8823857956
मेल:- poetkamal58@gmail-com

ब्रजेश त्रिवेदी

छंद में गीत में भाव भर दीजिए
सृष्टि को प्रेम का मातु वर दीजिए

झूठ वालों के पर अब क़तर दीजिए
सत्य वालों लम्बी उमर दीजिए

सत्य के गेह हों द्वार पर नेह हो
माँ रहे सँग ऐसा नगर दीजिए

माँ हुई दूर जिनसे, वो फिर देख लें
राम बच्चों को ऐसी नज़र दीजिए

लोग तपते रहे धूप में उम भर
छाँव में रह सकें इनको घर दीजिए

-सुपुत्र श्री दामोदर प्रसाद त्रिवेदी
मु. पो. मोहगाँव (बागरा तवा) तह.बाबई, माखन नगर, जिला नर्मदापुरम-461111 (म.प्र.)
मो.9827495675

हीरालाल यादव 'हीरा'

दिल की दौलत मेरे नाम कर दीजिए
खाली दामन है, खुशियों से भर दीजिए

आपने दिल में रक्खी हैं बरसों से जो
उन दबी भावनाओं को स्वर दीजिए

दूर करके उदासी की ये तीरगी
आस की ज़िन्दगी को सहर दीजिए

आजकल की सियासत का ये हाल है
अपना इलज़ाम औरों पे धर दीजिए

जिसके दम पे बसर हो सके ज़िन्दगी
हर किसी को ख़ुदा वो हुनर दीजिए

उम्रभर फिर निभाने का दम भी रखें
दिल जहाँ में किसी को अगर दीजिए

मुझसे होगा नहीं माँ का सौदा कभी
काट मेरा भले आप सर दीजिए

रूम नंबर-7, रामप्रसाद सिंह चाल,
गुरु प्रसाद वेलफेयर सोसाइटी, शिवाजी नगर, क़ुरार विलेज,
मालाड पूर्व, मुम्बई-400097

नज़र द्विवेदी

उसको जीने का मुझको हुनर दीजिए
बेहिचक ज़िन्दगी मुख़्तसर दीजिए

सिर्फ़ आँखें ही देना तो काफ़ी नहीं
झूठ सच देख ले वह नज़र दीजिए

हो के मायूस कोई भी लौटे नहीं
इन दुआओं में इतना असर दीजिए

बस निवाले ही बच्चों को मिलते रहें
कब कहा मैंने लाल-ओ-गुहर दीजिए

रास्तों से तो मुझको शिकायत नहीं
हमसफ़र बस मेरा मोतबर दीजिए

शब की दहलीज़ पर इक दिया भी नहीं
सुबह आने की अब तो ख़बर दीजिए

क्या दलीलें थीं सबने सुनी है 'नज़र'
फ़ैसला तो मगर सोच कर दीजिए

वरिष्ठ प्रबंधक पंजाब नेशनल बैंक कटरा बाज़ार,
जामा मस्जिद के पास, सागर, मध्य प्रदेश-470002

सतेन्द्र मोहन शर्मा

ओस के जैसी शीतल सहर दीजिए
हर घड़ी ताज़गी का असर दीजिए

लक्ष्य को साध कर मैं बढ़ाऊँ कदम
मंज़िलों से मिले वो डगर दीजिए

आदमी की ग़लत ठीक पहचान हो
पारखी जौहरी सी नजर दीजिए

प्यार ही प्यार दे बन के जो दिलनशीं
खूबसूरत मिरा हम सफर दीजिए

बाँट कर प्यार ख़ुशियाँ बराबर यहाँ
कुछ इधर दीजिए कुछ उधर दीजिए

सूरते हाल मेरी पता तो लगे
उन को मेरी कभी तो खबर दीजिए

मखमली रेशमी दिल की इस सीप में
आज 'मोहन' को सुंदर गुहर दीजिए

Block -A Flat no- 506, श्री एनक्लेव, (SNG बिल्डिंग) गंगा मैरेज गार्डन के सामने, निवारू रोड़, झोट वाड़ा , जयपुर- 302012 (राजस्थान)

कविता विकास

डी–15, सेक्टर–9, पी.ओ. कोयलस नगर, जिला
धनबाद–826005 (झारखण्ड)

ज़िन्दगी यूँ भले मुख़्तसर दीजिए
हमको जीने का लेकिन हुनर दीजिए

आँख पथरा गयीं आपकी दीद को
अपने आने की अब तो ख़बर दीजिए

मुझको जिस जा से दिखती रहे ये धरा
कामयाबी का बस वो शिखर दीजिए

आपको ही मैं हर शै में देखूँ सदा
मन की आँखों में इतना असर दीजिए

शोखियाँ भी हों, सरगोशियाँ भी मगर
बदलियों से भरी भी नज़र दीजिए

रात चाहे हो कितनी भी लंबी मगर
जब सहर दीजिए बस सहर दीजिए

औरतों को नहीं यंत्र समझे कोई
उनको आराम के दो पहर दीजिए

आशा शैली

साथ देना है तो उम्र भर दीजिए
चाँदनी रात, उजली सहर दीजिए

जिन्दगी जब नवाज़ी मुझे रब मेरे
मेरा दामन भी ख़ुशियों से भर दीजिए

है अगर राह पुरख़ार यह दोसतो
चल सकूँ इसपे मुझको हुनर दीजिए

गुनगुनाने लगे अब हवा चार सू
यास ही है उसे कर मुखर दीजिए

गा उठूँ अपने दर्दो-अलम भूल कर
आज दाता बस इतना सबर दीजिए

खिड़कियाँ सब पड़ोसी की जानिब खुलें
मालिक-ए-दोजहाँ ऐसा घर दीजिए

हो मुहब्बत से भरपूर सारी उमर
आज शैली को वो दिल जिगर दीजिए

प्रमोद कुमार चौहान

वार्ड क्रमांक 12,, गणेश चौक, कुरवाई,
जिला विदिशा–464224
मो. 9893559911

मेरे रब ज़िन्दगी में असर दीजिए
बस हमें प्यार की इक नज़र दीजिए

दोस्तों को इसकी खबर दीजिए
क़ामयाबी हमें जो अगर दीजिए

रात कटती नहीं दिन गुजरता नहीं
मुझको यारब सुकूँ की सहर दीजिए

मुल्क की ना दलाली करे अब कोई
दुश्मनों को हमारा तो डर दीजिए

पाप इतने बढ़े हैं धरा पर तो अब
मेरे रब ज़िन्दगी मुख़्तसर दीजिए

मुश्किलें और अंधेरा भले ही मिलें
उनसे लड़ने का यारब हुनर दीजिए

राह लगती कठिन है अकेले बहुत
पार करने को इक हमसफ़र दीजिए

बीच मझधार से पार लग जाएँगे
बस नदी में जरा इक लहर दीजिए

फिलीपींस में संस्कृत भाषा-सुनील पाठक

प्रदेश अध्यक्ष
अखिल भारतीय
साहित्य पररषद उत्तराखण्ड

ए क चमत्कार था कि .. ..

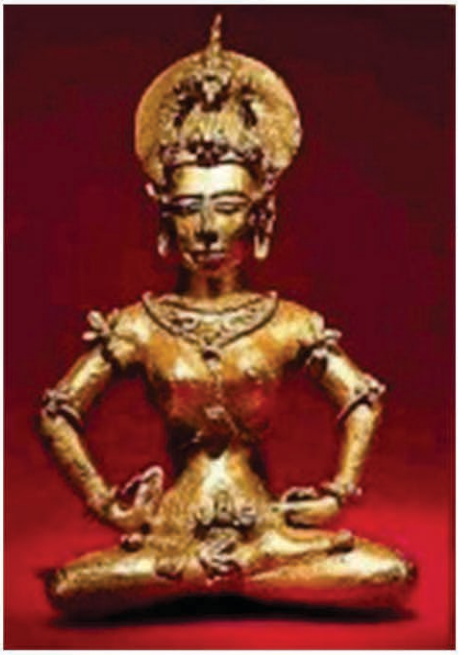

मुझे स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि ऐसा होगा पर एक दिन ऐसा ही हुआ। मैं संस्कृत भाषा के विश्व व्यापी विस्तार के संदर्भ में खोज कार्य करते हुए सोच रहा था कि मुझे वर्मा, थाईलैंड, कंबोडिया, वियतनाम, इंडोनेशिया आदि के विषय में तो पर्याप्त सामग्री मिल चुकी है पर फिलीपींस के बारे में मुझे अधिक पता नहीं था।

वहाँ का कोई० फेसबुक मित्र भी नहीं था। दक्षिण चीन सागर में फिलीपीन्स एक छोटा सा देश है। जिसे चीन दबाने की कोशिश करता रहता है, पर इसका सांस्कृतिक अतीत अति समृद्ध है और भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है।

पर इहतिस की पुस्तकों से इतनी ही जानकारी मिलती है कि वहाँ संस्कृत का एक शिलालेख मिला है और फिलीपींस भारतीय संस्कृति का एक भाग था। इतना ही बस्स।

मैं चिंतन में डूबा था। इसका सूत्र (लिंक) कहाँ से लाऊँ? पर चमत्कार हुआ और अकस्मात प्रात:काल ही फिलिपींस के एक व्यक्ति ने मुझे संदेश भेजा कि क्या आप मुझे संस्कृत भाषा सिखा सकते हैं?

उनका नाम भी बोलने में जटिलतम कठिनतम। मैंने आज तक ऐसा नाम नहीं सुना था। MocÈel Angelou M Adao. पर संस्कृत में रुचि? मैं घोर आश्चर्य में डूब गया।

मैंने पूछा कि आपकी संस्कृत भाषा में इतनी रुचि क्यों है।

तो उन्होंने कहा कि संस्कृत हमारा अतीत है। आज फिलिपींस का समाज इसे भूल चुका है।

हमारी सरकार इस संबंध में बिल्कुल रुचि नहीं लेती पर मेरे जैसे कुछ लोग व्यक्तिगत रूप से अपने अतीत की खोज में जुटे हुए हैं। फिर उन्होंने मुझे फिलीपींस के

संग्रहालय में से कुछ प्राचीन मुद्राएं भेजीं जो निश्चित ही बौद्ध और हिन्दू सभ्यता से जुड़ी हुई हैं।

आज मेरे पुरातत्व के रथ ने एक अनजाने से देश फिलीपींस में भी प्रवेश कर लिया था। यह एक चमत्कार ही था।

यह फिलीपींस के आँसू थे। यह फिलीपींस की कराह थी। उन्होंने फिलीपींस की कथा का मार्मिक विवरण दिया। उन्होंने मुझे फिलीपींस के एक संस्कृत शिलालेख की छाया प्रति भेजी और कहा था कि केवल एक ही ऐहतिहसक शिलालेख अब तक फिलीपींस में प्राप्त हुआ है।

तो मैंने कहा कि यह तो असंभव है कि पूरे फिलीपींस में हिंदू संस्कृति का केवल एक ही प्रतीक मिले। खोज की जाए तो शायद कुछ और सामग्री मिल सकती है।

उन्होंने मुझे एक मूर्ति शिल्प का छायाचित्र भेजा और दुखी होकर बताया कि .. ''इस मूर्ति को अमेरिकन लोगों ने हमारे यहाँ से चुरा लिया है और अपने निजी संग्रहालय में रखा है।

शायद योग मुद्रा में यह किसी हिंदू देवता की मूर्ति है और फिलीपींस के स्पेनी उपनिवेश काल से पहले के इतिहास को प्रदर्शित करती है।''

उन्होंने दुख पूर्वक कहा कि स्पेनी आक्रांताओं ने हमारी बहुत सी धरोहरें नष्ट कर दीं और अब बहुत सी पुरातात्विक वस्तुएँ फिलीपींस के निजी विक्रेताओं द्वारा अमेरिकन लोगों को बेच दी गई हैं। यह मूर्ति शिल्प भी इन्हीं में से एक है।

मैंने पूछा कि फिलीपींस की सरकार और समाज अपने अतीत की खोज में कोई रुचि नही ले रही?

तो उन्होंने कहा कि देश में बहुत सी समस्याएँ हैं। आर्थिक अभाव से देश जूझ रहा है। संस्कृत के लिए बहुत कम स्थान है।

फिर भी मेरे जैसे कुछ लोग अपनी प्राचीन संस्कृति की खोज में लगे हुए हैं। मैं कैथोलिक ईसाई हूँ क्योंकि स्पेनी आक्रांता जब फिलीपींस में आए तो उन्होंने यहाँ की संपूर्ण हिन्दू आबादी को ईसाई बना लिया, कुछ लोग मुसलमान बन गए।

पर मेरे जैसे कुछ लोग अतीत के अन्वेषण में लगे हुए हैं। मैं फिलीपींस की प्राचीन लिपि और संस्कृति को पुन: फिलीपींस में जीवित करना चाता हूँ।

अभी मैं छात्र हूँ। मैं चाता हूँ कि जब मैं शिक्षक बन जाऊँ तो अपने विद्यार्थियों को बताऊँ कि फिलीपींस का अतीत क्या है।

उन्होंने एक आश्चर्यजनक तथ्य बताया कि यहाँ के एक द्वीप में मार्नो नामक जनजाति समूह रहता है जो मुस्लिम है पर आज भी बहुत सी हिन्दू परम्पराओं को सुरक्षित रखे हुए है।

उन्होंने मुझे फिलीपींस के प्राचीन अक्षरों का छायाचित्र भी भेजा और कहा कि इसकी उत्पत्ति भारत की ब्राह्मी लिपि से हुई थी इसीलिए इसका उच्चारण देवनागरी लिपि से बहुत मिलता जुलता है।

उन्होंने कहा कि फिलीपींस के पूर्व राष्ट्रपति चाहते थे कि इस प्राचीन लिपि का प्रयोग फिलीपींस में दोबारा किया जाए पर कुछ लोगों ने विरोध किया और यह निर्णय लागू नहीं हो सका।

उन्होंने फिलीपींस की कुछ संस्कृत शब्दावली भेजी जो आज भी वहाँ के समाज में प्रचलित है।

जैसे . दिविता-देवता। बुधि-बुद्धि।

मैंने उन्हें शुभकामनाएँ दीं।

आप भी देखिए फिलीपींस के इस गौरिशाली अतीत को। यह भारतीय संस्कृति का स्वर्णिम विस्तार है।

शिव सिटी कालोनी,
तीन पानी डैम रोड, फुलसुंगा, रुद्रपुर।
पोस्ट . ट्रांजिट कैम्प-263153
जिला. ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड) मो.
9411216425

आशा शैली के दोहों का भावपक्षीय सौन्दर्य

-श्रीमती हीरा अन्ना
राजकीय महाविद्यालय खटीमा

विख्यात साहित्यकार आशा शैली एक ऐसा व्यक्तित्व है जो संघर्ष तथा चुनौतियों के साथ हर दम खड़ा रहता है। वे कर्मठ हैं, गम्भीर हैं तो धीरज से युक्त भी। संघर्ष में रत रहकर भी वे अपने कार्य व कर्तव्य से विमुख नहीं होतीं। स्वभाव से यायावार बोलों में संयमित, श्वेत वर्ण आशा जी न केवल स्वयं साहित्य सृजन करती हैं, बल्कि दूसरों को भी सत्कर्म के लिए प्रेरित करती हैं।

आशा जी के साहित्य में कहानी, लघु कथा, उपन्यास, लेख, सस्मंरण, अनुवाद, समीक्षा, रिपोर्ताज, बाल साहित्य कविता, ग़ज़ल, गीत तथा दोहे शामिल हैं।

दोहा हिन्दी का ऐसा मात्रिक छन्द है जिसमें दो पंक्तियाँ तथा चार चरण होते हैं। दोहा छन्द के विषम चरणों में 13-13 तथा सम चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं। दोहे लिखने की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। आशा शैली ने दोहे लिख कर इसी परम्परा को आगे बढ़ाया है। उन्होंने अनेक दोहे लिखे हैं जो भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं तथा पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं। कुछ पुस्तकों में उनके दोहे संकलित भी हैं।

1-'राम नाम मनका'-आशा शैली का दोहा संग्रह 2020 में प्रकाशित हुआ। इसमें उनके राम नामी 108 दोहे हैं। यह पुस्तक 'आरती प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित की गई है। इस दोहा संग्रह के प्रारम्भ में आशा शैली जी ने अपने गुरू को नमन किया है। 'वाणी वन्दना' में गणेश, सरस्वती की आराधना है। इसके पश्चात् 108 दोहों में राम भक्ति है। अन्य संकलनों में प्रकाशित दोहों में कहीं-कहीं राधा-कृष्ण, लक्ष्मण, सीता एवं हनुमान का भी गुणगान है। अन्तिम पृष्ठों के दोहों एवं खैपाइयों में पवन पुत्र हनुमान की वन्दना है।

2-पर्यावरणीय दोहे-आशा शैली के 50 पर्यावरणीय से सम्बन्धित दोहे 'मेरी साँसे, तेरा जीवन' पुस्तक में संकलित हैं। इस पुस्तक की सम्पादक अनीता भारद्वाज हैं। यह पुस्तक सर्वप्रथम 2017 में प्रकाशित हुई थी। यह अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा प्रस्तुत दोहा साझाँ संग्रह है। इसमें लगभग 23 दोहाकारों के दोहे संकलित हैं। रोचक बात यह है कि इस पुस्तक में सभी कवियों के दोहे पर्यावरण से ही सम्बन्धित हैं।

दोहों का काव्यगत सौन्दर्य:-कविता तथा गीत की भाँति दोहों का काव्यगत सौन्दर्य उसके भावपक्ष तथा कलापक्ष के सौन्दर्य से निर्धारित होता है। अत: दोहों के काव्यगत सौन्दर्य को हम निम्नलिखित दो भागों में बाँट सकते हैं।

दोहों का भावपक्षीय सौन्दर्य:-

1:-गेयता का निर्वाह:-जो गाया जा सके वह गेय होता है। सामान्यतया: कविताओं में गेयता का गुण पाया जाता है। इनकी प्रमुख विशेषता यह है कि ये लय के साथ गाए जा सकते हैं। इसके साथ-साथ दोहे कर्णप्रिय भी हैं।

''सहज और निष्काम जो, गहे राम की टेक।
उसके लाखों जन्म के, कर्म जगे हैं नेक।।''

00000

''जीवन हर पल पर्व हो, करो नाम से नेह।
पावन तन मन हो रहे, पावन होता गेह।।''

आशा शैली के दोहे गुरू नमन से सम्बन्धित हों अथवा गणेश नमन से, भगवान श्रीराम की भक्ति से सम्बन्धित हों अथवा हनुमान जी के वन्दन से सभी में गेयता का निर्वाह है। यही नहीं उनके पर्यावरण से सम्बन्धित सभी दोहे भी लय के साथ गाए जा सकते हैं।

''कैसी आशा पुत्र से, कैसा है अभिमान।
सुत से अच्छे वृक्ष हैं, देते जीवनदान।।''

00000

''गंगा धरती सींचती, सब की पालनहार।
पर अब है दूषित हुई, करती हाहाकार।।''

2-गुरू की महिमा:-जीवन में गुरू की महिमा अनन्त है। गुरू शिष्य को अनन्त दृष्टि प्रदान करता है। वह अपने शिष्य को अनन्त व असीम ब्रह्म का साक्षत्कार कराने में समर्थ होता है। वह अपने शिष्य को ज्ञान का ऐसा दीपक प्रदान करता है, जिससे वह ठीक मार्ग पर चल सके। गुरू को ईश्वर से भी श्रेष्ठ माना है। गुरू

की कृपा से जीवन धन्य हो जाता है, संध्या सुहावनी हो जाती है। काव्य धनवान हो जाता है। कबीर का कथन है-

''हरि रूठे गुरू ठौर है, गुरू रूठे नहिं ठौर।''

आशा शैली ने भी अपनी पुस्तक 'राम नाम मनका' अपने मार्गदर्शक, परम श्रद्धेय गुरूवर श्री नारायण दत्त श्रीमाली को समर्पित की है। उनका मानना है कि गुरू की कृपा से ही उनकी पुस्तक पूर्ण हो पाई है।

वे गुरू को सदैव प्रणाम करने को कहती हैं क्योंकि गुरू ही ऐसा व्यक्तित्व है, जो हमारे जन्मों का गहन अन्धकार दूर करते हैं। भगवान श्रीराम भी गुरू का महत्व बताते हैं। गुरू को नमन करते हुए आशा शैली जी कहती हैं-

''मोह तिमिर को काटती, गुरू की कृपा अपार।
गुरू तो आँखें खोलते, ज्ञान दीप उजियार।।''

000000

''जिसने मुझको दे दिया, ज्ञान दीप उजियार।
उस गुरू के श्री चरण में, नत हूँ बारम्बार।।''

3:-विभिन्न देवताओं का गुणगान-आशा शैली ने अपनी पुस्तक 'राम नाम मनका' के अधिकतर दोहों में भगवान श्रीराम की भरपूर वन्दना की है। वे जानती हैं कि भगवान राम सभी का मंगल व शुभ करते हैं। साथ ही वे अपनी लेखनी को सफल करने के लिए भगवान श्री गणेश से भी आशीर्वाद लेती हैं।

''राम सभी का शुभ करें, मंगल करें हमेश।
मेरी लेखनी सफल हो, मंगल करें गणेश।।''

आशा शैली अपने दोहों में माँ सरस्वती की अपने जीवन पर हुई कृपा से धन्य हैं। उनका कहना है कि जब से हंसवाहिनी ने उन पर अपना हाथ धरा है, वे अनाथ से सनाथ हो गई है। वे ऐसी देवी हैं, जिनकी वाणी से नित्य प्रतिदिन शब्दों के फूल बरसते हैं। माँ सरस्वती को सम्बोधित करते हुए वे कहती हैं:-

''हंसवाहिनी ने किया, जिन जन पर उपकार।
झोली भर मिलते उसे, प्रेम पुष्प उपहार।।''

वे प्रभु राम के साथ-साथ लक्ष्मण व सीता माँ की भी वन्दना करती हैं।

''सीय चरण वंदन करूँ, लखन सहित रघुनाथ।
दुख हो चाहे सुख सखे, रहते मेरे साथ।।''

वे राम तथा कृष्ण को एक ही छवि के दो रूप मानती हैं।

''इक छवि के दो भाग हैं, एक कृष्ण इक राम।
पल में कर सायक धरें, पल मुरली ले थाम।।''

वे मानती हैं कि जब माँ अम्बे तथा श्री राम प्रभु दोनों का आशीर्वाद मिल जाता है तो मन के सभी पाप दूर हो जाते हैं।

''ममता अम्बे मात की, राम का आशीर्वाद।
दोनों जब मिल जायें तो, मन से मिटे विषाद।।''

आशा शैली के अनुसार जब राम भक्त हनुमान प्रसन्न हो जाते हैं तो राम स्वंय अपने आप ही प्रसन्न हो जाते हैं। उन्हें तो बजरंगी ने मालामाल कर दिया है। बजरंगी राम के प्रिय हैं। वे बजरंगी से सन्त जनों के प्राण उबारने को कहती हैं। यदि बजरंगी उनके अंग-संग रहें तों उनकी दया का क्या कहना? वे कहती हैं-

''बजरंगी की बात निराली,
पल में लंका दहन कर डाली।
बजरंगी भक्तों के प्यारे,
रक्षा करिये राम दुलारे।
बजरंगी हैं अवघड़ दानी,
बजरंगी की अजब कहानी।''

4:-सगुणोपासक राम-हिन्दी साहित्य में भक्ति धारा के अन्तगर्त भक्ति के दो रूप मिलते हैं। सगुण भक्ति तथा निर्गुण भक्ति। सगुण भक्ति वह भक्ति है जिसमें ईश्वर का कुछ न कुछ रूप, रंग और आकार होता है। अनेक प्रकार की मूर्तियों द्वारा अपने इष्ट की पूजा की जाती है।

सीधा-सादा मतलब होता है कि हम परमात्मा को एक आकार में देखते हैं। जबकि निर्गुण भक्ति के अन्तर्गत ईश्वर का रूप, रंग, आकार तथा मूर्ति पूजा मान्य नहीं होती। इसमें हम ईश्वर को एक अस्तित्व के तौर पर सर्वत्र विद्यमान सत्ता के रूप में देखते हैं।

आशा जी सगुण भक्ति मार्ग की अनुयायी हैं। उनके राम कबीर के निर्गुण राम नहीं हैं। बल्कि दशरथ पुत्र राम हैं। वे अत्यन्त सुन्दर, गुणी, धैर्यवान हैं। वे धनुष धारण करते हैं। आशा जी कहती हैं-

''सुप्रभात श्रीराम कह, नवे सभी को माथ।
पल-पल संग रहते सखे, धनुधारी रघुनाथ।।''

5:-राम नाम स्मरण पर बल:-वैसे तो सभी सगुण-निर्गुण भक्त कवि परमात्मा से भी अधिक परमात्मा

के नाम स्मरण का महत्व बताते हैं। आशा शैली ऐसी सगुण भक्त कवयित्री हैं जो अपन दोहों में राम नाम स्मरण को अत्यधिक महत्व देती हैं। वे हृदय से मनुष्य को राम नाम स्मरण करने को कहती हैं। हरि स्मरण का महत्व बताते हुए वे कहती हैं-

''करिए जग के काम सब, प्रथम लेहु हरि नाम।
जग में आना सफल हो, जब सुमिरो श्रीराम।।''
''धन्य-धन्य वह देह जित, करता प्रेम निवास।
पल छिन रामहि सुमिरते, आवे-जावे श्वास।।''

वे कहती हैं उनके रोम-रोम में बस राम का ही नाम रम रहा है। जब भी उनका मन कहीं इधर-उधर भटकने लगता है तो, राम नाम का स्मरण उनका हाथ थाम लेता है तथा वे भटकने से बच जाती हैं। उनके कण-कण में राम बसे हैं। वैसे तो कहा जाता है कि अयोध्या में राम का निवास है। परन्तु आशा शैली जी की अयोध्या तो वहीं है जहाँ उन्हें श्रीराम प्रभु का स्मरण हो आता है।

वे प्रात: उठकर राम नाम स्मरण पर बल देती हैं। सहज एवं निष्काम भाव से राम नाम जपने को कहती हैं। वे जिस दिन श्रीराम के नाम का उच्चारण नहीं करती, वह दिन मानों व्यर्थ चला जाता है।

''जेहि दिन राम न उच्चरे, सो दिन बिरथा जान।
साँस-साँस में रम रहे, मेरे राम सुजान।।''
''मेरे प्रभु श्रीराम हैं, सकल सृष्टि का मूल।
उनके सुमिरन के बिना, जगत लगे ज्यों धूल।।''
''राम विराजें जगत में, राम जगत आधार।
नित उठ राम उचारिए, होगा बेड़ा पार।।''

प्रभु राम के स्मरण से व्यक्ति का इस भवसागर से बेड़ा पार हो जाता है। वास्तव में राम नाम का जाप ही सम्पूर्ण सृष्टि का मूल है।

6-सत्संगति का महत्व:-सत्संगति का अर्थ है-अच्छे आदमियों की संगति। गुणी जनों का साथ। अच्छे मनुष्य का अर्थ है-वे व्यक्ति जिनका आचरण अच्छा होता है। जो सदैव श्रेष्ठ गुणों को धारण करते है। सत्य का पालन करते हैं। परोपकारी हैं। अच्छे चरित्र के सारे गुण उनमें विद्यमान हैं। ऐसे अच्छे व्यक्तियों के साथ रहना, उनकी बातें सुनना, उनकी पुस्तकें पढ़ना, सत्संगति के अन्तर्गत आता है।

सत्संगति से मनुष्य में मानवीय गुण उत्पन्न होते हैं। उसका जीवन सार्थक बनता है। सत्संगति में ज्ञानहीन मनुष्य को भी विद्वान बनाने की सामर्थ्य होती है। यह मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारती है। उसमें सद्गुणों का संचार करती है। अच्छे आदमियों के सम्पर्क से हम में गुणों का समावेश होता चला जाता है।

महात्मा कबीरदास का कथन है-

''कबिरा संगति साधु की, हरै और की ब्याधि।
संगत बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि।।''

आशा शैली भी अपने दोहों में संत व्यक्तित्व की संगत अपनाने पर बल देती है। क्योंकि अच्छी संगत जहाँ व्यक्ति को गुणों से भर देती है। वहीं बुरी संगति हमें धीरे-धीरे घुन की तरह खा जाती है। अच्छी संगति से मन में ज्ञान पैदा होता है। अच्छी संगति में रहने वाला व्यक्ति सदैव राम नाम स्मरण करता है। आशा जी कहती है-

''संग संत का राखिए, उर में उपजे ज्ञान।
राम नाम सुमिरन करें, पल-पल संत सुजान।।''

7:-नश्वर संसार:-आशा शैली अपने दोहों में इस जगत को नश्वर मानती हैं। इस छोटे से संसार में राम नाम का ही अनन्त विस्तार है। वे कहती हैं कि हे मनुष्य! तू भली भाँति सोच-विचार कर ले। तू इस संसार में एक कण के भी बराबर नहीं है। आशा जी कहती हैं-

'' प्रात: उठ श्री राम को, सिमर लेहु रे मीत।
यह जग सपना बिनसिहै, ज्यों बालू की भीत।।''
''पचंतत्व के भवन में, जीव किराएदार।
साँस किराया दे रही, पल-पल राम चितार।।''

कवयित्री कहती हैं कि इस संसार में जो भी व्यक्ति आता है। निश्चित ही वह एक दिन इस संसार को छोड़कर जाएगा। अत: हमें इस संसार में समस्त दुविधाओं को भूलकर राम नाम का जाप करना चाहिए।

''आया है सो जायगा, जाने यह संसार।
जग की दुविधा भूल कर, करो नाम आधार।।''

8:-दास्य भक्ति:-भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई है। जिसका अर्थ सेवा करना या भजना है। अर्थात् श्रद्धा और प्रेमपूर्वक इष्ट देवता के प्रति आसक्ति।

व्यास ने पूजा में अनुराग को भक्ति कहा है। भक्ति के नौ भेद हैं। जिसमें श्रवण, भजन-कीर्तन, नाम जप, स्तरण, मन्त्र जप, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, पूजा आरती, प्रार्थना, सत्संग इत्यादि है।

आशा शैली अपने दोहों में स्वंय को भगवान श्रीराम का दास कहती है। अर्थात् राम के प्रति उनकी भरक्ति दास्य भक्ति के अन्तर्गत आती है। इसमें उपासक अपने उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उसका दास समझता है। वे अपने आपको भगवान् श्रीराम के समक्ष अज्ञानी व भिक्षुक मानती है। वे कहती है।-

''हम हैं भिक्षुक राम के, सजा राम दरबार।
आँचल में भर लो सखे, जो दे राम उदार।।''
''मेरा भरोसा राम पर, राम मेरा अभिमान।
मैं अज्ञानी जनम से, राम नाम का ज्ञान।।''

9:-माधुर्य भक्ति:-वात्सल्य भाव से भी आगे है-वह है माधुर्य भाव। माधुर्य भक्ति के अन्तर्गत भक्त ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाता है। वह अपने आराध्य से प्रेम करने लगता है। भक्त जब अपने आराध्य से कान्त भाव से प्रेम करने लगे तो ऐसी भक्ति माधुर्य भक्ति कहलाती है।

आशा शैली अपने दोहों में भगवान् श्रीराम की भक्ति में लीन है तथा उन्हें अपना सर्वस्व मानती है।

''राम विमुख मन बाबरा, जगत रहा भरमाय।
प्रेम बने आधार जब, राम बसें मन आय।।''

माधुर्य भक्ति में हम भगवान् को अपना राजा, स्वामी, सखा, बेटा तथा प्रियतम मानकर प्रेम कर सकते हैं। सभी रसों का आनंद ले सकते हैं। आशा जी कहती हैं-

''राम हमारे बन गए, सखा सनेही मीत।
बसें हृदय में यूँ सखा, जैसे मधुरिम गीत।।''

वे राम को अपना मित्र मानती हैं-

''दुख-सुख मन के खेल हैं, संग हार के जीत।
चौथेपन में साथ लो, रामनाम इक मीत।।''

कवयित्री यह भी कहती है कि भगवान् राम से जब प्रेम हो जाता है तो मानो जीवन एक मधुर गीत बन जाता है। श्वासों में सरगम बसता है तथा पूरा ब्रह्माण्ड मानो संगीत बन जाता है।

''प्रीत राम संग जब लगे, जीवन बनता गीत।
साँसों में सरगम बसे, सकल ब्रह्म संगीत।।
''मेरा तो जीवन बना, राम नाम के हेत।
सजन सनेही सब मिलें, राम कृपा कर देत।।
''प्रेम राम के नाम से, राम जगत आधार।
सखा सनेही सब मिलें, करो नाम से प्यार।।

10:-राम नाम जपना पहचान देता है-आशा शैली कहती हैं कि यदि मैं भगवान श्रीराम की आराधना करती हूँ, तो इससे मेरा मान-सम्मान बढ़ता है। राम ही मेरा अभिमान है। वास्तव में राम-नाम जपने से मुझे पहचान मिली है।

''राम ही मरा मान है, राम मेरा अभिमान।
राम-राम कहते मिली, मुझे मेरी पहचान।।

दरअसल राम नाम का जाप ही पूरे संसार का सार है। वे कहती हैं-

''एक राम का नाम ही, सकल जगत का सार।
इसी नाम का जगत में, चलता है व्यापार।।

क्योंकि राम नाम का जाप हमें समाज में पहचान देता है, इसलिए हमें अपने दोनों हाथों से राम नाम के प्रेम को बटोरना चाहिए तथा पूरे संसार की मोह, माया को त्याग करके अपनी जीवन की डोर प्रभु राम को सौंप देनी चाहिए।

''प्रेम राम के नाम का, दोनों हाथ बटोर।
सारे जग को छोड़ कर, सौप राम को डोर।।
''राम कहे सुख ऊपजे, बिसरे संकट घोर।
राम कृपा जब मन बसे, रस का ओर न छोर।।

11:-राम भक्ति ही जीवन का सार-'राम नाम मनका' पुस्तक में संकलित सभी राम नामी 108 दोहों में आशा शैली राम भक्ति को ही सभी तत्वों का सार मानती हैं। यदि प्रात: शैया त्यागते ही प्रभु राम का नाम लें। इससे हमारी प्रभात मधुमय हो जाती है। राम भजन से विवेक जागता है। द्वेष भावना समाप्त हो जाती है। यदि मानव राम नाम भूल जाता है तो उसके मार्ग पर सर्वत्र काँटें बिछ जाते हैं। आशा जी कहती है-

''जीवन हर पल पर्व हो, करो राम से नेह।
पावन तन-मन हो रहे, पावन होता गेह।।

भगवान राम के चरणों की धूल से ही व्यक्ति का मान-सम्मान बढ़ जाता है। इस नाम के समक्ष संसार की सारी सम्पत्ति व्यर्थ है। भूमि, भवन, धन, मान यह सब कूड़ा-करकट है। इसे हृदय में जपो। एक राम ही है जो

दु:ख में हमारा साथ देता है।

''नमन राम के नाम को, सृष्टि रची रसधार।
निरख शक्ति श्रीराम की, यह जीवन का सार।।

हमारे स्वजन, स्नेही, नाते, रिश्ते सभी राम से ही हैं। यदि हम अपने मन को राम के अनुकूल बना लेंगें तो जीवन की सभी परिस्थितियों हमारे प्रतिकूल नहीं होगी। राम के बिना तो मन पागल हो जाता है। हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। राम-नाम के जाप से ही मन का सारा मैलापन मिट जाता है। राम नाम के उबटन से मनुष्य के सारे अंग निखर जाते हैं।

राम का नाम जपने से संसार में प्रसन्नता आती है। जगत में सुख आता है। राम-नाम के सुगन्धित झोके से हम आठों पहर महकते रहते हैं। यदि हम मन में राम नाम को धारण कर लेते हैं, तो स्वार्थ से दूर हो जाते हैं। हम मार्ग में कभी नहीं भटकते। आशा जी कहती हैं-

''कण-कण बसता राम है, सौप उसे दी डोर।
जिस पल राम हृदय बसे, वही सुहानी भोर।।

वह मनुष्य धन्य है जो राम से अमिट लगाव रखता है। यदि हम स्वंय को राम को अर्पित कर देते हैं तो वही हमारा आश्रय बनता है। मानव जीवन में सुख-दु:ख तो लगा ही रहता है। अत: हमें सदैव प्रभु राम की कृपा हो जाती है। उसका तो जीवन खिल जाता है।

जिस समय भी हम अपने हृदय में राम को बसा लेते हैं, वही सबसे शुभ समय है। अत: बेकार में समय व्यर्थ न करे। राम से प्रीत करने पर बिकारों पर विजय प्राप्त होती है। मनुष्य को अपना सब कुछ त्याग कर प्रभु राम को अपनी डोर सौंप देनी चाहिए। जिस पल प्रभु राम से प्रीत लगे वह पल धन्य है। यह जग भला किसे सम्मान देता है? राम से प्रेम होने पर मान-अभिमान सब छूट जाता है। परम ज्ञान की प्राप्ति होती है।

''मन तो हरि का धाम है, मन मन्दिर में राम।
राम नाम यदि मन बसे, कौन जगत से काम।।

मनुष्य अपने मन के भीतर तो राम को खोजता नहीं। सारे संसार में उसे ढूँढ़ता रहता है। वास्तव में राम तो हमारे मन में विराजमान है। एक राम का ही नाम है जो मन को आधार देता है। राम नाम का दीपक मोह, लोभ, भ्रम जाल सभी को दूर करता है। इसलिए हरि चरणों में मनुष्य का मन विश्राम प्राप्त करें।

''यश भी, धन भी, प्रेम भी, एक राम का नाम।
हरि चरणों में रति रहे, मन पावे विश्राम।।

दोहों में आज की सबसे जटिल समस्या पर्यावरण संकट पर दृष्टि:-पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। परि+आवरण। 'परि' का अर्थ है- चारों ओर। 'आवरण' का अर्थ है-घेरा। अर्थात् चारों तरफ का घेरा, जिसमें हम रहते हैं। तथा प्रभावित होते हैं। विज्ञान ने अत्यधिक प्रगति कर, मानव जीवन को अनेक वरदान दिए हैं। विज्ञान की कुछ उपस्थित उपलब्धियाँ मानव जाति के लिए अनेक समस्याएँ खड़ी कर रही हैं। जिसमें से एक है-प्रदूषण।

प्रदूषण का अर्थ है-दोष उत्पन्न होना। अर्थात् मिट्टी, जल तथा वायु के भौतिक, रसायनिक व जैविक गुणों में अवांछनीय परिवर्तन से उनमें दोष उत्पन्न होना ही पर्यावरण प्रदूषण है। इससे आस-पास का वातावरण प्रदूषित तथा हानिकारक हो जाता है। प्रदूषण को कम कर पाने में मनुष्य समर्थ होता नहीं दिख रही है।

पुस्तक 'मेरी साँसे तेरा जीवन' में संकलित आशा शैली के पर्यावरणीय दोहों में वर्तमान समय की इसी सबसे जटिल समस्या पर्यावरणीय संकट पर बात की गई है। आशा जी ने अपने दोहों में पर्यावरण प्रदूषण के निम्न कारण बताए हैं।

(क) ध्वनि प्रदूषण:-यह मानव की कैसी प्रगति है कि कल कारखाने इतने बढ़ गए हैं कि चारों तरफ मशीनों का ही शोर है। यातायात के साधनों, हॉर्नों का शोर, चीखते लाऊडस्पीकर, तेज आवाज में चलते टैलीविजन, इस प्रकार के ध्वनि प्रदूषण से व्यक्ति को कम सुनाई देने लगता है तथा रक्तचाप बढ़ता है। आशा शैली अपने दोहों में कहती हैं-

''कोलाहल से काँपते, धरा, गगन के छोर।
ध्वनि प्रदूषण बहु बढ़ा, है अशान्ति घनघोर।।
''वाहन नित उगले धुआँ, और मचाते शोर।
तेल गंध है फैलती, साँझ घिरी चहुँ ओर।।

(ख) जल-प्रदूषण:-जल जीवन का आधार है। जल में किसी भी अवांछनीय बाह्य पदार्थ का मिलना, जिससे उसकी शुद्धता में कमी आ जाती है, जल प्रदूषण कहलाता है। उद्योगों, कारखानों का जल नदियों, तालाबों

में मिलना जल प्रदूषण कहलाता है। वे नदियों में मलमूत्र त्यागने, जानवरों को नहलाने तथा शवों की राख बहाने से जल प्रदूषण से बहुत व्यथित है। गंगा के प्रदूषित होने से मनुष्य को अनेक गम्भीर रोग लग रहे हैं। गंगा नदी के पानी के प्रदूषण से पूरा पर्यावरण दूषित हो गया है। वे कहती हैं-

''सकल नगर मल सौपता, गंगा है बीमार।
रे मानव अब चेत जा, कर माँ का उपचार।।
''गंगा धरती सींचती, सब की पालनहार।
पर अब है दूषित हुई, करती हाहाकार।।
''नदियाँ माँ का रूप हैं, देती अतुल सनेह।
कूड़ा-कचरा फेंक नर, दूषित करता देह।।

वे उन ठेकेदारों पर भी व्यंग्य करती है जो 'नमामि गंगे अभियान' में गंगा को स्वच्छ करने की बजाए, केवल पैसा कमाना ही अपना उद्देश्य समझते हैं।

''नमामि गंगे का चला, शुद्धिकरण अभियान।
पैसा ठेकेदार का, गंगा का बस गान।।

जल प्रदूषण के कारण जीव-जन्तु घटने लगे हैं। नदी का नीर विषाक्त होने से जलचर तड़प-तड़प कर मर रहे हैं। नदियों में मूर्ति विसर्जन भी किया जाता है। जिससे नदियों का पानी मलिन होता है।

''मूर्ति विसर्जन के लिए, जल क्यों करें विषाक्त।
तड़पें जलचर भी सभी, निरूपाय और आप्त।।

क्यों न मूर्ति विसर्जन के लिए कोई विशेष स्थल चुना जाए? ताकि जल भी दूषित न हो न ही अन्य कोई क्लेश।

''मूर्ति विसर्जन के लिए, रखिए ठोर विशेष।
जल भी दूषित हो नहीं, हो नहीं कोई क्लेश।।

(ग) भूमि प्रदूषण:-आज कल वनों की अन्धाधुन्ध कटाई हो रही है। उपज बढ़ाने के लिए खेतों में रसायनिक खादों को डाला जा रहा है। इससे भूमि प्रदूषण होता है। भूमि में उगने वाला खाद्यान एवं साग-सब्जियाँ प्रदूषित हो रही हैं। इनको खाने से मनुष्य के शरीर पर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है। वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई का परिणाम देखिए-

''काष्ठ वस्तुओं की खुली, रोज नई दुकान।
सोफे कुर्सी ले रहे, हरे वृक्ष की जान।।
''हर घर में नित बढ़ रहा, वैभव का सामान।
बढ़ती तृष्णा ले रही, नित पेड़ों की जान।।

इस तरह निरन्तर पेड़ों के काटने से मनुष्य निरन्तर विनाश की ओर बढ़ रहा है। पेड़ों के बिना वर्षा नहीं होती। हम सुहानी भोर का अनुभव नहीं कर सकते। पेड़ों की बढ़ रही कटाई के कारण आकाश में बादल घुमड़-घुमड़ कर लौट रहे हैं। धरती प्यास से तड़प रही है। बादल कहाँ से बरसेगें, उनके पास नीर ही नहीं है। वृक्ष काटने का परिणाम देखिए-

''ताल-तलैया सूखते, सूख रहा सब नीर।
धरती तड़पे प्यास में, मनुज बढ़ाए पीर।।

इसके विपरीत धरती पर हरे-भरे वृक्ष हो तो कैसा लगता है?

''नदी-ताल बिरवे हरे, मन को दें हरषाय।
हरे वृक्ष बाग सब, वर्षा लेत बुलाय।।''

13:-जल का महत्व:-हमजल के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। पीने तथा घरेलू उद्देश्यों के अलावा, जल हमारी दुनिया के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। हमारी अच्छाई तथा आने वाले भविष्य के लिए जल का संरक्षण महत्वपूर्ण है। हमें पानी बचाने के लिए पहल करने की जरूरत है। चाहे पानी की कमी हो या नहीं हो। आशा शैली अपने दोहों में पानी का महत्व बताते हुए कहती हैं।

''नीर गँवाये व्यथ क्यों, नीर बिना जग नाहिं।
जल का संरक्षण करो, जो रहना जग माहिं।।''

वे आने वाली नस्लों के लिए इस उपहार को बचा कर रखने की बात करती है।

''आती नस्लों के लिए, रखिए ये उपहार।
जल ही जीवन भूमि पर, जल ही जग का सार।।''

आशा शैली कहती हैं कि पानी के बिना यह संसार कैसे रह पायेगा? मनुष्य को सोच विचार कर, पर्यावरण में सुधार लाने की बात करनी चाहिए।

14:-वृक्ष लगाएँ पर्यावरण बचाएँ:-आशा जी ने न केवल पर्यावरण प्रदूषण के कारण बताए हैं, साथ ही पर्यावरण प्रदूषण से बचाव के उपाय भी बताए हैं। इसके लिए वे वृक्ष लगाने पर सर्वाधिक जोर देती हैं। हरे-भरे वृक्ष हमें शुद्ध वायु देते हैं। ये तो विष्णु का रूप हैं। जो संसार के पालनहार हैं। वे वृक्षों को पुत्र से भी श्रेष्ठ मानती है। क्योंकि वृक्ष हमें छप्पन भोग देते हैं। वे कहती

हैं-

''स्वच्छ हवा छाया सघन, देते वृक्ष महान्।
अरु देते फल-फूल भी, करते हैं कल्याण।।''

पर्यावरण प्रदूषण से चारों दिशाओं में हाहाकार मचा हुआ है। मनुष्य को निरन्तर सोच-विचार करना चाहिए। क्योंकि पर्यावरण निरन्तर बिगड़ रहा है। वृक्षों की करुण स्थिति के बारे में कवयित्री लिखती हैं-

''वृक्ष गगन को ताकते, करते करुण पुकार।
मनव से कैसे बचें, दया करे करतार।।''

इसलिए मनुष्य को अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण को बचाना ही होगा।

''पर्यावरण बचाइए, वृक्ष लगाकर खूब।
हरियाली निसदिन बढ़े, धरती पर हो दूब।।''

अत: कहा जा सकता है कि आशा जी ने एक ओर जहाँ 'राम नाम मनका' पुस्तक में भक्ति सम्बन्धित दोहे लिखे हैं अन्य पत्रिकाओं में भी भक्ति से सम्बन्धित दोहे लिखकर उन्होंने इस समय की सबसे बड़ी समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। इस प्रकार उनके दोहों के लेखन में प्राचीन व नवीन परिपाटी का सुन्दर समन्वय है।

राजकीय महाविद्यालय
खटीमा, जिला ऊधम सिंह नगर
(उत्तराखण्ड)

कृष्णा सोबती : डार से बिछुड़ी

-मीतू बाला

S. B. S. Govt. P. G. College Rudarpur
(Udham Singh Nagar) UTTRAKHAND

अन्तरराष्ट्रीय बाल दिवस हो या महिला दिवस, दुनिया भर के तमाम मंचों से इनकी सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं उनके अधिकारों हेतु बहुत सी बातें व प्रतिबद्धता दोहराई जाती रही है परंतु बाल श्रम और मानव तस्करी जैसे मुद्दे एक ही सिक्के के दो पहलू रहे हैं। बचपन बचाओ आंदोलन (बी.बी.ए.) सहित अनेक सिविल सोसाइटी समूहों ने मानव व्यपार के इन खतरों को समाप्त करने के लिए एक मजबूत कानून के लिए दशकों से अभियान चलाया है। हमारी केंद्र की सरकारों ने मानव तस्करी (रोकथाम, देखभाल और पुनर्वास) विधेयक 2021 में प्रस्तावित है। जिसे अभी संसद में पारित करना है।

इस बिल का मुख्य उद्देश्य अपराध के सामाजिक और आर्थिक कारणों, समस्त तस्करों को सजा, पीड़ितों की सुरक्षा व पुनर्वास सहित मानव व्यपार के सभी पहलुओं से निपटना है। कोविड 19 महामारी और उससे उत्पन्न परिस्थितियों में इस कानून की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। एक लम्बे समय तक स्कूलों का बंद होना तथा आर्थिक संकट जैसे हालातों के चलते लाखों गरीब परिवारों के समक्ष आजीविका का कोई साधन न रहने का फायदा ये तस्कर उठा रहे हैं। बी.बी.ए. के आंकड़े बाल तस्करी बढ़ने के संकेत दे रहे हैं।

दरअसल यह मानव व्यापार अपने आप में एक जघन्य अपराध है। यह समानांतर चलने वाली अर्थव्यवस्था को जन्म देता है, साथ ही कई अन्य अपराध इसकी छत्र-छाया में पनपते है जैसे बालश्रम, बाल विवाह, वेश्यावृत्ति, बंधुआ मजदूरी, जबरन भिक्षावृत्ति नशीली दवाओं से संबंधित अपराधों को जन्म देता है। बच्चों की गरीबी, मज़दूरी, अशिक्षा

और सुरक्षा हमारी राजनीतिक और आर्थिक प्राथमिकता में नहीं रहे हैं। लेकिन एक लेखक जो कुशल दूर दृष्टा भी होता है वह अपनी पारखी नज़र से समाज में व्याप्त इस प्रकार की कुरीतियों को अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर करता है। वह समाज के समक्ष इसी प्रकार के कई प्रश्न चिन्हों को रखता है।

आज से लगभग 65 वर्ष पहले इसी प्रकार के प्रश्न चिन्हों को लेकर हमारे मध्य एक कृति उपस्थित हुई 'डार से बिछुड़ी' जो आज के संदर्भों में भी सटीक बैठती सी प्रतीत होती है। कृष्णा सोबती जी का यह उपन्यास 1958 में प्रकाश में आया। यह कृति उनकी प्रथम औपन्यासिक रचना है। इसमें उन्होंने 19 वीं शताब्दी में राजनैतिक हलचलों और उससे जुड़ी परम्पराओं एवं रूढ़ियों में जकड़ी असहाय नारी की मार्मिक स्थिति का चित्रांकन है।

'पाशो' कथा की मुख्य पात्र है जो किशोरावस्था की नाजुक उम्र से गुज़र रही है। पाशो निष्कलंक सुंदर और कोमल युवती है, जो मानो परम्पराओं रूढ़ियों से जकड़ी घुटन भरा जीवन जीने को बाध्य है। पाशो की विधवा उसकी, पाशो को छोड़ शेखों की हवेली में जा बैठती है। अपनी माँ के इन कृत्यों से समूचा क्षत्रिय कुल आहत था। ''इस मुँह उसका नाम न लूँ बिटिया, उसी की करनी तुझे भरनी थी। तेरे दोनों मामू कितना मानते थे, यह लोक - जहान जानता है, पर वह नासहोनी तो घर-भर का मुँह कला कर गई।'' [1] माँ के इन्हीं कृत्यों का फल पाशो को अपने जीवन में हर क्षण झेलना पड़ता है। उसके सगे संबंधी सदैव उसे शंका की दृष्टि से देखते है। पाशो का अपना नाम होने के बावजूद उसके सगे उसे कुलच्छनी, कर्मजली, कलंकिनी आदि उपनामों से सम्बोधित करते हैं। पाशो अपने जीवन के छोटे से सीमित दायरे में जीते-जीते थक चुकी थी। वह एक ओर रीति रिवाजों और परम्पराओं के कठोर चक्र में कसी थी साथ ही वह निर्दोष होते हुए भी कलंकित जीवन जीने को बाध्य थी।

पाशो अपने तृषित मन में न जाने कब से ही अपनी माँ की एक झलक देखने को आकुल थी। अनिष्ट की आशंका की आहट से अचम्भित वह रोती बिलखती एक रात अपनी माँ के पास शेखों की हवेली में चली जाती है। जहाँ उसका खूब स्वागत होता है। अब पाशो अपनी डार से बिछुड़ जाती है। किसी युद्ध की परिसीमा में अपने ही डार से बिछुड़ जाने के बाद अच्छे व्यवहार की उम्मीद कम ही होती है। अब पाशो का कोई ठौर ठिकाना नहीं था। समाज की रूढ़ियों और उनकी परम्पराओं में जकड़ी पाशो अब फिसल कर रह जाती है उसका समस्त जीवन भटकाव के सिवाय कुछ नहीं रह गया था। उसकी नानी झूठ नहीं कहती थी - - - ''संभलकर ही रहना! एक बार थिड़का पाँव जिन्दगानी धूल में मिला देगा।'' [2]

पाशो अपने अतृप्त मन की तृष्णा बुझाने अपनी माँ के समक्ष जाती है लेकिन इससे पहले कि उसके आँसू सूखते उसे अगली सुबह बाबा दित्ते के साथ दीवान जी की बैठक में पहुँचा दिया जाता है। जहाँ पाशो का विवाह अपने से कहीं अधिक उम्र के बूढ़े व्यक्ति दीवान जी से हो जाता है। दीवान जी पाशो से अधिक उम्र के होते हुए भी वे पाशो को पाकर बहुत खुश थे, साथ ही पत्नी के रूप में प्रेम और आदर भी देते थे। दीवान जी की मौसी ने भी पाशो को बहुत लाड़-दुलार दिया।

पाशो अपार सुन्दर तो थी लेकिन कभी वो इन्सान नहीं बन पाई, न तो समाज की दृष्टि में और न ही स्वयं की दृष्टि में सभी ने अपनी सुविधा के अनुरूप खरीदा और बेचा। वह सदा ही जैसे मूक-बधिर की भांति मौन रहकर सभी खरीद-फरोख्त को सिर झुकाकर मौन स्वीकृति देती चली गई। पाशो रातभर जिनकी बैठक में बैठी थी वे दरअसल युवा नहीं थे बल्कि दिखने में बूढ़े से प्रतीत हो रहे थे। पाशो को अपने सपनों का राजकुमार तो मिला किन्तु उसकी स्वीकृति अस्वीकृति के समस्त विकल्पों से परे। पाशो ने भी दीवान जी को अपनाकर अपने घर को तन-मन से अपनाकर घर को खुशियों से परिपूर्ण किया। अब पाशो दीवान जी की मालन है और कुछ ही दिनों बाद वह

एक पुत्र को जन्म देती है।

मालन के जीवन मे खुशियों की बाहर आई ही थी कि अचानक दीवान जी की मृत्यु हो जाती है। मालन अपने पति की मृत्यु से आहत थी अभी उसके आँसू सूखे भी न थे कि चरित्रहीन बरकत की सम्पत्ति बनने को मजबूर होना पड़ा। बरकत और उसकी माँ दीवान जी के रिश्तेदार थे। उन्होंने पाशो का समस्त स्त्रीधन तो लूटा साथ ही चँद मोहर और धन के प्रलोभन के चलते घर की बहु को बेच दिया। ''भागमरी, यह घर-बाहर सँभाल और द्रौपदी बनकर सेवा कर मेरी और मेरे बेटों की।'' [3] जहाँ वह मालन से द्रोपदी बनकर पिता-पुत्र और मंझले की सेवा करने को बाध्य होती है। पाशो की स्थिति बहुत ही मर्मस्पर्शी है वह अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए कहती है, ''आंगन के बीचोंबीच एक छोटे कुएँ की चरखड़ी पर लाज लटकती थी। कभी-कभी इस गागर, तो कभी उस गागर।'' [4] पाशो अपनी स्थिति का वर्णन तो करती हैं लेकिन कभी विरोध नहीं कर पाती या यूं कह सकते हैं जैसे उसे अपनी स्थिति पर विरोध करना ही नहीं आया। पाशो जैसे बिना किसी सहारे के जिन्दगी जीने का हुनर सीखा ही नहीं था। नि:संदेह ही इस कथा में कई अंश बेहद संवेदनशील है जहाँ आकर पाठक वर्ग की संवेदना को झकझोर देती है। ''अरे मेरे बैरी, चले ही जाना था तो इस कर्मजली को किसी ठिकाने पहुचा जाता।'' [5]

कृष्णा सोबती का लेखन अपने आप में विशिष्ट है। उन्होंने आज से लगभग 65वर्ष पहले यह कथा लिखी। इस कथा में कहानीकार ने तत्कालीन समाज में व्याप्त मानव तस्करी जैसे जघन्य आपराधिक मुद्दों को कुरेद कर सभी के समक्ष रखा है तथा कई प्रकार के प्रश्न चिन्हों को चिन्हित करती यह कहानी आज के सन्दर्भों में भी जैसे आज की कहानी सी लगती है। इसका पात्र पाशो, जैसे हमारे समाज के सबसे गरीब, पिछड़े और हाशिये पर रहने वाले हजारों बच्चों और लड़कियों की दशा को बयान करती कहानी है। इस दुनिया में कोई भी देश जब तक अपनी बेटियों और बच्चों की खरीद फरोख्त को यूं ही चुपचाप देखता और सहता रहेगा तब तक स्वयं को सभ्य नहीं कहला सकता। किसी भी राष्ट्र की सम्पत्ति, शक्ति और उसकी प्रगति का कोई अर्थ नहीं रह जाता जब तक उसके बच्चे मध्ययुग की भांति दासप्रथा के समान जानवरों से भी कम कीमत में खरीदा और बेचा जाता है।

संदर्भ सूची

डार से बिछुड़ी - कृष्णा सोबती - पृष्ठ संख्या - 19 (राजकमल प्रकाशन) तीसरी आवृत्ति - (2014)
डार से बिछुड़ी - कृष्णा सोबती - पृष्ठ संख्या - 91 (राजकमल प्रकाशन) तीसरी आवृत्ति (2014)
डार से बिछुड़ी - कृष्णा सोबती - पृष्ठ संख्या - 81 (राजकमल प्रकाशन) तीसरी आवृत्ति (2014)
डार से बिछुड़ी - कृष्णा सोबती - पृष्ठ संख्या - 83 (राजकमल प्रकाशन) तीसरी आवृत्ति (2014)
डार से बिछुड़ी - कृष्णा सोबती - पृष्ठ संख्या - 100 (राजकमल प्रकाशन) तीसरी आवृत्ति (2014)

कुमाऊँ विश्विद्यालय- नैनीताल
उत्तराखण्ड

Postal Address :- HAHNEMANN HOMOEOPATHIC MEDICAL STORE RUDRAPUR. (Dist. Udham Singh Nagar) PIN 263153 UTRAKHAND
Mobile No. 9917215156

एक पेड़ के नीचे एक ही समय में 23 रणबांकुरों को फांसी

-अंकुर सिंह रघुवंशी

शहीद स्मारक

बनारस! भारत का सौभाग्यशाली नगर, यहाँ से मात्र 30 किलोमीटर की दूरी पर, उत्तर दिशा में जौनपुर जिला के आदि-गोमती के पावन तट से 2 किलोमीटर की दूरी पर हरदासीपुर (चंदवक, जौनपुर) में स्थित दक्षिण मुखी माँ काली का मंदिर लगभग 8 शताब्दियों से इस क्षेत्र (डोभी) की शोभा को द्विगुणित करता है। किसी समय इसे विंध्य क्षेत्र के नाम से जाना जाता था। आज हम आपको यहाँ के मन्दिरों के साथ-साथ इस क्षेत्र के इतिहास से भी परिचित कराने वाले हैं। तो आइए, पहले इतिहास को जानते हैं।

किम्बदन्तियों के अनुसार काशी क्षेत्र पर तकरीबन 150ई.पू. भर (राजभर) समुदाय का राज्य था, इस वंश के राजाओं ने बावड़ियों एवम मंदिरों के निर्माण पर विशेष बल दिया, किन्तु मगध साम्राज्य के उदय के पश्चात इसे मगध क्षेत्र के अधीन कर लिया गया और हर्षवर्धन के शासन काल में पुनः इनको राज करने का अधिकार प्राप्त हुआ। किन्तु लगभग वर्ष 1000 ईसवी में काशीक्षेत्र से सम्बद्ध क्षेत्र (वर्तमान में डोभी, जिला- जौनपुर) में रघुवंशी क्षत्रियों का आगमन हुआ। तब बनारस के राजा ने अपनी पुत्री का विवाह तत्कालीन अयोध्या के राजा नयनदेव से करने का फैसला किया।

राजा नयनदेव किसी कारण अयोध्या का राजपाट छोड़ सन्यास धारण कर माँ गंगा के चरणों में आये और काशी के नियार क्षेत्र में कुटिया स्थापित कर तपस्या करने लगे थे। काशी नरेश ने पुत्री से विवाह के उपरांत भेंट स्वरूप राजा नयनदेव को काशी के कुछ क्षेत्र (वर्तमान में डोभी व कटेहर) की भूमि प्रदान की जिसमे रघुवंशी क्षत्रिय आबाद हुए।

उसके बाद वत्यगोत्री, दुर्गवंश और व्यास क्षत्रिय इस जनपद में आये। तत्कालीन समय में भी भरों और सोइरसों का प्रभुत्व इस क्षेत्र पर था। क्षत्रियों की आबादी बढ़ने के साथ-साथ भरों और क्षत्रियों में संघर्ष बढ़ने लगा।

लगभग वर्ष 1090 के दौरान कन्नौज से गहरवार क्षत्रियों के आगमन के पश्चात यह संघर्ष युद्ध में तब्दील होने लगा। फलस्वरूप गहरवारों ने विंध्याचल पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर अपनी धार्मिक रुचि के अनुरूप मंदिरों के निर्माण एवं विकास पर बल देना आरम्भ किया।

किसी भी सत्ता की धर्मिक रुचियों का प्रभाव क्षेत्र विशेष पर पड़ना अनिवार्य होता है। शासन अपनी श्रद्धा के अनुरूप देवस्थलों का निर्माण करता है और जनता उसका अनुसरण करती है। यही स्थान आगे चलकर क्षेत्र विशेष की पहचान बन जाते हैं और फिर उनसे जुड़ जाती हैं अनेक दंतकथायें। लगभग 1100 ईसवी के उत्तरार्द्ध में गहरवारों की कृपादृष्टि मनदेव (वर्तमान में जफराबाद) और योनपुर (वर्तमान में जौनपुर) पर पड़ी और यहाँ भी समृद्धि के साथ धार्मिक क्रियाकलापों का विकास आरम्भ हुआ।

डोभी में पहले से रह रहे रघुवंशी एवम अन्य क्षत्रियों के साथ गहरवार क्षत्रियों के संबंध स्थापित हुए। बढ़ती मित्रता और रिश्तेदारी के बीज ने क्षेत्र में विकास

के वृक्ष को जन्म दिया।

बाह्य आक्रान्ताओं के भय से गहरवारों का मुख्य लक्ष्य मंदिर और धार्मिक कार्यों के विकास के रूप में ही था जिसके फलस्वरूप रघुवंशी क्षत्रियों की कुल देवी माँ 'दक्षिणेश्वर काली' के मंदिर का निर्माण गहरवारों के राजा विजय चंद की अगुवाई में लगभग 1200 ईसवी में पूर्ण हुआ।

वर्तमान में क्षेत्र की कुल देवी के रूप में स्थापित यह मंदिर अलौकिक मान्यताओं, किम्बदन्तियों, लोक कथाओं का साक्षी है।

कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा मनदेव (वर्तमान का जफराबाद) पर आक्रमण कर धार्मिक स्थलों को नष्ट करने का दुष्कृत्य आरम्भ हो चुका था। मुस्लिम आक्रान्ताओं से परेशान होकर गहरवारों ने अपनी राजधानी विजयपुर स्थानान्तरित कर ली, फलस्वरूप विंध्य क्षेत्र काशीनरेश के अधीन हो गया। मुस्लिम आक्रान्ताओं की नज़र मंदिर पर थी किन्तु रघुवंशियों के राजा का बनारस से संबंध होने के नाते मंदिर को सुरक्षित रखा गया।

लगभग 1632 ईसवी में मुस्लिम आक्रान्ता शाहजहाँ द्वारा काशी विश्वनाथ मंदिर को पुनः ढहाने के लिए प्रस्ताव पारित किया गया किन्तु सेना में हिंदुओं द्वारा प्रबल प्रतिरोध के कारण मंदिर को नष्ट नहीं किया जा सका, किन्तु काशी क्षेत्र के 63 प्रमुख मंदिरों को ध्वस्त कर दिया गया और इनके पुनः निर्माण पर रोक लगा दी गयी जिसमें से एक दक्षिणेश्वर काली मंदिर भी था।

वर्षों से चली आ रही परम्परा के अनुसार जब देवी के वार्षिक पूजन का समय निकट आ रहा था। ऐसे समय क्षेत्र वासियों के मन में भय के साथ रूढ़िवादी प्रश्नों का उठना स्वाभाविक था। पूजा के समय को निकट देखते हुए लोगों ने देवी की पार्थिव प्रतिमा (मिट्टी से निर्मित आकृति) को मंदिर के सामने स्थित बरगद के विशालकाय वृक्ष के नीचे स्थापित कर पूजन करने का निर्णय किया। इस पूजन के पश्चात् लगभग 250 वर्षों तक माता की पार्थिव मूर्ति वृक्ष के नीचे विराजमान रही।

लगभग 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तत्कालीन पुजारी द्वारा पूजन करते समय तांब्रपात्र छूट कर माता के हाथ पर गिरा और मूर्ति का हाथ टूट गया। उस समय स्थानीय जमींदार और कारोबारी अमरदेव सिंह

तीर्थयात्रा पर निकले थे। इधर मूर्ति का हाथ टूटा उधर तीर्थ यात्रा में गए अमरदेव सिंह के हाथ मे दर्द शुरू हो गया। दर्द असहनीय होने के कारण तीर्थयात्रा छोड़ उन्हें रास्ते से घर वापस आना पड़ा। घर वापस आकर उन्होंने वहाँ से खण्डित मूर्ति हटाकर नई मूर्ति स्थापित करने का संकल्प लिया और उसी समय उनके हाथ का दर्द समाप्त हो गया। स्व. अमरदेव सिंह ने कलकत्ता से माँ काली की नई मूर्ति लाकर मंदिर निर्माण का कार्य आरम्भ करवाया और शताब्दियों बाद एकबार पुनः दक्षिण मुखी माँ काली की स्थापना का कार्य उनके हाथों सम्पन्न हुआ।

तकरीबन 100 वर्षों पश्चात वर्ष 2006 में अमरदेव सिंह के सुपौत्र शम्भू नारायण सिंह द्वारा मंदिर की जर्जर अवस्था को देखते हुए एक भव्य मंदिर निर्माण का खाका तैयार किया गया और निर्माण कार्य पुनः आरम्भ हुआ जिसमें विशेष सहयोग उनके भांजे कारोबारी जितेंद्र सिंह (लखनऊ) और गाँव के निवासी कारोबारी शांति देवी पत्नी शिवपूजन सिंह (सिंगापुर), स्व. उदयभान सिंह, रामप्यारे सिंह आदि का रहा। साथ ही साथ क्षेत्र एवम् सम्पूर्ण गाँव के अन्य लोगों का आर्थिक और शारीरिक सहयोग भी सराहनीय रहा। वर्तमान में मंदिर के प्रमुख संरक्षक (सक्रिय

सदस्य) के रूप में वर्तमान पुजारी सहित हरदासीपुर कीर्तन मण्डली और समस्त ग्राम एवम् क्षेत्रवासी सम्मिलित हैं। अब तनिक स्वतंत्रता के इतिहास पर भी दृष्टिपात करें।

डोभी ब्लाक, जौनपुर जिले के सेनापुर गाँव में स्थापित 'शहीद स्तम्भ' स्वाधीनता संग्राम आंदोलन में बलिदान हुए वीरों की गाथा का गान करता प्रतीत होता है। सम्पूर्ण भारत की तरह ही इस क्षेत्र के अनेक बलिदानियों ने भी देशहित अपने प्राण न्योछावर किए, इसका प्रमाण यह स्मारक है। कितना अजीब लगता है न, एक ही दिन में एक ही पेड़ के नीचे एक ही समय में 23 रणबांकुरों को फांसी के फंदे पर लटकाया गया था। कैसा हृदयविदारक दृश्य रहा होगा हम अनुमान लगा सकते हैं। यह घटना सं. 1857 के पहले स्वतंत्रता आंदोलन में की बताई जाती है। आज भी शहीद स्तम्भ पर 15 शहीदों के नाम अंकित है जिन आठ शहीदों की पहचान स्पष्ट न पाई स्मारक में स्थान नहीं मिल पाया। यह स्थान हरदासीपुर दक्षिणेश्वरी महाकाली मंदिर से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

वाराणसी में स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर और हरदासीपुर दक्षिणेश्वरी महाकाली मंदिर की सड़क मार्ग दूरी (राष्ट्रीय राजमार्ग 236 से) लगभग 36 किलोमीटर है। काशी विश्वनाथ मंदिर से लगभग 10 किलोमीटर की परिधि में काल भैरव, संकटमोचन, दुर्गाकुंड, मानस मंदिर जैसे प्रसिद्ध और पूजनीय स्थल है।

जिला जौनपुर मुख्यालय से लगभग 5 किलोमीटर और हरदासीपुर दक्षिणेश्वरी महाकाली मंदिर से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित शीतला माता चौकिया मंदिर का पूर्वांचल में काफी महत्वपूर्ण स्थान हैं। मान्यता है कि सर्वप्रथम चबूतरे अर्थात चौकी बनाकर देवी की स्थापना की गयी इसलिए इन्हें चौकिया देवी कहा गया जो कि शीतला माता की प्रतीक है। डोभी क्षेत्र ही नहीं अपितु पूर्वांचल क्षेत्र के अधिकांश लोग चौकिया धाम में वार्षिक पूजा एवं मुंडन जैसे धार्मिक कार्यों को करते हैं। पूर्णिमा को माता रानी का विशेष श्रृंगार किया जाता है तथा नवरात्री में भक्तों का जमावड़ा लगा होता है। मंदिर से लगभग 15 किलोमीटर कि दूरी पर, धर्मापुर शिवमंदिर, शाही किला, शाही पुल, जामा मस्जिद, अटाला मस्जिद, सहित अन्य कुछ पुरतत्व की धरोहरें हैं।

पल्हना देवी मंदिर महाशक्ति पीठों में से एक है। धार्मिक मान्यतों के अनुसार यहाँ पर माँ सती के घुटने से लेकर पैर तक का भाग गिरा जो आज पाल्हमेश्वरी देवी के नाम से पूजित है। यह स्थान आजमगढ़ जिला मुख्यालय से 40 किलोमीटर एवं हरदासीपुर दक्षिणेश्वरी महाकाली मंदिर से लगभग 36 किलोमीटर रोडमार्ग की दूरी पर स्थित है।

वाराणसी-गाज़ीपुर राजमार्ग पर कैथी के पास गंगा नदी के तट पर वाराणसी से 30 और हरदासीपुर दक्षिणेश्वरी माँ काली मंदिर से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर मार्केण्डे महादेव नाम से काफी प्रसिद्द शिवधाम है, जहाँ शिवरात्रि और सावन माह में शिवभक्तों का अत्यधिक संख्या में जमावड़ा लगता है। पुराणों के अनुसार, जब ज्योतिषियों ने मार्कण्डेय ऋषि की आयु 14 वर्ष तक ही बताई तो उनके माता-पिता काफी चिंतित रहने लगे और संतों की सलाह पर मार्कण्डेय ऋषि के पिता गंगा-गोमती संगम पर बालू से शिव विग्रह बनाकर उसकी पूजा करने लगे एवं उनके साथ उनके पुत्र मार्कण्डेय भी तपस्या में लीन हो गए। 14 वर्षों बाद जब मार्कण्डेय के प्राण हरने यमराज आए, ठीक उसी समय भगवान शिव प्रकट हो गए और यमराज से कहा कि मेरा भक्त मार्कण्डेय अमर रहेगा और इसकी पूजा की जाएगी। तभी से यहाँ भगवान शिव के साथ-साथ मार्कण्डेय की पूजा होने लगी और ये धाम मार्कण्डेय महादेव नाम से प्रसिद्ध हो गया।

औघड़ बाबा संत कीनाराम के चार मठों में से एक मठ हरदासीपुर दक्षिणेश्वरी महाकाली मंदिर से मात्र 3/4 किलोमीटर की दूरी पर आदिगंगा माँ गोमती के तट पर हरिहरपुर में स्थित है। यहीं पर बाबा संत कीनाराम ने अपने जीवन काल के अनेक वर्ष व्यतीत किये।

संत कीनाराम की तपोस्थली, हरिहरपुर के समीप गोमती नदी पर बने पुल को पार करते ही डोभी क्षेत्र के कुल देवता डीह बाबा, बरैछा धाम के दर्शन पूजन का भी सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है। गोरखपुर के वर्तमान सांसद और भोजपुरी सिनेमा कलाकार रविकिशन का पैतृक गाँव इसी क्षेत्र में हैं। इसके साथ ही मैं एक और विभूति कानूनविद डॉ. राम उग्रह सिंह का वर्णन करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा। हरदासीपुर दक्षिणेश्वरी महाकाली मंदिर से लगभग 9 किलोमीटर से दूर बोड़सर ग्राम में इनका जन्म मार्च 1903 को हुआ था। 1927 में प्रो.डॉ. राम उग्रह सिंह एम.ए.एलएलबी. की पढ़ाई पूरी कर वकालत करने लगे। कानून के विषय में उनके पहले लेख पर ही हार्वर्ड कॉलेज ऑफ लॉ से बुलावा आने पर वे आगे के पढ़ाई के लिए वहाँ चले तो गए परन्तु, देश के प्रति अपार प्रेम के कारण वापस लौट आये और लखनऊ में ही आगे की पढ़ाई करने लगे। उनकी विद्वता से प्रभावित होकर नेपाल नरेश ने 50 के दशक के अंत में उन्हें अपनी संविधान निर्माण समिति में शामिल कर लिया। डॉ. सिंह ने नेपाल का संविधान बनाने में भी भूमिका निभाई थी। हावर्ड कॉलेज ऑफ लॉ के स्टूडेंट यूनियन के आजीवन चेयरमैन रहे डॉ सिंह ने दिल्ली और बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में विधि विभाग को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। लखनऊ यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय का नाम डॉ. आर. यू . लाइब्रेरी पड़ा। आज हमारी ये धरोहरें अपनी पहचान खोती जा रही है, इसके साथ ही इनके गाँव में स्थापित डॉ. राम उग्रह सिंह पोखरा इंटर कालेज आज उपेक्षा का शिकारहो रहा है।

हरदासीपुर दक्षिणेश्वरी महाकाली मंदिर से लगभग 700 मीटर की दूरी पर स्थित सैकड़ों साल पुराना बाबा जगा ब्रह्मधाम मंदिर काफी सिद्ध धाम है। सप्ताह में प्रत्येक सोमवार और शुक्रवार को यहाँ भक्तों का विशेष जमावड़ा होता है

हरदासीपुर, चंदवक, जौनपुर
उत्तर प्रदेश- 222129
मोबाइल नंबर - 8367782654.
व्हाट्सअप नंबर - 8792257267

माहौल और समाज के चेहरों को उजागर करते तीखे व्यंग्य

-प्रो.नव संगीत सिंह

पुस्तक -'एक गधा चाहिए'
(व्यंग्य संग्रह)
रंगीन/पेपर बैक
प्रकाशन वर्ष -2022
पृष्ठ -118
मूल्य -450/-
लेखिका -डॉ. दलजीत कौर
प्रकाशक -डाटालाइन पब्लिशर, 2-ए, दशमेश मार्केट (बार्डर), सै. 41-डी, चण्डीगढ़

डॉ. दलजीत कौर हिन्दी की एक जानी-पहचानी लेखिका हैं। उन्होंने 'हरिशंकर परसाई के साहित्य में व्यंग्य' के विषय पर पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से पी.एच.डी. प्राप्त की है। लगभग दस वर्ष अध्यापन के बाद, वह अब स्वतन्त्र (फ्रीलान्स) लेखिका हैं। उनकी रचनाएँ अक्सर हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। उनकी दो पंजाबी पुस्तकों सहित विभिन्न विधाओं में दस पुस्तकें प्रकाशित हैं।

समीक्षा हेतु पुस्तक डॉ. दलजीत कौर का एक व्यंग्य- संग्रह है, जिसमें कुल 35 व्यंग्य शामिल हैं। उनके ज्यादातर व्यंग्य, पुस्तक रूप में प्रकाशित होने से पहले पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं और उनमें से कुछेक को पंजाबी में (मेरे द्वारा) अनुवाद किया गया है।

पुस्तक के सभी व्यंग्य आसपास के माहौल और समाज के बदसूरत चेहरे को उजागर करते हैं। लेखिका ने बहुत पैनी दृष्टि से हर स्थिति का अवलोकन किया और फिर उसे अपनी कलम के माध्यम से तीव्र कटाक्ष द्वारा प्रस्तुत किया।

पुस्तक का 'शीर्षक' व्यंग्य 'एक गधा चाहिए' साहित्यकारों द्वारा पुरस्कार/ सम्मान हासिल करने के लिए प्रयुक्त किये जाते घटिया क़िस्म के तौर-तरीकों से संबंधित है। 'सम्मान में मिला सामान' में लेखिका ने स्पष्ट किया है कि वास्तव में सम्मान में दिए जाने वाले- शाल, स्मृति चिन्ह, प्रशंसापत्र, धन-राशि की कीमत सम्मानित होने वाले लेखक से पहले ही वसूल कर ली जाती है। (मुझे याद आया कि 2004 में मुझे भी ऐसा ही एक सम्मान मिला था, जिसके लिए संबंधित संस्था ने हर एक सम्मानित होने वाले लेखक से 200/- प्रति व्यक्ति रिफ्रेशमेंट्स के लिए जमा करवाए थे, लेकिन जब मैं रात में ट्रेन द्वारा दूसरे राज्य में सम्मान लेने पहुँचा तो वहाँ रिफ्रेशमेंट के नाम पर सिर्फ एक कप चाय थी, जो उन दिनों पाँच रुपए में मिल जाती थी। इकट्ठे किए रुपए तो घटिया क़िस्म के मोमेंटो देने या फिर मुख्य अतिथि की बुकिंग के लिए थे। बहरहाल..., 'आर्ट आफ टॉक' में डबल मानक खेलने वाले साहित्यकारों पर कटाक्ष है, जो एक ओर तो किसी से सम्मानित होने वाले लेखक की जोर-शोर से निन्दा करते हैं, वहीं दूसरी ओर उसी सम्माननीय लेखक को बधाई देते हैं। 'प्रसिद्धि का बुखार' में लेखकों द्वारा समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, फेसबुक के माध्यम से खुद का गुणगान किया जाता है, यहाँ तक कि किसी से लिखवाई समीक्षा अपने नाम पर छपवाई जाती है। 'प्रेमचन्द की वापसी' में बताया गया है कि लेखक की प्रतिभा कोई मायने नहीं रखती, बल्कि उसका 'जुगाड़ी' होना आवश्यक है। यानी वह या तो विदेशी हो, या ऊँचे ओहदे पर हो, या फिर किसी नेता/मंत्री/अध्यक्ष का निकट सम्बंधी हो।

'हो गई आँखें चार' में चश्मा पहनने/ न पहनने के तर्क को बहुत ही व्यंग्यात्मक शैली में दर्शाया गया है। 'कुछ तो करो ना' में कोरोना की भयानक महामारी के दौरान देश के लोगों की अंध-भक्ति/ अंध-श्रद्धा/ अंध-विश्वास को निशाना बनाया गया है। हमारे देशवासी इस बीमारी को थालियाँ बजाकर या मोमबत्तियाँ जलाकर भगाने की कोशिश करते रहे। कोरोना अवधि के दौरान सभी लोगों की जबान पर सिर्फ कोरोना का ही जिक्र रहा, जैसे कि कोई अन्य समस्या ही न रही हो! 'साथ चलेंगे शमशान तक' में लोक-दिखावे के लिए अंतिम संस्कार के लिए श्मशान घाट तक जाना आवश्यक दर्शाया है, चाहे आपकी कोई भी समस्या हो। 'बत्ती गुल' अपने वाहनों से लाल/नीली बत्ती को हटाने के बाद उच्च अधिकारियों की दशा के बारे में है। अधिकारियों के बच्चे बत्ती वाली गाड़ी में बैठ कर ही स्कूल जाना चाहते हैं, ताकि अन्य बच्चों पर उनका प्रभाव पड़े! 'मत आना अतिथि' भी कोरोना संकट के दौरान घर आने वाले मेहमानों को रोकने के बारे में है। हालांकि भारतीय संस्कृति में अतिथि को एक देवता के रूप में सम्मान दिया जाता है, लेकिन कोरोना के समय लोगों ने अपने घरों के दरवाजों पर लिखवा लिया था- 'कृपया हमारे घर न आएँ...।'

इस प्रकार इस संग्रह की बाकी व्यंग्य-रचनाओं में सामाजिक घटनाओं को तंज़ की दृष्टि से देखा गया है। डॉ. दलजीत कौर द्वारा लिखित तमाम साहित्य (काव्य-संग्रह, बाल-कविताएँ, कहानी, लघुकथा, अनुसंधान आदि) में व्यंग्य का शामिल होना शुभ संकेत है। 'इक्कीसवीं सदी के अंतर्राष्ट्रीय श्रेष्ठ व्यंग्यकार' में उनकी रचना को स्थान मिलना वाकई गौरवान्वित करने वाली बात है! डॉ. कौर के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ!

.....

स्नातकोत्तर पंजाबी विभाग,
अकाल यूनिवर्सिटी,
तलवंडी साबो-151302 (बठिंडा) पंजाब.
मो. 9417692015

दो संस्कृतियों का सुन्दर समन्वय: मलयालम अंक

-संजय कुमार पी. एस.

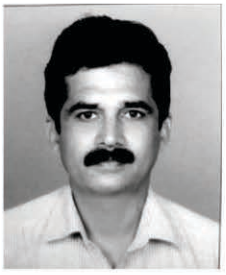

नैनीताल से प्रकाशित शैल सूत्र - अप्रेल जून 22 का मलयालम विशेषाांक पढ़कर बेहद खुशी हुई। हिन्दी की जड़ क्षेत्र से हिंदीतर प्रान्तों के हिन्दी कार्य को बढ़ावा देखकर मन आनान्दित हो उठा। इस अभिनंदनीय कदम उठाने पर सांपादक सहित समस्त सम्पादक मण्डल का विशेष साधुवाद देता हूँ। हिन्दी प्रचार का कार्य दक्षिण में जिस जोश और ज़ोरों के साथ हो रहा है, इसका जीता जागता प्रमाण पत्रिका से अनायास प्राप्त हो रहा है।

कलीकट विश्व विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष एवं केरल के हिन्दी प्रचार के सूत्रधार श्री आर सुरेन्द्रन जिन्हें प्यार से हिन्दी दुनिया आरसु पुकारती है को पत्रिका के अतिथि सांपादक के पद पर देखा तो फूला न समाया। असेतु हिमाचल के हिन्दी सेवियों को भाषा समन्वय वेदी के माध्यम से इन्होंने एक ही धागे में पिरोया है। साहित्यकार, अनुवादक, सांचालक एवं समन्वयकार डॉ. आरसु केरल की हिन्दी की धड़कन का प्रतिपल अनुभव करते हैं। शैलसूत्र के आद्यांत यह महसूस हुआ।

डॉक्टर शीला गौरभि ने विश्व के सर्वाधिक महिला एकत्रित धार्मिक स्थल का वर्णन बहुत ही सरल, संक्षिप्त और सटीक जानकारियों से किया। इन्हीं दिनों में शबरीमला का मंदिर जितना विवादों में घिरा रहा उतना ही प्रसिद्ध भी होता रहा। आट्टुकाल देवी मंदिर जो स्त्रियों का शबरीमला- नाम से प्रख्यात है, केरल की विशेषकर राजधानी तिरुवनंतपुरम की सांस्कृतिक अस्मिता के प्रतिमान के रूप में भी प्रतिष्ठित है। डॉक्टर शीला गौरभि ने मंदिर का इतिहास, मंदिर की रूढ़ियाँ, रीतियाँ और विशेषताओं का वर्णन किया, कि कोई भी पाठक मंदिर के दर्शन के लिए विवश हो उठता है।

डॉक्टर शीबा शरत ने केरल के प्राचीन एवं प्रतिष्ठित नृत्यों का इतिहास, वेषभूषा, गायन और उनसे संबन्धित प्रसिद्ध कलाकारों के बारे में बड़े सहज अंदाज़ से लिखा है। कथकली केरल की अपनी कला है जो आज विश्वभर में ख्यातिप्राप्त है। मंच पर इसकी प्रस्तुति देखने पर अन्य भाषा भाषी भी मोहित हो जाते हैं। कथकली के साथ ही उन्होंने केरल का राज्यीय नृत्य रूप 'मोहिनी नाट्यम' के अनुसांधानपरक तथ्यों का सजीव चित्रण किया है। केरल के अन्य प्राचीन कलारूपों का (ओट्टन तुल्लल, कूड़ीयाट्टम, चाक्यार कूत्तू) भी इसमें अच्छा खासा वर्णन है। कथकली जैसे नृत्त नृत्य रूपों ने केरल को भारत के अन्य क्षेत्रों के साथ जोड़ने का महान कार्य किया है और यहाँ की भाषा और सांस्कृति भारतीयता के विशाल सागर में घुल मिल गई है।

डॉक्टर सुप्रिया पी ने मलयालम के श्रेष्ठ रचनाकार अंबिकासुतन मंगाट की प्रसिद्ध कथा ऑक्सीजन का उच्च स्तरीय अनुवाद किया है। हालांकि अनुवादक की सीमाएँ होती हैं। वह एक भाषा की संस्कृति को दूसरी भाषा में उड़ेलने का अथक प्रयास करता है। डॉक्टर सुप्रिया ने इस अनुवाद में मूल कथाकार के साथ जितना न्याय किया उतना ही उन्होंने अपने हिन्दी पाठकों को कभी अस्वाभाविक उलझन में फंसने नहीं दिया।

डॉक्टर श्रीजा प्रमोद ने मलयालम की सुविख्यात कथाकार श्रीमती रेखा की कथा का अनुवाद किया है। तुझ में समाते समय- कहानी आधुनिक दुनिया के दोहरी व्यक्तित्व के प्रतीक लोगों का पर्दाफाश करती है। बड़े लोगों के पंजे में फंसकर चोट खाने वाले लोगों के साथ साथ स्त्री विमर्श की ओर भी यह कहानी ले जाती है। ऐसा लगा कि अनुवादक ने कथाकार

के अंर्तद्वदों का सही अनुभव किया है।

डॉक्टर शीला गौरभि की दूसरी रचना 'इन्सान केवल कविता से नहीं जीते' केरल के विख्यात सिने कलाकार, गीतकार, पटकथा लेखक श्री रफीख अहम्मद के साथ श्री विजय की भेंटवार्ता का अनुवाद है। बॉलीवुड से नाता रखनेवाले श्री रफीख अहम्मद हिन्दी दुनिया को अपरिचित ज़रूर नहीं है, अपितु उन्हें और करीब लाने का सही प्रयास गौरभि जी ने किया है।

डॉक्टर शीना ईप्पन द्वारा लिखित- 'कुमारनाशान: मलयालम के सुधारवादी कवि' लेख में मलयालम के छायावादी कवि कुमारनाशन के जीवन और कृतित्व के अनुसंधानिक तथ्यों का उल्लेख गरिमामय ढंग से किया है। चूंकि डॉक्टर शीना ईप्पन मलयालम और हिन्दी दोनों भाषाओं में समान अधिकार एवं रुचि रखती हैं, भाषाव्समानताओं एवं असमानताओं पर उन्होंने गहरा अध्ययन किया है, तभी तो कवि की संवेदनाओं को आत्मसात करने में उन्हें कठिनाई नहीं हुई।

''अंतहीन गहराई की ओर, हाय मैं डूब रहा हूँ।
एक दु:स्वप्न के समान ..... ।''

इस अनुवाद में कहीं भी कवि का दर्द चूकर गिरा नहीं, चुभन बरकरार रही।

डॉक्टर शीला गौरभि ने भी इसी तरह केरल के प्रसिद्ध कवि श्री विष्णु नारायण नांबूतिरी की कविता का अनुवाद किया। 'जागृत नारी' कविता में नारी दर्द एवं वेदनाओं का श्रेष्ठ अनुवाद हुआ है। इन अनुवादों द्वारा विशाल हिन्दी जगत मलयालम कवियों से सिर्फ परिचित ही नहीं होंगे बल्कि उनकी भावनाओं, आशाओं - आकांक्षाओं का अनुभव भी करेंगे। हिन्दी के विशाल पाठक यह ज़रूर जान जाएंगे कि कवि मन का दर्द किसी भी प्रांत में और किसी भी भाषा में एक सा होता है और द्रवीभमत हो उठेंगे।

''राम! आपने मुझे क्यों निर्दय जगा दिया
प्रेम भंग की मेरी भव्य वेदनाओं से??

मछुआ और आइडेंटिटी कार्ड डॉक्टर नवीना जे नरितूक्किल ने दो आधुनिक कवियों की कविताओं का अनुवाद किया। दोनों अनुवाद श्रेष्ठ रहे।

'हम बच्चों ने ही देखा था
आधे फुट से भी कम ऊँचे पानी में
सिर औंधे किए लेटे
मछुए का शव।' पंक्तियाँ स्वर्ग समान सुंदर केरल के तट प्रदेशों का पारिस्थितिक प्रदूषण और विमर्श की ओर संकेत करती है।

हिन्दी क्षेत्र के बहुत से लेखकों की रचनाएँ पत्रिका में एक से एक पंक्तिबद्ध हैं जिनका अभिनंदन करता हूँ। चूंकि यह केरल विशेषांक है इसलिए यहाँ मात्र केरलीय लेखकों का उल्लेख किया है।

अंतिम रचना अतिथि संपादक डॉक्टर आरसु की है। इसमें उन्होंने केरल की हिन्दी सेवी, लेखिका और कवियित्री श्रीमती टी एस पोन्नम्मा द्वारा लिखित काव्य संग्रह -केरल प्रसून की कविताओं की सुंदर समीक्षा की है। श्री आरसु ने इस पत्रिका के सम्पादन में केरल के हिन्दी कार्य की गरिमा पर पूरा-पूरा ध्यान रखा और अलग-अलग विधाओं की रचनाएँ चुन-चुन कर सुंदर हार का निर्माण किया जिसमें उन्होंने केरल के श्रेष्ठ रचनाकारों को सफल, सचेत पिरोया है। नि:संदेह यह पत्रिका केरल की हिन्दी दुनिया की एक उत्तम झांकी प्रस्तुत करती है।

समंदर की अंतहीन गहराइयों से
एक छोटी सी बूंद सहम उठी।।
सख्त हवा के झोंकों ने, उसे उठाया हौले से।
धीरे धीरे लहर उठी, तूफान बन गया तेज़।।
तट बोला -लो, आँधी आई,
दक्खिन की दुनिया से आज।। (संजय)

-जवाहर नवोदय विद्यालय, कोल्लम,
केरल-691531
मोबाइल 9447223217, 8848870969
(व्हाट्स अप्प)

हिमाचली जन जीवन : मनोज कुमार शिव की कहानियाँ

पुस्तक: 'घर वापसी'
कहानी संग्रह
रचनाकार:
मनोज कुमार शिव
अंतिका प्रकाशन
ग़ाज़ियाबाद (उ. प्र.)

-अनिल शर्मा नील

यह कहानी संग्रह हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिला से संबंध रखने वाले मनोज कुमार शिव का प्रथम कहानी संग्रह है। इसमें ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं।

मनोज कुमार शिव की कहानियों में हिमाचली जन जीवन का पुट है। वह पात्रों के चेतन या अचेतन मन के धारा प्रवाह को प्रकट करते हुए शब्दों का ऐसा जाल बुनते जाते हैं कि पाठक कहानी को आखिर तक पढ़ने के लिए विवश हो जाता है। फ्लैश बैक तकनीक का प्रयोग कर अतीत और वर्तमान में कहानी तैरती हुई आगे बढ़ती है।

इस संग्रह की हर कहानी का पात्र ग्रामीण परिवेश से लिया गया है। रघु हो या होशियार सिंह, मंगतू राम हो या यशोधा, बिरजू, नानकू, लाजो, गोमती हो या पिंकी जमुना हो या प्रेम चौधराइन। हर पात्र ग्रामीण मिट्टी से जुड़ा हुआ है। कोई गरीबी का मारा है तो कोई शोषण का शिकार है। कहीं स्वार्थ है तो कहीं राजनीति। कहीं झूठ है तो कहीं बदलते दौर में टूटते परिवार। कहीं किसानी छोड़ी जा रही है तो कहीं अनैतिक कमाई। कहीं बंटवारे का दर्द तो कहीं प्रकृति के अंधाधुंध दोहन की पीड़ा।

'ग़रीबी के भूत' में जब रघु प्रधान नेता को यह कहते हुए सुना कि यह स्मारिका चार हज़ार करोड़ की लागत से बनाई गई है तो वह हैरान हो जाता है। चार हज़ार करोड़ ...! तो रघु सोचने लगता है, 'अगर इस भारी रकम का कुछ हिस्सा जरूरी जगहों पर प्रयोग होता तो कितना अच्छा होता। नदियों पर पुल बन जाते, अच्छी सड़कें बन पाती, कोई ग़रीब बीमारी से नहीं मरता। 'स्याथा' कहानी में मंगतू वापस अपने घर आता है तो वह अपनी पत्नी से कहता है, ''अब खेती नहीं होती रामकलिए! अब स्याथा लेना भीख मांगने जैसा हो गया है, मैं कुछ और काम कर लूँगा पर कभी भीख नहीं माँगूंगा।"

''ओ देवा! मुझ कुल्च्छणी को तो तू सजा दे रहा है पर उस भोले बिरजू की पुकार तो सुन लेता। देख तेरे दर पर आकर प्रार्थना करके गया है वो। उसकी फरियाद तो पूरी कर देता तू ... यह क्या किया तूने देवा? यह क्या किया? " यशोधा (मेवे वाला कहानी में) कुलदेव से शिकायत करती हुई अपनी व्यथा, छटपटाहट और ममत्व की याचना कर रही है। घर वापसी नामक कहानी में ...''बीमारी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अस्पताल व बैंक के अलावा सभी कार्यालय बंद कर दिए गए हैं। स्कूल व कॉलेज सुनसान पड़े हैं। प्रवासी मजदूर सैंकड़ों मील की पैदल यात्रा पर निकल चुके हैं। उन्हें अपने बेटे की बहुत चिंता हो रही है। दोपहर के आसपास का वक्त ... सेब के पौधे पर चढ़ा तेज बहादुर ज़ोर से चिल्लाने लगा। ''माम जी, माम जी! ... श्याम लाल बाबू जी आ रहे हैं।'' इस कहानी में किसी बीमारी का जिक्र किया गया है। माम की चिंता दर्शाई गई है और अंत में प्रसन्नता जाहिर की गई है।

हर कहानी में संघर्ष, दर्द और आँसू। मार्मिक टच और भावनात्मक पहलू। सरल भाषा और ठेठ पहाड़ी शब्दों का प्रयोग। इंसाफ कहानी में ठेकेदार काजलू के होशियार सिंह को कहे शब्द - ''अबे ओए! ... ज्यादा मत बोल, क्या कर लेगा तू? ... चुपचाप अपनी नौकरी कर ... तू जानता नहीं हमें ... " इन शब्दों में स्पष्ट धमकी गूंज रही है। गुरु दक्षिणा में जब जग्गी करतार से कहता है, ''तो वादा करो उस्ताद कि आज के बाद बीड़ी, सिगरेट, शराब को आप हाथ नहीं लगाओगे।" इन पंक्तियों में अपनेपन की भावना झलकती है। जीवन की जीवटता को बखूबी तराशता हुआ शब्द-शिल्पी मनोज कुमार शिव। पुस्तक पठनीय और संग्रह करने योग्य है।

गाँव व डाकघर निचली भटेड़ ,
बिलासपुर हि.प्र. -174004

क्षेत्रीय सहयोगी

1. Dr. L.C. Sharma, IIRD Complex,
Bye-pass Road, shanan,
Sanjauli, Shimla-6 (H. P.)
mo. 09418014761 iirdsml@gmail.com

2. अंजना छलोत्रे 'सवि',
द्वारा श्री विजय देशमुख, माधव कालोनी, सोडलपुर रोड, टिमरनी, जिला हरदा -461228 (म.प्र.) मो. 08461912125 anjana.savi@gmail.com

3. श्री कृष्ण चन्द्र महादेविया
गाँव महादेव, तह. सुन्दर नगर,
मण्डी (हि.प्र.) 175018

4. डॉ. विजय पुरी, ग्राम पदरा, डा. हंगलोह, त. पालमपुर, कांगड़ा (हि. प्र.) 7018516119, 9816181836

5-श्रीमती शिवा धरावेश,
20/7, दुर्गा कालोनी तरुवाला, पाँवटा साहिब, जि. सिरमोर-173025 (हि.प्र.)
मो. 08894892999

6. चन्द्रभूषण तिवारी
ग्राम टी.टी.अब्दलपुर, डाकघर हरिसेन गंज, (मऊआईमा)
प्रयागराज-212507
मो. 9415593108, 8707467102
cbtiwari04091966@gmail.com

7. दिनेश पाठक 'शशि'
28, सारंग विहार, रिफ़ाइनरी नगर,
मथुरा- (उत्तर प्रदेश) 9412727361,
ईमेल- drdinesh57@gmail.com

8. श्रीमती पूर्णिमा ढिल्लन
फ्लैट नं.-401, बिल्डिंग-5, अशोक अस्टोरिया, गोवर्धन विलेज, गंगापुर रोड, नासिक-422222, **मो. 7767943298**

9. Dr. A. J. Abraham,
ANCHANIYIL A.K.G. Unichira road,Changampuzha nagar, post- Kochi-33', Kerala. mo. 9447375381

10- Dr. Sumangala Mummigati
'Chinmay' 4th Cross, Shreepad Nagar, Near Rani Chennamma Nagar, Dharwad, Karnatak. mo-7619164139

11. डॉ. परमानन्द तिवारी (प्राचार्य)
शास. तुलसी महाविद्याल अनूपपुर,
जिला अनूपपुर (म.प्र.) मो. 9424931012
Email...hegtdcano@mp.gov.in

Dr.Sheena Eapen,
House No.2, Alphonsa Meadow, sThekkemala P.O Kozhencherry, Pathanamthitta, Kerala-689654

शैल सूत्र पत्रिका का लोकार्पण गुरुवायूरप्पन कालेज में उज्जैन से आये लेखक संतोष सुपेकर ने किया। उनके साथ हैं डॉ. आरसु , हिंदी विभाग की अध्यक्षा डॉ. मीरा, कालेज के प्राचार्य एवं विभाग के अन्य अध्यापक गण

हिन्दी दिवस पर मलयालम लेखिका और अनुवादक डॉ. शीला गौरभि को उनकी हिन्दी सेवाओं के लिए मध्यप्रदेश के मान्नीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने अंगवस्त्र श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

हिन्दी दिवस पर हिन्दी साहित्य भारती अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रविन्द्र शुक्ल की अध्यक्षता में सर्किट हाऊस गोलापार (हल्द्वानी) में हुई चिन्तन गोष्ठी में शैल सूत्र की सम्पादक श्रीमती आशा शैली को सम्मानित किया गया।

शुभम् साहित्य कला एवं संस्कृति संस्था के 31वें स्थापना दिवस पर बसंती देवी महाविद्यालय, देवली (बुलन्दशहर) में शैलसूत्र की सम्पादक श्रीमती आशा शैली को शुभम् रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर देश की ख्यातिलब्ध गीतकार डॉ. रमा सिंह, संस्था के अध्यक्ष, महाविद्यालय के शिक्षक और नगर के गणमान्य भी उपस्थित थे

डॉ. रोचना भारती (उपाध्यक्ष) , प्रा. डॉ. अनिल पाठक (मुख्य अतिथि) डॉ. अंजली सक्सेना (कार्यक्रम अध्यक्ष) डॉ. विद्या केशव चिटको, (संरक्षक) प्राची वाटवे लेखिका , डॉ. ज्योति गजभिये (अध्यक्ष) सुनीता माहेश्वरी (सचिव) प्राची वाटवे की पुस्तक का विमोचन करते हुए।

पत्रिका पंजीकरण संख्या – TELHIN/2008/30044

आजादी का अमृत महोत्सव

मेरा हिमाचल - मेरा गौरव 75 साल 1948 - 2022

हिमाचलवासियों को स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अमृतकाल की इस बेला में

आओ उत्सव मनाएं

आज़ादी का अमृत महोत्सव
प्रगतिशील हिमाचल की स्थापना का 75वाँ वर्ष
आत्मविश्वास से भरा देश
निरंतर गतिमान हिमाचलवासी
सपनों को दृढ़ संकल्प एवं
परिश्रम की पराकाष्ठा के साथ
नई चेतना, नई उमंग, नई ऊर्जा, नए उत्साह संग
कदम दर कदम बढ़ते हम, मना रहे हैं अमृत काल
फहरा रहे हैं हर घर तिरंगा
गौरव का प्रतीक तिरंगा
राष्ट्रीय अखण्डता का सूचक तिरंगा
जन-आकांक्षाओं को दर्शाता तिरंगा
आन-बान और शान तिरंगा
गर्व से भरे हम सब
फहरा रहे हैं हर घर तिरंगा।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार

www.himachalpr.gov.in HimachalPradeshGovtPRDept DPR Himachal dprhp